



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 1005]

नई दिल्ली, शुक्रवार, सितम्बर 8, 2006/भाद्र 17, 1928

No. 1005]

NEW DELHI, FRIDAY, SEPTEMBER 8, 2006/BHADRA 17, 1928

श्रम और रोजगार मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 8 सितम्बर, 2006

का.आ. 1460(अ).—खान अधिनियम, 1952 (1952 का 35) की धारा 27 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार, एतद्वारा इस अधिसूचना के अनुबन्ध के रूप में कथित अधिनियम की धारा 24 की उप-धारा (4) के अन्तर्गत जांच न्यायालय जो 15 जून, 2005 को झारखण्ड राज्य के हजारीबाग जिले में मैसर्स सेन्ट्रल कोलफील्ड लिमिटेड की कोयला खदान, विशेष रूप से सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी में घटित दुर्घटना के कारणों और परिस्थितियों की जांच करने के लिए नियुक्त किया गया था, द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित रिपोर्ट को प्रकाशित करती है :—

“मैसर्स सेन्ट्रल कोलफील्ड लिमिटेड की सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी में घटित बड़ी दुर्घटना की, जिसमें 14 व्यक्तियों की मृत्यु हुई थी, के संबंध में जांच न्यायालय की रिपोर्ट।”

[फा. सं. एन-11012/1/2005-आई.एस.एच.-II]

एस. के. श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव

अनुबन्ध**डॉ. पी. डी. शेनॉय जाँच अदालत**

**15 जून, 2005 को मेसर्स सेन्द्रल कोलफिल्डस् लिमिटेड के
सेन्द्रल सौंडा कोलियरी में 14 व्यक्तियों के प्राणघातक
दुर्घटना के संबंध में जाँच अदालत का प्रतिवेदन**

अध्याय - I**प्रस्तावना**

- 1.1.1 झारखंड राज्य के हजारीबाग जिले में स्थित मेसर्स कोल इंडिया लिमिटेड (सी. आई. एल.) की सहायक कंपनी मेसर्स सेन्द्रल कोलफिल्डस् लिमिटेड (जिसे आगे सी सी एल कहा गया है) की सेन्द्रल सौंडा कोलियरी के भूमिगत कार्य-स्थल में दिनांक 15 जून, 2005 की सुबह एक घातक दुर्घटना घटित हुई। इस दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना में चौदह (14) खान श्रमिकों की मृत्यु हुई, दुर्घटना के शिकार व्यक्तियों के नाम, उनकी आयु, और उनके व्यवसाय की सूची परिशिष्ट-I में दी गई है।
- 1.1.2 भारत सरकार, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने खान अधिनियम, 1952 की धारा 24 की उप धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एक अधिसूचना संख्या एस. ओ. 1494 (ई) दिनांक 17 अक्टूबर 2005 को जारी करते हुए इस दुर्घटना के कारणों और परिस्थितियों की औपचारिक जाँच करने के लिए एक जाँच अदालत की नियुक्ति की। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के पूर्व सचिव डॉ. पी. डी. शेनॉय, भा.प्र.से. (सेवानिवृत्त) को इसका अध्यक्ष नियुक्त किया गया, जबकि श्री रवीन्द्र शर्मा, खान सुरक्षा महानिदेशक (सेवानिवृत्त) तथा श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, अध्यक्ष, राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ को परामर्शदाता (असेसर) के रूप में नियुक्त किया गया। अधिसूचना की प्रतिलिपि परिशिष्ट-II में दी गई है।
- 1.1.3 श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के पत्र संख्या एन-11012/1/2005 - आई. एस. एच. II दिनांक 21 दिसम्बर 2005 द्वारा जाँच अदालत - अध्यक्ष के सचिव के रूप में श्री जी. विजय कुमार, खान सुरक्षा उप-निदेशक, खान सुरक्षा महानिदेशालय (मुख्यालय) धनबाद, की नियुक्ति की गई (परिशिष्ट-III)।
- 1.1.4 भारत सरकार, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने जाँच करके प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि को दिनांक 19 जनवरी, 2006 की अधिसूचना द्वारा 17 जनवरी 2006 से 16 अप्रैल, 2006 तक बढ़ा दिया था (परिशिष्ट-IV)।
- 1.1.5 जाँच की अवधि को पुनः दिनांक 03 अप्रैल, 2006 की अधिसूचना द्वारा 17 अप्रैल, 2006 से 16 जुलाई, 2006 तक बढ़ाया गया था (परिशिष्ट-V)।
- 1.2 **जाँच अदालत:**
 - 1.2.1 जाँच अदालत के अध्यक्ष ने सार्वजनिक सूचना जारी की जिसमें 31 दिसम्बर 2005 की दुर्घटना से संबंधित विषय वस्तु की जानकारी रखने अथवा इससे अवगत होने या इसमें रु

चि रखने वाले लोगों से शपथ-पत्र के द्वारा उनके विचार आमंत्रित किए गए। ये शपथ-पत्र को किसी नोटरी पब्लिक द्वारा विधिवत अनुप्रमाणित करा कर तीन प्रतियों में अदालत को प्रस्तुत किया जाना था।

- 1.2.2 पूर्व पैराग्राफ में उल्लिखित सूचनाएं समाचार पत्रों में प्रकाशित की गई थी। इन प्रकाशनों की तारीख तथा जिन समाचार पत्रों में ये सूचनाएं प्रकाशित हुई थी उनके विवरण निम्नलिखित तालिका में दी गई है:

क्र. सं.	समाचार पत्र	भाषा	प्रकाशन की तिथि
01	प्रभात खबर	हिंदी	28.11.2005
02	राँची एक्सप्रेस	हिंदी	28.11.2005
03	दि टेलीग्राफ	अंग्रेजी	28.11.2005

- 1.2.3 जाँच अदालत द्वारा निर्धारित तिथि यथा 31.12.2005 तक कुल 20 (बीस) शपथ-पत्र प्राप्त हुए थे। यद्यपि, अदालत ने उपरोक्त तिथि के बाद भी शपथ पत्र स्वीकार किए। अदालत की खुली बैठकों के दौरान भी विभिन्न व्यक्तियों एवं संगठनों से, मामले से संबंधित सभी जानकारी संग्रह करने के उद्देश्य से, उत्तरवर्ती शपथ पत्र तथा बयान मांगे गये थे। कुल मिलाकर न्यायलय ने अपने कई सत्रों में 48 गवाहों का परीक्षण किया। सभी अभिसाक्ष्यों और उनके परीक्षण की तारीख की सूची परिशिष्ट - VI पर संलग्न है। कार्यवाही के पूरा होने तक अदालत में 40 शपथ-पत्र प्रस्तुत किए गए थे। कतिपय वाद विषयों को स्पष्ट करने के लिए अधिकांश साक्षियों का सीधे परीक्षण किया गया था।

1.3 निरीक्षण:

जाँच अदालत के अध्यक्ष डॉ.पी. डी. शेनॉय ने श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, असेसर के साथ दिनांक 19.11.2005 को सेंट्रल साँडा कोलियरी के बाँसगढा सीम के भूमिगत कार्य-स्थल का इन्कलाइन संख्या 17 से होकर निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जाँच अदालत के साथ में एक श्रमिक संघ, कोयला खान अधिकारी संघ, खान प्रबंधन तथा खान सुरक्षा महानिदेशालय के प्रतिनिधि साथ रहे। श्री रवीन्द्र शर्मा, असेसर ने इसके अतिरिक्त दिनांक 16.12.2005 को खान का निरीक्षण किया। श्री रवीन्द्र शर्मा के साथ खान प्रबंधन, खान सुरक्षा महानिदेशालय और एक श्रमिक संघ के प्रतिनिधि भी थे। इन निरीक्षणों के दौरान किए गए अवलोकनों को निरीक्षण प्रतिवेदनों के रूप में परिशिष्ट -VIII तथा IX पर दिया गया है।

1.4 प्रक्रिया:

अदालत ने निर्णय लिया कि लिखित शपथ-पत्रों पर अदालत के समक्ष व्यक्तिगत रूप से दिए गए अभिसाक्ष्य पर विचार किया जाएगा। तत्पश्चात्, मामले को और स्पष्ट करने के लिए अदालत द्वारा खुली बैठकों में अभिसाक्षियों की प्रति परीक्षा की जाएगी जिससे कि सत्य प्रकट हो सके और अधिकतम पारदर्शिता कायम रखी जा सके। अदालत ने यह भी निर्णय लिया कि परीक्षण के लिए जिन्होंने शपथ-पत्र प्रस्तुत किए हैं, उनके अतिरिक्त

सुसंगत साक्षियों को भी बुलाया जाए। पक्षकारों द्वारा की जाने वाली प्रतिपरीक्षा के मामले में अदालत ने बहुत सावधानी पूर्वक विचार किया और अदालत इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इस प्रकार की प्रतिपरीक्षा का अदालत की कार्यविधि गुणवत्ता पर अधिक प्रभाव नहीं होता है और इनसे सरकार को प्रतिवेदन प्रस्तुत करने में अत्यधिक विलम्ब हो सकता है। तथापि, अध्यक्ष और असेसरों ने अपेक्षित मात्रा में साक्षियों की प्रतिपरीक्षा की और अतिरिक्त सूचना प्राप्त की। प्रतिपरीक्षण के दौरान अदालत ने विभिन्न पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों को ध्यान में रखा। अदालत की प्रथम सुनवाई, दिनांक 28 तथा 29 जनवरी, 2006, के दौरान अध्यक्ष ने अदालत सचिव को निर्देश दिया कि सभी सुसंगत दस्तावेजों और अदालत द्वारा प्राप्त किए शपथ-पत्रों को अदालत के स्थान पर प्रदर्शित किया जाए और सभी पक्षकारों को दस्तावेजों की परीक्षा करने की अनुमति प्रदान की, ताकि सभी पक्षकार मामले से संबंधित सभी तथ्यों से अवगत रहें। तदनुसार अदालत सचिव द्वारा सभी सुसंगत दस्तावेजों को दिनांक 29 जनवरी के अपराह्न में और 30 जनवरी, 2006 को पूरे दिन प्रदर्शित किया गया। दिनांक 18 एवं 19 फरवरी, 2006 को अदालत की दूसरी सुनवाई के बाद पुनः अदालत सचिव द्वारा सभी दस्तावेजों को दिनांक 22 एवं 23 फरवरी, 2006 को और फिर से दिनांक 13 तथा 14 मार्च, 2006 को प्रदर्शित किया गया। इच्छुक पक्षकारों की सुविधा के लिए उपरोक्त सभी तिथियों को सचिव स्वयं भी उपस्थित थे।

1.5 कार्यवाहियाँ:

1.5.1 दिनांक 19 नवम्बर, 2005 को डॉ.पी. डी. शेनॉय व श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, असेसर ने खान तथा घटनास्थल को दौरा किया। श्री रवीन्द्र शर्मा, असेसर ने दिनांक 16 दिसम्बर, 2005 को खान तथा घटनास्थल का दौरा किया।

1.5.2 दिनांक 20 नवम्बर, 2005 को अदालत ने निर्णय लिया कि:

- (क) इच्छुक पक्षकारों से 31 दिसम्बर, 2005 तक शपथ-पत्र आमंत्रित करते हुए स्थानीय समाचार पत्रों में सार्वजनिक सूचना जारी की जाए;
- (ख) पंजीकृत/मान्यता प्राप्त श्रमिक संघों और मेसर्स सी. सी.एल के अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक तथा निदेशक (तकनीकी) को दिनांक 17 एवम 18 दिसम्बर, 2005 को अदालत में अपने साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए सूचना जारी की जाए;
- (ग) अदालत की बैठकें मेसर्स सी.एम.पी.डी.आइ.एल, रॉची, स्टाफ ट्रेनिंग कालेज हॉस्टल के स्वर्ण रेखा हाल में होंगी और
- (घ) अदालत के सचिव की नियुक्ति की जाए।

1.5.3 दिनांक 17 दिसम्बर, 2005 को श्रमिक संघों के प्रतिनिधियों, यथा श्री मिहिर चौधरी, एन.सी.ओ.ई.ए, सीटू (झारखंड); इंटक से संबद्ध राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ के उपाध्यक्ष, श्री बद्री सिंह; हिन्द मजदूर सभा से संबद्ध जनता मजदूर संघ के श्री हरि शंकर सिंह; श्री रमेश कुमार, महासचिव, यूनाइटेड कोल वर्कर्स एसोसिएसन/एटक; श्री कुमार महेश सिंह, राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ/इंटक और कोल माइंस आफिसर्स एसोसिएसन आफ इंडिया (सी.एम.ओ.ए.आई) के प्रतिनिधियों ने दुर्घटना से सम्बन्धित अपने सामान्य विचार व्यक्त किए। अदालत ने उन्हें आश्वासित किया कि जाँच प्रक्रिया में पूर्ण पारदर्शिता बरती जाएगी। अदालत ने उन्हें यह भी आश्वासित किया कि उनमें से प्रत्येक को शपथ-पत्र देने के बाद अभिसाक्ष्य देने के लिए एक अवसर और प्रदान किया जाएगा।

1.5.4 दिनांक 18 दिसम्बर, 2005 को श्री आर.पी.रिटोलिया, अध्यक्ष सह प्रबंधक निदेशक, सी.सी.एल.; श्री एम.एम.सिंह, निदेशक, तकनीकी श्री बसंत कुमार सिंह, महासचिव, बी.एम.एस.; श्री के.के.पासी, खान सुरक्षा उपमहानिदेशक, दक्षिण पूर्वी जोन, राँची; श्री रमेश कुमार, महासचिव, यूनाइटेड कोल वर्कर्स असोसिएशन (एटक); श्री एन.के.सिंह, कोल माइंस आफ्फिसर्स असोसिएशन आफ् इंडिया (सी.एम.ओ.ए.आई) के प्रतिनिधियों ने दुर्घटना से सम्बन्धित विवरण दिए।

कुछ पक्षकारों द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर अध्यक्ष ने स्पष्ट किया की अदालत उचित प्रक्रिया का पालन करेगा और संबंधित पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी सम्बद्ध दस्तावेज/जानकारी अदालत को उपलब्ध कराएं।

1.5.5 दिनांक 28 जनवरी 2006 को श्री एम.एम.सिंह, निदेशक तकनीकी, सी.सी.एल, श्री भास्कर भट्टाचार्य, खान सुरक्षा महानिदेशक और श्री के.नागेश्वर राव, खान सुरक्षा निदेशक, राँची क्षेत्र, ने अदालत के समक्ष अभिसाक्ष्य दिया।

1.5.6 दिनांक 29 जनवरी 2006 को श्री जे.एन.सिंह ने सी.एम.ओ.ए.आई की ओर से, श्री रमेश कुमार बुबना, आइ.एम.एम.ए के प्रतिनिधि; श्री अशोक कुमार शर्मा, ए.आइ.एम.पी.ए के प्रतिनिधि; श्री रमेश कुमार, युनाइटेड कोल वर्कर्स असोसिएशन (एटक); श्री कुमार महेश सिंह, इटक; श्री कमलेश सहाय, बी एम एस; श्री बसन्त कुमार सिंह, महासचिव, सी. सी. एल. कोलियरी कर्मचारी संघ; श्री मिथिलेश कुमार सिंह, बिहार कोलियरी कर्मचारी यूनियन (सिट्टू) के कार्यकारी अध्यक्ष; श्री मिहिर चौधरी, महासचिव, एन. सी. ओ. इ. ए. (सिट्टू) और शंभु नारायण झा, राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ इटक ने न्यायलय के समक्ष अभिसाक्ष्य दिया।

1.5.7 दिनांक 18 फरवरी 2006 को श्री पी. के. कंचन, निदेशक, सी. एम. पी. डी. आई. एल.; श्री बी. बी. दूबे, सेन्ट्रल सौडा कोलियरी के तत्कालिन अभिकर्ता; डा. ए. के. सिन्हा, डॉ. सी. पी. चौधरी डॉ. बिनोद नारायण, डॉ. एस. पी. सिन्हा डॉ. आर. के. गुप्ता, डॉ. बिनय कुमार, और श्री धनन्जय कुमार सिंह, सर्वेक्षक, सेन्ट्रल सौडा कोलियरी ने न्यायलय के समक्ष अभिसाक्ष्य दिया।

1.5.8 दिनांक 19 फरवरी 2006 को श्री राहुल गुहा, खान सुरक्षा उपमहानिदेशक, (मध्य अंचल) धनबाद तथा तत्कालिन खान सुरक्षा निदेशक, राँची क्षेत्र; श्री एस. के. मंडल, खान सुरक्षा उपनिदेशक, (पूर्वी अंचल) सीतारामपुर तथा तत्कालिन खान सुरक्षा उपनिदेशक, राँची क्षेत्र; श्री डी. के. मल्लिक, खान सुरक्षा उपनिदेशक राँची क्षेत्र; श्री भास्कर भट्टाचार्य, खान सुरक्षा महानिदेशक; डॉ. रामशरण राय, सेवानिवृत्त, ए. जी. एम., आर. एंड. डी., स्टील ऑथरिटी लिमिटेड, (सेल); श्री उमेश शर्मा, परियोजना अधिकारी, सेन्ट्रल सौडा कोलियरी के अभिकर्ता (निलम्बनाधीन); श्री नरेन्द्र कुमार मार्तण्ड, सेन्ट्रल सौडा कोलियरी, के प्रबंधक (निलम्बनाधीन) और अजब लाल रजक, सेन्ट्रल सौडा कोलियरी, के सुरक्षा अधिकारी (निलम्बनाधीन) ने न्यायलय के समक्ष अभिसाक्ष्य दिया।

1.5.9 दिनांक 11 मार्च 2006 को श्री एम. के. थापर, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, मे. एस. ई. सी. एल. और तत्कालिन निदेशक तकनीकी, सी. सी. एल.; श्री वी. के. सिंह, अध्यक्ष सह

प्रबन्ध निदेशक मे. नार्दन कोलफिल्ड लिमिटेड (एन. सी. एल.) व तत्कालिन निदेशक तकनीकी, सी. सी. एल.; श्री अजय कुमार, निदेशक कार्मिक, सी. सी. एल.; डॉ. ए. के. सरकार, निदेशक वित्त सी. सी. एल.; श्री मो. तसलीम, महाप्रबंधक, बरका सयाल क्षेत्र, सी. सी. एल. (निलम्बनाधीन); श्री गोपाल प्रसाद, उप मुख्य खनन अभियंता, सी.एम.पी. डी. आई. एल. और श्री कृष्ण मुरारी, अनुमति के लिये आवेदन देते समय प्रबंधक ने न्यायलय के समक्ष अभिसाक्ष्य दिया।

1.5.10 दिनांक 12 मार्च 2006 को श्री एस चौधरी, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, सी. एम. पी. डी. आई. एल.; श्री एम.एम.सिंह, निदेशक तकनीकी, सी.सी.एल.; प्रो. अजय कुमार घोष, भूतपूर्व निदेशक, भारतीय खनि विद्यापीठ (आई. एस. एम.); डॉ. एस. के. सिंह, प्रधान बोर्ड व पीलर विभाग, केन्द्रीय खनन अनुसंधान संस्थान (सी. एम. आर. आई.) धनबाद; श्री पी. एन. मिश्रा, महासचिव, इनमोसा; श्री रमेश प्रसाद सिंह, अखिल भारत कोयला कर्मि महासंघ (सिटू) के कार्यकारी समिति सदस्य और श्री इंद्रदेव प्रसाद सिंह, सहायक प्रबंधक, सेन्ट्रल सौडा कोलियरी (निलम्बनाधीन) ने न्यायलय के समक्ष अभिसाक्ष्य दिया।

1.5.11 दिनांक 25 मार्च 2006 को डॉ. दीनानाथ पांडे, शल्य चिकित्सक एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सी. एम. ओ.) हजारीबाग; श्री आर.पी.रिटोलिया, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, सी.सी.एल.; श्री बी. आर. त्रिपाठी, बरका सयाल एरिया के भूतपूर्व मुख्य महा प्रबंधक; श्री संजय कुमार सहायक प्रबंधक, सेन्ट्रल सौडा कोलियरी और श्री आदित्य साहु, महासचिव, बी. एम. एस., झारखंड प्रदेश ने न्यायलय के समक्ष अभिसाक्ष्य दिया।

1.5.12 दिनांक 26 मार्च 2006 को डॉ.दीनानाथ पांडे, असैनिक शल्य चिकित्सक एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सी. एम. ओ.) हजारीबाग, ने न्यायलय के समक्ष अभिसाक्ष्य दिया। ऐसे समय जब सभी साक्षियों के साक्ष्य पूरे हो गए थे और अदालत अपनी कार्यवाही समाप्त करने ही वाला था कि श्री जे.एन.सिंह ने अदालत से अपना तर्क प्रस्तुत करने की अनुमति देने की प्रार्थना की। न्यायलय ने उनके अनुरोध पर विचार किया और नैसर्गिक न्याय के सिद्धांतों का अनुपालन करते हुए न्यायलय ने सभी पक्षकारों अर्थात् अधिकारी संघों, श्रमिक संघों सी. सी. एल. प्रबंधन, सी. एम. पी. डी. आई. एल. और खान सुरक्षा महानिदेशालय को अदालत के समक्ष अपने मौखिक तर्कों को प्रस्तुत करने और तीन पृष्ठों में लिखित तर्कों को अदालत में प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान की। अनुरोध करने पर अदालत ने सी. सी. एल. के निलंबित अधिकारियों को भी अपने तर्क प्रस्तुत करने की अनुमति दी। तदनुसार श्री जे.एन.सिंह, सी.एम.ओ.ए.आई.; श्री अशोक कुमार शर्मा, ए.आई.एम.पी. ए.; श्री उमेश शर्मा, अभिकर्ता (निलम्बनाधीन) और श्री एन. के. मार्तण्ड, प्रबंधक (निलम्बनाधीन) ने अदालत के समक्ष अपने मौखिक तर्क प्रस्तुत किए।

1.5.13 श्री जे. एन. सिंह, द्वारा दिनांक 11.04.2006 के पत्र के माध्यम से किए गए अभ्यावेदन पर अदालत द्वारा सभी पक्षकारों को 10 पृष्ठों के अन्दर अपने लिखित तर्क प्रस्तुत करने की अनुमति दी गई।

1.5.14 दिनांक 05 मई, 2006 को श्री रमेश कुमार, एटक; श्री एम. एम. सिंह, निदेशक (तकनीकी), सी. सी. एल.; श्री के. नागेश्वर राव, खान सुरक्षा निदेशक, खान सुरक्षा

महानिदेशालय; श्री मो. तस्लीम, महाप्रबंधक (निलम्बनाधीन), बरका-सयाल क्षेत्र; अजब लाल रजक, सुरक्षा अधिकारी, सेंट्रल सौडा कोलियरी, (निलम्बनाधीन) और श्री इंद्रदेव प्रसाद सिंह, सहायक प्रबंधक (निलम्बनाधीन) ने अदालत के समक्ष अपने मौखिक तर्क प्रस्तुत किए। पुनः अदालत की अनुमति से श्री जे.एन.सिंह, सी.एम.ओ.ए.आई. तथा श्री उमेश शर्मा, अभिकर्ता (निलम्बनाधीन) ने अपने तर्कों की अनुपूर्ति की।

1.5.15 श्री जे.एन.सिंह ने अदालत की इजाजत से अपना हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया और सी.एम.ओ.ए.आई की ओर से अदालत के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने कहा कि अदालत ने उन्हें लिखित और मौखिक रूप से अपना मामला प्रस्तुत करने का अवसर दिया और बारीकी से नैसर्गिक न्याय के सिद्धांतों का अनुपालन भी किया और सभी पक्षों के प्रति निष्पक्ष रहा।

1.5.16 श्री रमेंद्र कुमार ने सभी श्रमिक संघों के नेताओं और श्रमिकों की ओर से अदालत के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने कहा कि अदालत ने सभी संबद्ध पक्षों को पूरा अवसर प्रदान करने के लिये शीघ्रता पूर्वक कार्य करते हुए कई बैठकें आयोजित करने का कष्ट उठाया। उन्होंने विशेष रूप से उस गति का उल्लेख किया जिस गति से कार्यवाहियों को पूरा किया गया और नैसर्गिक न्याय के सिद्धांतों को भी नहीं त्यागा गया। उन्होंने कहा कि यह ऐतिहासिक घटना थी।

1.5.17 जाँच अदालत के अध्यक्ष ने न्यायलय की कार्यवाहियों को पूरा करते हुए श्रमिक संघों के प्रतिनिधियों, सी.एम.ओ.ए.आई, ए.आइ.एम.पी.ए., आइ.एम.एम.ए. और इनमोसा के सदस्यों, मेसर्स सी.सी.एल. के प्रबंधन और खान सुरक्षा महानिदेशालय को उनकी महत्वपूर्ण सहायता और सहयोग के लिए धन्यवाद दिया, क्योंकि इसके बिना इतने अल्प समय में कार्यवाहियों को पूरा करना संभव नहीं होता। उन्होंने उन चिकित्सकों को भी धन्यवाद दिया जिन्होंने मृतकों की शव-परीक्षा की थी। अन्ततः उन्होंने सी.एम.पी.डी. आई.एल. और उनके अधिकारियों और कर्मचारियों को इस बात के लिए विशेष रूप से धन्यवाद दिया कि उन्होंने अदालत की बैठकें आयोजित करने के लिए अपना परिसर प्रदान करके उत्तम व्यवस्थाएँ की।

1.6 साक्षियों द्वारा उठाए गए मामलों का सारांश:

1.6.1 साक्षियों द्वारा उठाए गए मामलों का सारांश श्री आर.पी. रिटोलिया, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, मेसर्स सी.सी.एल. और श्री एम.एम.सिंह, निदेशक तकनीकी तथा मेसर्स सी.सी.एल. के नामित मालिक ने कहा कि दुर्घटना का मुख्य कारण बाँसगढ़ा सीम के पैनल संख्या 11 के ऊपर अचानक छत विस्थापन के कारण हुआ वायु-विस्फोट है। उनकी राय में बाँसगढ़ा सीम के कार्य-स्थल में पानी का प्रवेश हाथीदारी सीम के उपर स्थित ऊपरी सीमों से हुआ था।

1.6.2 यूनाइटेड कोल वर्कर्स यूनियन (एटक) के श्री रमेंद्र कुमार ने अदालत के समक्ष अपने बयान में निम्नलिखित विषयों को उठाया:

- (क) बाँसगढा सीम के पैनल संख्या 11 को डिपीलर करने की अनुमति खान सुरक्षा महानिदेशालय द्वारा क्षेत्र का प्रत्यक्ष निरीक्षण किए बिना, सामान्य तौर पर दी गई थी।
- (ख) पैनल संख्या 11 को डिपीलर करने का कार्य खान प्रबंधन द्वारा हाथीदारी सीम को जलमुक्त किए बिना आरम्भ किया गया था। जिससे कि अनुमति पत्र में अनुबद्ध शर्तों का अनुपालन तथा कोयला खान विनियम, 1957, जिसे आगे को खा वि, 1957 कहा गया है, की अपेक्षाओं का भी अनुसरण नहीं किया जा रहा था,
- (ग) कोयले की निकासी खान सुरक्षा महानिदेशालय द्वारा दी गई अनुमति के क्षेत्र के परे किया गया था।
- (घ) सी.सी.एल. के उच्च पदाधिकारियों द्वारा खान का निरीक्षण नहीं किया गया था, इसलिए खतरे की पहचान नहीं हो सकी और आ.सु.सं. से भी निर्बाधन नहीं लिया गया था।
- (ङ) खा सु म नि के खान सुरक्षा उपनिदेशक, जिसे आगे उनिखासु कहा गया है, ने दिनांक 19.3.2005, 12.5.2005, 18.5.2005 और 06.06.2005 को खान का निरीक्षण किया किन्तु वह खतरे की पहचान नहीं कर सके।

1.6.3 श्री कुमार महेश सिंह, आरसीएमएस (इंटक) ने उपनिदेशक खान सुरक्षा द्वारा दिनांक 19.3.2005, 05.5.2005, 12.5.2005, 18.5.2005 और 07.6.2005 को खान का निरीक्षण के विषय को उठाया। उनकी राय में खान सुरक्षा महानिदेशालय ने इस तथ्य की अनदेखी करते हुए कि हाथीदारी सीम जलाक्रान्त है, केविंग विधि से अनुमति प्रदान की। उन्होंने यह भी कहा कि सी.सी.एल. में खनन विद्या में सांविधिक कार्मिकों की भारी कमी है।

1.6.4 श्री कमलेश सहाय, उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय मजदूर संघ, बीएमएस, ने अदालत से प्रार्थना कि की बी.एम.एस. को भी एक पक्षकार के रूप में स्वीकार किया जाए।

1.6.5 श्री बसन्त कुमार सिंह, महासचिव, सीसीएल कोलियरी कर्मचारी संघ (बीएमएस) ने खान में सांविधिक कर्मियों की कमी, उपरिशायी सीमों को जलमुक्त न करना, उप निदेशक द्वारा दिनांक 05.05.2005 को किया गया निरीक्षण तथा अनुमति पत्र में कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 126 व 127 का उल्लेख न करना आदि विषयों को उठाया।

1.6.6 श्री रमेश कुमार बुबना, जो भारतीय खान प्रबन्धक संघ (आईएमएमए) का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, ने कहा कि दुर्घटना एक वायु-विस्फोट के कारण हुई और उसके बाद कार्य-स्थल में जल प्रविष्ट हुआ। प्रबंधन द्वारा वरिष्ठ सक्षम व्यक्तियों जैसे ओभरमैन और माइनिंग सरदार का कार्य-स्थल पर निरंतर नियोजन सुनिश्चित किया गया है। इस मामले में भी दोनों कार्य-स्थल पर उपस्थित थे और यदि वे समय रहते लोगों को बाहर निकालने में समर्थ हुए होते तो अपमृत्यु को टाला जा सकता था।

1.6.7 श्री अशोक कुमार शर्मा, अखिल भारत खनन कर्मी संघ के मुख्य संगठन सचिव, (ए.आई.एम.पी.ए.), ने बयान दिया कि शव-परीक्षा प्रतिवेदन संकेत करते हैं कि मृत्यु प्रघात तथा रक्तस्राव के कारण हुई थी न की डूबने के कारण। उनका विचार था कि मृत्यु वायु-विस्फोट के कारण हुई थी जो किसी के वश में नहीं था।

1.6.8 कोयला खान अधिकारी संघ (सीएमओएआई) का प्रतिनिधित्व सर्व श्री जे.एन. सिंह, एन. के. सिंह और आर. के. राय द्वारा किया गया था। उन्होंने अदालत के समक्ष निम्नलिखित दृष्टिकोण प्रकट किए:

- (क) सांविधिक अधिकारियों की घोर कमी थी और इसका खान की सुरक्षा और पर्यवेक्षण से सीधा संबंध होता है,
- (ख) अधिकारियों का लगातार एक खान से दूसरी खान में स्थानान्तरण करने से अधिकारियों के पास किसी खान के बारे में आवश्यक आन्तरिक जानकारी एकत्रित नहीं हो पाती है,
- (ग) खान में डिपिलरिंग आपरेशन खान सुरक्षा महानिदेशालय द्वारा दी गई अनुमति के अनुसार ही किया गया था, दुर्घटना के पहले खान सुरक्षा महानिदेशालय के जिस अधिकारी ने खान का निरीक्षण किया था, उसने अनुमति के किसी प्रावधान के उल्लंघन का संकेत नहीं किया था।
- (घ) दुर्घटना का कारण वायु-विस्फोट था और कार्य-स्थल के अन्दर जल प्रवाह एक अनुवर्ती नतीजा था।
- (ङ) ओभरमैन और माइनिंग सरदार खतरे का बोध करने में असफल रहे और लोगों को एक सुरक्षित स्थान तक नहीं हटा सके।
- (च) डिपिलरिंग वाली खान में कम से कम वर्ष में दो बार सुरक्षा अडिट को अनिवार्य बनाया जाय।

1.6.9 अखिल भारत कोयला कामगार संघ (सीटू) के श्री रमेन्द्र प्रसाद सिंह ने निम्नलिखित विषय प्रस्तुत किए:

- (क) कोलियरी प्रबन्धन ने खान सुरक्षा महानिदेशालय द्वारा स्वीकृत अनुमति पत्र में अनुबद्ध शर्तों का अनुपालन सुनिश्चित किए बिना यथा उपरिशायी सीमों को जलमुक्त किए बिना बाँसगढ़ा सीम के पैनल संख्या 11 में निष्कर्षण आरम्भ किया।
- (ख) एक 3 इंच व्यास वाला बोर छिद्र जिससे होकर हाथीदारी सीम का पानी निकाला जा रहा था पर्याप्त नहीं था। उस बोर छिद्र से होकर दुर्घटना की तारीख तक पानी बह रहा था।
- (ग) खान प्रबंधन द्वारा खान सुरक्षा महानिदेशालय द्वारा अनुमत क्षेत्र से परे पीलरों की निकासी की गई।
- (घ) प्रबंधन ने खान सुरक्षा महानिदेशालय द्वारा अनुमत सीमा से अधिक गोफ में छत को अनावृत किया।
- (ङ) खान सुरक्षा महानिदेशालय द्वारा अनुमति पत्र में अनुबद्ध शर्तों की जानकारी पर्यवेक्षण कर्मचारियों को नहीं थी।

- (च) अनुमति पत्र की एक प्रतिलिपि खान के सूचना पट पर नहीं लगायी गई थी ।
- (छ) खान में बचाव मार्ग की कोई व्यवस्था नहीं थी ।
- (ज) ओवरमैन द्वारा सचेत करने के बावजूद प्रबंधन ने खान में कार्य जारी रखा ।
- (झ) प्रबंधन ने मुख्य (मेन) फाल की घटना का पूर्वानुमान लगाने के लिए अभीसरण रिकार्डर प्रदान नहीं किया था ।
- (ञ) खान सुरक्षा महानिदेशालय के अधिकारी खान में खतरों की पहचान करने में असफल रहे ।

1.6.10 बिहार कोलियरी कामगार यूनियन (सिटू) के श्री मिथिलेश कुमार सिंह ने हाथीदारी सीम को जलमुक्त नहीं किये जाने, खान सुरक्षा महानिदेशालय के अधिकारियों द्वारा किये गये निरीक्षणों और सांविधिक कार्मिकों की कमी जैसे विषयों पर प्रकाश डाला ।

1.6.11 श्री मिहिर चौधरी, महासचिव, एन. सी. ओ. ई. ए. (सिटू) ने हाथीदारी सीम को जलमुक्त करने, अनुमत क्षेत्र से बाहर कार्य-स्थल होने, खान के प्रबंधक खान क्षेत्र से बाहर रहने, ओवर मैन द्वारा प्रबंधक को दी गई खतरे की सूचना पर समुचित ध्यान नहीं दिये जाने और खान सुरक्षा महानिदेशालय के अधिकारियों द्वारा किये गये खान के निरीक्षण से संबंधित विषयों को उठाया ।

1.6.12 आर सी एम एस (इंटक) के श्री शंभु नारायण झा ने कहा कि-

- (क) खान सुरक्षा महानिदेशालय ने इस तथ्य की अनदेखी करते हुए अनुमति प्रदान की कि उपरिशायी हाथीदारी सीम जलाक्रान्त थी ,
- (ख) निरीक्षण के दौरान खान सुरक्षा महानिदेशालय ने खान को बन्द नहीं किया,
- (ग) शव-परीक्षा प्रतिवेदन के अनुसार दुर्घटना का कारण छत का गिरना था और
- (घ) खान में सांविधिक कार्मिकों की घोर कमी थी ।

1.6.13 श्री धनंजय कुमार सिंह, सर्वेक्षक, ने बयान दिया कि उसने मूल मापचित्र से अनुमति के लिए आवेदन के साथ लगे मापचित्र को तैयार किया था । चूँकि आवेदन करते समय पैनल 19 लेबल तक जलाक्रान्त था इसलिए इसका फिर से सर्वेक्षण नहीं किया जा सका ।

1.6.14 श्री भास्कर भट्टाचार्य, खान सुरक्षा महानिदेशक, ने बयान दिया कि वह मुख्य खान निरीक्षक थे और खान अधिनियम, 1952 की धारा 6 के अनुसार स्थानीय क्षेत्र घोषित किये गये थे और उनमें विभिन्न क्षेत्रीय निरीक्षकों को प्राधिकृत किया गया था । तदनुसार उक्त खान राँची क्षेत्र के अन्तर्गत है और इसका नेतृत्व कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 2 (27) में परिभाषित क्षेत्रीय खान निरीक्षक, जिसे खान सुरक्षा निदेशक, राँची क्षेत्र के रूप में भी पदनामित किया गया है, करते हैं । इसलिए, श्री के नागेश्वर राव, खान सुरक्षा निदेशक, राँची क्षेत्र, ने खान अधिनियम 1952 की धारा 23 (2) के अन्तर्गत दुर्घटना की जाँच की और जाँच प्रतिवेदन तैयार किया ।

- 1.6.15 श्री राहुल गुहा, तत्कालीन खान सुरक्षा निदेशक ने अपने बयान में स्पष्ट किया कि -
- (क) अनुमति के आवेदन पर कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 100 (1) के अन्तर्गत सही तरीके से विचार किया गया था,
 - (ख) अनुमति पत्र में उपरिशायी सीमों से जलप्लावन के खतरे से बचाव करने की शर्तों को समाविष्ट किया गया था।
 - (ग) इस मामले में विनियम 127 आकर्षित नहीं होता था और
 - (घ) घरातल से जलप्लावन के खतरे से बचाव के लिए पीलरों को छोड़ देने के लिए कहा गया था।
- 1.6.16 श्री एस. के. मण्डल, खान सुरक्षा उपनिदेशक, ने भी वैसा ही बयान दिया जैसा श्री गुहा ने दिया था।
- 1.6.17 श्री डी. के. मल्लिक, खान सुरक्षा उपनिदेशक, ने बयान दिया कि:
- (क) उन्होंने दिनांक 06.08.2004 से 07.06.2005 तक खान का सात बार निरीक्षण किया,
 - (ख) दिनांक 12.05.2005 को पैनल संख्या 11 का निरीक्षण करने के दौरान पैनल में कोई असामान्यता नहीं पाई गई, पैनल में जल के रिसाव का कोई संकेत नहीं था।
 - (ग) पैनल सं 11 के निरीक्षण के दिन गोफ किनारे के कॉग अनुमत पैनल सीमा के भीतर थे इसलिए पैनल सीमा के परे के कार्य-स्थलों को नहीं देखा जा सका।
 - (घ) खान का सामान्य निरीक्षण चल रहा था और वह पूरा होने वाला था।
- 1.6.18 श्री चन्द्रशेखर दूबे, माननीय संसद सदस्य, लोक सभा, स्वयं अदालत के समक्ष उपस्थित नहीं हुए थे। यद्यपि उन्होंने एक पत्र के माध्यम से न्यायलय को सूचित किया कि -
- (क) अनुमति बिना प्रत्यक्ष निरीक्षण के दी गई थी ;
 - (ख) अनुमति में विनियम 127 के प्रावधानों की अनदेखी की गई जिसकी अनुमति प्रदान करने वाले प्राधिकारी खान सुरक्षा महानिदेशक है।
 - (ग) खान सुरक्षा महानिदेशालय ने खान के निरीक्षणों के पश्चात कार्य-स्थल को बंद नहीं किया, और
 - (घ) शव-परीक्षा प्रतिवेदनों के अनुसार व्यक्तियों की मृत्यु डुबने से नहीं हुई थी।
- 1.6.19 डॉ. रामशरण राय ने कहा कि खान सुरक्षा महानिदेशालय को स्टोविंग के साथ डिपीलरिंग पर विचार करना चाहिए था और यह भी कि महानिदेशालय ने निरीक्षणों के दौरान आसन्न खतरों की ओर ध्यान नहीं दिलाया।
- 1.6.20 श्री उमेश शर्मा, जो दिनांक 01.06.2003 से खान के अभिकर्ता थे, (वर्तमान में निलम्बनाधीन), ने न्यायलय के समक्ष निम्नलिखित विषय प्रस्तुत किए -
- (क) बाँसगढा सीम के पैनल संख्या 11 से केविंग विधि द्वारा निकासी का आवेदन किया गया था जो कि मेसर्स सेंट्रल माइन प्लानींग और डिजाइन इंस्टीच्यूट लिमिटेड (सी.एम.पी.डी.आइ.एल) द्वारा तैयार किए गए व्यवसाय

- योजना पर आधारित था, जिसे बाद में खान सुरक्षा महानिदेशालय ने स्वीकृति प्रदान की थी।
- (ख) बाँसगढा सीम के पैनल संख्या 11 में खनन कार्य खान सुरक्षा महानिदेशालय द्वारा प्रदत्त अनुमति के अनुसार ही किया गया था।
- (ग) हाथीदारी सीम से बाँसगढा सीम में, इन सीमों के बीच में बनाए गए, 4 इंच के बोर छिद्र से मई 2004 से अक्टूबर 2004 तक लगातार पूरे वेग के साथ जलप्रवाह होता रहा और उसके बाद उस बोर छिद्र से जल प्रवाह मंद हो गया तथा यह स्थिर रहा जिसका निहित अर्थ था कि हाथीदारी सीम में पानी नहीं था।
- (घ) श्री डी.के.मल्लिक, खान सुरक्षा उपनिदेशक, खान सुरक्षा महानिदेशालय ने दिनांक 19.03.2005, 05.05.2005 और 18.05.2005 को खान का निरीक्षण किया परन्तु उनके द्वारा पैनल संख्या 11 में जल की निकासी या खनन कार्य संबंध में कोई भी कमी की ओर संकेत नहीं किया गया था।
- (ङ) बाँसगढा सीम के अंदर जल का प्रवेश अतिविशाल छत के गिरने और बाँसगढा सीम से 60मी. के आगे स्थित ऊपरी सीमों में असंगत कार्य क्षेत्रों के कारण हुआ।
- (च) छत के गिरने से पहले छत के गिरने के कुछ संकेत जरूर मिले होंगे और यदि पर्यवेक्षकों (ओभरमैन और माइनिंग सरदार) द्वारा कार्य-स्थल से व्यक्तियों को हटाया होता तो, जो इस दुर्घटना में मारे गए, उन्हें सुरक्षित रूप से हटाया जा सकता था।

1.6.21 श्री के. नागेश्वर राव, खान सुरक्षा निदेशक, राँची क्षेत्र, खान सुरक्षा महानिदेशालय ने अपने ब्यान में निम्नलिखित बातें कही:

- (क) कोयला खान विनियम 1957 के विनियम 100 (1) के अन्तर्गत सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी के बाँसगढा सीम के पैनल संख्या 11 में पीलरों के निकासी की अनुमति, खान के अभिकर्ता द्वारा दिए गए आवेदन के आधार पर, उनके पूर्ववर्ती अधिकारी द्वारा दी गई थी। अनुमति पत्र की एक प्रतिलिपि परिशिष्ट - XIV पर संलग्न है।
- (ख) अनुमति की प्रमुख शर्तें निम्नलिखित थी:
- (i) डिपीलरिंग का कार्य उस क्षेत्र के भीतर किया जाएगा जिसे आवेदन के साथ संलग्न मापचित्र संख्या 246 में दर्शाया गया है।
- (ii) यह सुनिश्चित करना होगा कि सम्पूर्ण डिपीलरिंग आपरेशन के दौरान ऊपरिशाही सायाल, बालकुद्रा, कुरसे, ऊपरी नाकारी, निचली नाकारी, उपरी सिमाना, निचली सिमाना और हाथीदारी सीम के गोफ, जो ऊपर लम्बवत स्थित हैं तथा पैनल के 60 मी. के भीतर के क्षेत्र में हैं, जल रहित रखे जाएंगे।
- (iii) इस अनुमति से संबंधित किसी प्रकार के परिवर्तन की दशा में, जिससे खान में नियोजित श्रमिकों के जीवन को खतरा पहुँचने की संभावना हो अथवा खान को खतरा हो, तो खनन प्रवालनों को, जिसके लिए अनुमति प्रदान की गई है, तत्काल रोक दी जाएगी और उसकी सूचना इस निदेशालय को भेजी जाएगी।

उक्त खनन प्रचालनों को सुस्पष्ट और नवीन लिखित अनुमति के बिना पुनः आरम्भ नहीं की जाएगी।

- (ग) खान अधिनियम, 1952 की धारा 23(2) के अन्तर्गत की गई जाँच के दौरान यह प्रकट हुआ कि:-
- (i) मापचित्र संख्या 246 में दर्शाए गए अनुमत पैनल की सीमा के बाहर भी कुछ कार्य-स्थल बनाए गए थे।
 - (ii) कुछ गैलरियाँ फॉल्ट प्लेन की ओर चलाई गई थी और वे मापचित्र संख्या 246 पर नहीं दर्शायी गई थी।
- (घ) छत के फॉल्ट प्लेन की ओर धंसने के कारण मेजर फाल हुआ और इस फाल के परिणामस्वरूप बॉसगढ़ा सीम और हाथीदारी सीम के बीच एक संयोग स्थापित हो गया।
- (ङ) इस दुर्घटना को टाला गया होता यदि-
- (i) इस सीम के ऊपर लम्बवत उपरिशायी सीमों के गोफ को डिपीलरिंग आपरेशनों के दौरान जल रहित रखा गया होता,
 - (ii) प्लान संख्या 246 में दर्शाये गए पैनल के बाहरी क्षेत्र में कार्य नहीं किया गया होता और
 - (iii) पैनल की सीमा पर स्थित फॉल्ट को प्लान में दर्शाया गया होता।

1.6.22 भारत सरकार, कोयला मंत्रालय द्वारा विभागीय जाँच समिति का गठन किया गया था जिसमें अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, सी.एम.पी.डी.आई.एल.; निदेशक (तकनीकी) कोल इंडिया लिमिटेड (सी.आई.एल.); निदेशक (पी एण्ड आई.आर), सी.आई.एल.) तथा मुख्य महा प्रबंधक, मेसर्स भारत कोकिंग कोल लिमिटेड शामिल थे। समिति ने अपनी प्रतिवेदन में निष्कर्ष निकाला कि यह दुर्घटना बॉसगढ़ा सीम के पैनल संख्या 11 में खड़ी छत के बहुत बड़े भाग के गिरने और उसके बाद उपरिशायी हाथीदारी सीम से पानी के अन्तर्वाह के कारण हुई। डिपीलरिंग से पहले और डिपीलरिंग के दौरान अप्रभावी स्र से हाथीदारी सीम से जलनिकासी के कारण जलप्लावन हुआ था।

1.7 प्रतिपरीक्षण का सारांश :

1.7.1 श्री भास्कर भट्टाचारजी, खान सुरक्षा महानिदेशक; श्री राहुल गुहा, तत्कालीन खान सुरक्षा निदेशक और श्री के. नागेश्वर राव, खान सुरक्षा निदेशक ने बयान दिया कि खान सुरक्षा निदेशक (क्षेत्रीय खान निरीक्षक) कोयला खान अधिनियम, 1957 के विनियम 100(1) के अन्तर्गत अनुमति प्रदान करने के लिये अपनी शक्तियों के अधीन थे।

1.7.2 श्री भास्कर भट्टाचारजी ने आगे कहा कि खान अधिनियम, 1952 की धारा 23(2) के अन्तर्गत श्री के. नागेश्वर राव द्वारा जाँच की गई और वह उनके प्रतिवेदन का समर्थन करते हैं।

1.7.3 श्री राव ने बयान दिया कि अधिकांश अनुमतियाँ प्रबंधन द्वारा अपने आवेदन में दी गई सूचनाओं के आधार पर प्रदान की जाती हैं। इस मामले में अनुमति श्री राहुल गुहा द्वारा अनुमोदित था और श्री एस.के.मंडल, खान सुरक्षा उपनिदेशक, द्वारा हस्ताक्षरित था।

- 1.7.4 श्री राहुल गुहा ने कहा कि अनुमति पत्र में जलप्लावन के खतरे से बचाव के लिए आवश्यक शर्तों को समाविष्ट किया गया था और यह अनुमति एक पैनल सीमा के अन्दर पीलरों की सुस्पष्ट संख्या के लिए दी गई थी।
- 1.7.5 श्री बी.बी.दूबे, तत्कालीन अभिकर्ता, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी ने बयान दिया कि उन्होंने अनुमति के आवेदन में यह वादा किया था कि डिपीलरिंग आपरेशन आरम्भ करने से पहले उपरिशायी सीमों को जलमुक्त किया जाएगा और यह कि सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी, में वायु- विस्फोट का कोई इतिहास नहीं था।
- 1.7.6 श्री मो. तस्लीम, महाप्रबंधक, बरका-सयाल क्षेत्र सी. सी. एल. (निलंबनाधीन) ने कहा कि उन्होंने महाप्रबंधक के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान कई बार खान का दौरा किया था और वह दुर्घटना के बाद बचाव कार्यवाही में भी शामिल थे। उन्होंने आगे कहा कि भूतल में 21 लेवल, जहाँ तक अंतर्वाह के बाद पानी पहुँचा था, के ऊपर किसी भी संपत्ति को नुकसान नहीं पहुँचा था। उन्होंने इस बात की पुष्टि नहीं की कि जिस बोर छिद्र से जल का प्रवाह हो रहा था वह हाथीदारी सीम से सम्बद्ध था पर अन्य लोगों की तरह यह विश्वास किया था और बोरिंग मशीन जिसे हाथीदारी सीम को जलमुक्त करने के लिए लाया गया था उसे किसी अन्य खान में भेज दिया गया था।
- 1.7.7 श्री गोपाल प्रसाद, उप मुख्य खनन अभियंता, सी. एम. पी. डी. आई.एल., ने बयान दिया कि यदि सी. एम. पी. डी. आई. एल. द्वारा तैयार किए गए व्यापार योजना का सांविधिक प्रावधानों के साथ पालन किया गया होता तो दुर्घटना को टाला जा सकता था।
- 1.7.8 श्री एस. चौधरी, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, सी. एम. पी. डी. आई. एल. ने बयान दिया कि भारत सरकार, कोयला मंत्रालय द्वारा नियुक्त समिति ने सात से अधिक बार खान का दौरा किया और उसने अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक (सी. सी. एल.) और निदेशक (सी. सी. एल.) सहित 29 लोगों के बयान दर्ज किए। यह प्रतिवेदन दो खण्डों में है। खण्ड -I में 100 से अधिक पृष्ठ हैं। उन्होंने कहा कि साक्ष्य दर्शाते हैं कि कोयला खनन प्रचालन का कार्य खान सुरक्षा महानिदेशाल द्वारा अनुमति प्रदान किए गए क्षेत्र से बाहर भी किया गया था और खान प्रबंधन ने बोर छिद्र से पानी का प्रवाह कम होने के कारण उसे इस बात का संकेत मान लिया था कि ऊपरिशायी हाथीदारी सीम के कार्य-स्थल जलमुक्त हो गए हैं। उन्होंने कहा कि दुर्घटना के कारण पर समिति सर्व सम्मत थी।
- 1.7.9 श्री एम. एम. सिंह, निदेशक (तकनीकी), सी. सी. एल. ने कहा कि उन्होंने प्रो. ए. के. घोष के नेतृत्व में नियुक्त समिति के गठन की पूर्व में न तो कोयला मंत्रालय से और न ही सी. आई. एल. से अनुमति ली थी और यह कि समिति को सी. सी. एल. द्वारा भुगतान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि दुर्घटना के समय हाथीदारी सीम में पानी नहीं था।
- 1.7.10 प्रो. ए. के. घोष ने बयान दिया कि उन्होंने दुर्घटना स्थल का दौरा नहीं किया था। समिति के अन्य दो सदस्य दुर्घटना स्थल पर गए थे। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने कभी भी यह नहीं कहा था कि हाथीदारी सीम सूखी थी।

1.7.11 घोष समिति के एक सदस्य, डॉ.एस.के. सिंह ने कहा कि प्रतिवेदन तैयार करते समय उन्होंने शव-परीक्षा प्रतिवेदन का ध्यान रखा था। उन्होंने यह भी कहा कि खान में 21वें लेवल के ऊपर के सपोटों का विस्थापन नहीं हुआ था।

1.7.12 श्री इन्द्र देव प्रसाद सिंह, सहायक प्रबंधक, सेंट्रल सौंड़ा कोलियरी (निलम्बनाधिन) ने कहा कि रात्रि पालियों में कोई भी कार्यपालक नियुक्त नहीं था।

1.7.13 जिन छः चिकित्सकों ने मृतकों के शवों की शव-परीक्षा की थी, उनके प्रतिपरीक्षण से निम्नलिखित तथ्य उजागर हुए:-

- (i) चिकित्सक अपने संबंधित क्षेत्रों के विशेषज्ञ थे परन्तु उनमें से कोई भी चिकित्सा विधिशास्त्र और विष विज्ञान का विशेषज्ञ नहीं था।
- (ii) डॉ. ए. के. सिन्हा, जिनका पहले परीक्षण किया गया वे शुष्क-डूब (dry drowning) नामक तथ्य से अवगत नहीं थे और यह कि 20 से 40% डूबने के मामले शुष्क-डूब के हैं। डॉ.सिन्हा की प्रति परीक्षा के दौरान सभी चिकित्सक अदालत में उपस्थित थे। उनमें से कुछ लोगों ने, जिनकी बाद में प्रति-परीक्षा की गई, कहा कि वे इस प्रक्रिया को जानते हैं।
- (iii) कोई भी चिकित्सक मनुष्य के डूबने (ड्राउनिंग) की विभिन्न किस्मों के बारे में नहीं जानता था। वे शव-परीक्षा की चार प्राधिकृत तकनीकों के बारे में भी नहीं जानते थे।
- (iv) सभी शवों को चिकित्सकों के निर्देशन में ऐसे वर्ग-IV के कर्मचारियों द्वारा विच्छेदित किया गया था जिनके पास चिकित्सा विज्ञान की कोई डिग्री या डिप्लोमा नहीं था।
- (v) डॉ. बिनोद नारायण ने बयान दिया कि उन्होंने जिन चार मामलों की शव-परीक्षा की उन सभी मामलों में एक समान शब्दों और भाषा का प्रयोग किया था और इन सभी चार मामलों में मृत्यु का कारण एक ही था। उन्होंने परीक्षण के लिए आंत्र-अंश नहीं भेजा था।
- (vi) डॉ. एस. पी. सिन्हा से जब पानी की आकस्मिक अंतर्वाह आने के कारण होने वाले सिरातंत्र अवरोध के परिणामों को स्पष्ट करने के लिए कहा गया तो उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। वह इस बात से सहमत थे कि वह निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते कि केवल चोट लगने के कारण मृत्यु हुई थी। वहाँ शुष्क-डूब और सिरातंत्र अवरोध जैसे कारणों से भी मृत्यु होने की संभावना थी।
- (vii) डॉ. आर. के. गुप्ता इस बात से सहमत थे कि मृत्यु का कारण बताना थोड़ा कठिन है और वे इस बात से भी सहमत थे कि उन्होंने चिकित्सा विधि-शास्त्र और विष-विज्ञान की किसी पुस्तक का गहन अध्ययन नहीं किया है जिससे कि वे वैज्ञानिक विधि से शव-परीक्षण में समर्थ हो सकें। वे इस बात पर भी सहमत थे कि जल-विस्फोट के जबरदस्त प्रहार से भी शरीर पर ऐसी चोटें आ सकती हैं जैसी चोटें किसी मोथरे पदार्थ के कारण आती हैं।

1.7.14 प्रतिपरीक्षण का विस्तृत सारांश परिशिष्ट VII पर संलग्न है।

1.8 बहस का सारांश:

1.8.1 श्री जे. एन. सिंह, कोल माइन्स आफिसर्स एसोसिएशन आफ इण्डिया (सी. एम. ओ. ए. आई.) प्रतिनिधि ने बोर्ड पर एक मापचित्र को चित्रित करते हुए सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी के कार्य-स्थल 1 का विस्तार से वर्णन किया और कहा कि-

- (क) सी. एम. पी. डी. आई. एल. को अपने व्यवसाय योजना में बाँसगढ़ा सीम को केविंग विधि द्वारा डिपीलर करने का सुझाव देने के अनुवर्ती परिणाम के लिए जिम्मेदार और भागीदार होना चाहिए,
- (ख) अनुमति की स्वीकृति बिना किसी वैज्ञानिक सोच-विचार के दी गई थी और खान सुरक्षा महानिदेशालय के एक अनधिकृत अधिकारी, श्री एस.के. मण्डल, उप निदेशक खान सुरक्षा द्वारा हस्ताक्षरित की गई थी,
- (ग) हाथीदारी सीम को डिपीलरिंग प्रक्रिया आरम्भ करने से पूर्व पूर्णतः जलमुक्त किया गया था,
- (घ) श्री डी. के. मल्लिक ने अनुमत क्षेत्र से परे सीम की निकासी या कार्य-स्थल से 60 मी. के भीतर जल की उपस्थिति संबंधित उल्लंघनों का उल्लेख अपने खान निरीक्षणों के दौरान नहीं किया था,
- (ङ) सी. आई. एल. की खदानों में सांविधिक कार्मिकों की घोर कमी थी,
- (च) खानों में संविधिक व्यक्तियों को बार-बार स्थानान्तरित किया जाता है। कम्पनी की स्थानान्तरण की नीति दोषपूर्ण है,
- (छ) मेन फाल के समय वास्तविक अनावृत्त (इक्सपोजर) क्षेत्र केवल 2000 वर्ग मीटर था और
- (ज) दुर्घटना का कारण एक वायु-विस्फोट था और लोगों की मृत्यु उस समय कार्यरत माइनिंग सिरदार और ओवरमैन द्वारा गलत निर्णय लिए जाने के कारण हुई थी।

1.8.2 श्री अशोक कुमार शर्मा ने आल इण्डिया माइनिंग पर्सनल एसोसिएशन (ए. आई. एम. पी. ए.) का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा कि जब बाँसगढ़ा सीम के उपर की छत धंस गई तो एक वायु-विस्फोट के कारण दुर्घटना हुई थी। उस समय हाथीदारी सीम में कोई पानी नहीं था। वायु-विस्फोट के कारण संस्तर का संचालन आगे हो जाने से सीमाना सीम के साथ संयोग हुआ और श्रमिकों की मृत्यु हो जाने के बाद सीमाना सीम से जल का तीव्र प्रवाह बाँसगढ़ा सीम के अन्दर हुआ। श्रमिकों की मृत्यु ओवरमैन और माइनिंग सिरदार के गलत निर्णय के कारण हुई थी जिनकी स्वयं भी दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी।

1.8.3 श्री उमेश शर्मा, अभिकर्ता, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी (निलम्बनाधीन) ने कहा कि-

- (क) दुर्घटना का मुख्य कारण सी. एम. पी. डी. आई. एल. द्वारा तैयार किए गए व्यावसायिक योजना में की गई सिफारिशों के आधार पर बाँसगढ़ा सीम की निकासी केविंग विधि द्वारा करने का निर्णय लिया जाना था।
- (ख) बाँसगढ़ा सीम की निकासी के कारण छत गिरी जिसके कारण संस्तर संचालन 60 मी. से आगे ऊपरिशायी सीमों में भी हुआ और जिसके परिणामस्वरूप इन सीमों में मौजूद पानी का तीव्र प्रवाह बाँसगढ़ा सीम के अन्दर हुआ।

- (ग) 14 व्यक्तियों की जानें बचाई जा सकती थी यदि डिस्ट्रिक्ट माइनिंग सिरदार और ओवरमैन ने आसन्न रूफफॉल की कल्पना की होती और लोगों को समय रहते डिपीलरिंग क्षेत्र से हटा लिया होता।

1.8.4 श्री एन.के. मार्तण्ड, प्रबंधक, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी (निलम्बनाधीन) ने कहा कि-

- (क) बाँसगढ़ा सीम के पैनल संख्या 11 की निकासी की स्वीकृति, उनके सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी का कार्यभार ग्रहण करने से पहले प्रदान की गई थी।
- (ख) पैनल संख्या 11 के ऊपर स्थित हाथीदारी सीम के कार्य-स्थल दुर्घटना के समय जलमुक्त थे।
- (ग) खान सुरक्षा महानिदेशालय द्वारा अनुमत क्षेत्र से बाहर किसी भी क्षेत्र में कोयले की निकासी नहीं की गई थी।
- (घ) खान सुरक्षा महानिदेशालय के अधिकारियों द्वारा निरीक्षणों के दौरान जल निकासी की अपर्याप्तता का उल्लेख नहीं किया गया था।
- (ङ) पैनल संख्या 11 में खान अभिकर्ता, क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारी और उपनिदेशक खान सुरक्षा ने दौरा किया था परन्तु उनमें से किसी ने भी कार्य-स्थल में असामान्य पानी का रिसाव नहीं देखा था।
- (च) इस दुर्घटना का संभावित कारण कोयला निष्कासित क्षेत्र में छत के गिरने के साथ ही दिनांक 14.06.2005 की तीसरी पाली में माइनिंग स्टाफ की समय रहते अपने कर्तव्यों और दायित्वों के निर्वाहन में कमी थी। रात्रि पाली के खनन पदाधिकारियों ने सही समय पर श्रमिकों को हटा लेने का निर्णय न लेकर भारी गलती की थी।
- (छ) छत गिरने के कारण हाथीदारी सीम के डिपीलरिंग क्षेत्र में संचलन हुआ जिससे उपरिशायी व अन्य सीमों में विक्षोभ उत्पन्न हुआ। इस विक्षोभ से सीमाना सीम से उसमें फँसा हुआ पानी मुक्त हो गया।

1.8.5 श्री मो. तस्लीम, महाप्रबंधक, बरका-सायाल क्षेत्र, सी.सी. एल (निलम्बनाधीन), ने कहा कि -

- (क) उन्होंने विभिन्न पदों पर लगभग 32 वर्षों तक खनन उद्योग में कार्य किया है और कई सुरक्षा पुरस्कार जीते हैं।
- (ख) अभिकर्ता तथा प्रबंधक खान सुरक्षा महानिदेशालय से प्राप्त अनुमति संबंधी मामलों में महाप्रबंधक से चर्चा नहीं करते हैं।

1.8.6 श्री ए.एल.रजक, सुरक्षा अधिकारी, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी(निलम्बनाधीन), ने कहा कि:-

- (क) छत के गिरने के बाद अतिरिक्त संस्तर संचालन के कारण सीमाना सीम से जल का अन्तर्वाह हुआ।
- (ख) उन्हें उच्च पदाधिकारियों द्वारा उत्पादन कार्य में नियोजित किया गया था इस कारण खान के सुरक्षा संबंधी पहलुओं को देखने के लिए उनके पास बहुत कम समय बचता था। जब अदालत में उनसे पूछा कि क्या उन्होंने उत्पादन के कार्यों

से मुक्त किए जाने के लिए कोई टिप्पणी प्रस्तुत की थी तो उनका उत्तर नकारात्मक था।

1.8.7 श्री आई. डी. पी. सिंह, सहायक प्रबंधक, सेंट्रल सौंडा कोलियरी (निलम्बनाधीन), ने कहा कि वह दिनांक 14.06.2005 से 25.06.2005 तक छुट्टी पर थे।

1.8.8 श्री रमेन्द्र कुमार, एटक, ने कहा कि -

- (क) एक को छोड़कर बाकी सभी शव 17 क्रॉस-कट के दक्षिण क्षेत्र अर्थात् कार्य-स्थल की डीप साइड से प्राप्त हुए थे। स्पष्ट रूप से सभी शवों को जल द्वारा बहा कर डीप-साइड की ओर ले जाया गया था। यदि उनकी मृत्यु वायु-विस्फोट के कारण हुई होती तो उनके शव 17 क्रॉस-कट में या 17 क्रॉस-कट के उत्तर की ओर पाए गए होते। शव पानी में पाए गए मलवे के नीचे से नहीं। इससे सिद्ध होता है कि मौतें जल प्लावन के कारण हुई थी।
- (ख) पुलिस की अपमृत्यु विचारण प्रतिवेदन में मृतकों के शरीर पर कोई बाह्य चोट होने का उल्लेख नहीं है। प्रतिवेदन में यह उल्लेख किया गया है कि शव पानी में डूबे रहने के कारण फूल गए थे। यदि व्यक्ति वायु-विस्फोट के कारण मरे थे तो मृतकों के शरीर पर बाहरी चोटें होनी चाहिए थी।
- (ग) जब शवों की शव परीक्षा की जा रही थी तब वे वही उपस्थित थे। शव-परीक्षा शाम के बाद और कभी कभी मोमबत्ती के प्रकाश में की गई थी। चिकित्सकों ने शवों को छुआ तक नहीं और शवों को गैर तकनीकी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों द्वारा विच्छेदित किया गया था।
- (घ) दुर्घटना माईनिंग सिरदार तथा ओवरमैन की गलती के कारण नहीं हुई थी।
- (ङ) खान में सांविधिक व्यक्तियों की कमी थी।
- (च) प्रबंधन द्वारा अनुमति के लिए दिए गए आवेदन का प्रपत्र भाग इसके साथ संलग्न मापचित्र से मेल नहीं खाता था।

1.8.9 श्री के. नागेश्वर. राव, खा सु म नि के राँची क्षेत्र के खान सुरक्षा निदेशक ने कहा कि -

- (क) खा सु म नि का क्षेत्रीय कार्यालय एक वर्ष में लगभग 50 से 70 तक अनुमति के मामलों पर विचार करता है। इसलिए अनुमति के मामलों पर विचार करने के लिए खानों का निरीक्षण नहीं किया जाता है। इनका निपटारा प्रबंधन द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर किया जाता है।
- (ख) प्रबंधन का यह दायित्व है कि वह प्रदत्त अनुमति की शर्तों का अनुपालन करें।
- (ग) पेनल संख्या 11 के लिए अनुमति दिए जाने के बाद और दुर्घटना से पहले सेंट्रल सौंडा कोलियरी का निरीक्षण, खा सु म नि के एक अधिकारी द्वारा विशिष्ट प्रयोजनों के लिए किया गया था।
- (घ) हाथीदारी सीम को जलमुक्त करने के लिए जो बोर छिद्र किया गया था वह खान का निरीक्षण किए जाने के दिन गोफ के भीतर था।
- (ङ.) सामान्य परिस्थितियों में एक बोर छिद्र को जो ऊपर की और क्षैतिज से लगभग 30° के कोण पर लगभग 60 मी. तक ड्रिल किया गया हो उसे एक पुराने हालेज रस्से से स्पष्टतः साफ नहीं किया जा सकता है।

- (च) श्री हनीफ और श्री नागेंद्र सिंह के विचार किसी अन्य प्रत्यक्ष अवलोकनों, जो कि वायु-विस्फोट की धारना को दर्शाते, से संपुष्टित नहीं थे। 22 वें लेवल के ऊपर कोई विक्षोभ नहीं पाया गया था। दुर्घटना के तुरंत बाद किए गए निरीक्षण के दौरान लम्बवत् खड़े खूटे और अवरोध अक्षुण्ण पाये गए थे। 22वें लेवल के बाहरी क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में कोयला चूर्ण का जमाव नहीं था। 22वें तल के नीचे जो अस्तव्यस्तता पाई गई उससे वायु-विस्फोट की कल्पना नहीं की जा सकती है क्योंकि ऐसा जल के तीव्र वेग के कारण भी हो सकता है।
- (छ) निकासी की रेखा के साथ वहीं तक फाल हुआ था जहाँ पर गोफ के किनारे के कॉंग खड़े किए गए थे। पैनल में किसी भी पीलर का अध्यारोहन (overriding) नहीं हुआ था।
- (ज) उच्च प्रबलता वाले वायु-विस्फोट केवल तभी होते हैं जब अनावृत क्षेत्र बहुत ही विशाल होता है। पैनल संख्या-11 में हैंगिंग गोफ का अनावृत क्षेत्र बहुत बड़ा नहीं था।
- (झ) दुर्घटना का प्रमुख कारण छत का गिरना नहीं था बल्कि ऊपरिशायी सीम में जल की मौजूदगी थी। यह नहीं माना जाना चाहिए कि भूमितल कार्यक्षेत्र में कोई भी पर्यवेक्षक अथवा कोई सक्षम व्यक्ति ऊपरिशायी सीमों में जल की मौजूदगी को जानने में समर्थ होगा। अतः ओवरमैन या सिरदार जैसे पर्यवेक्षकों को इस दुर्घटना के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है।

1.8.10 श्री एम. एम. सिंह, निदेशक तकनीकी, सी.सी.एल., ने एक लिखित बयान प्रस्तुत किया जिसमें कहा गया कि -

- (क) सी.सी.एल में निदेशक, तकनीकी, के पद पर उनकी पदोन्नति 28.10.2004 को हुई थी।
- (ख) सी.सी.एल में 63 खदानें थीं जिनका सक्रीय क्षेत्र 2600 वर्ग कि.मी. में था और इनमें 2650 कार्यपालकों सहित लगभग 68,345 की संख्या में कर्मी कार्यरत थे।
- (ग) वे दुर्घटना के बाद पहले निगम स्तर के प्रबंधन कार्यपालक थे जिसने खान में प्रवेश किया। उन्होंने बचाव के कार्य की दिशा तय की और शवों के बाहर निकाले जाने तक वहीं रहे।
- (घ) सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी में सांविधिक व्यक्तियों की कोई कमी नहीं थी।

अध्याय - II

सामान्य सूचना

2.1 अवस्थिति:-

2.1.1 सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी इक्षिण करणपुरा कोयला क्षेत्र में स्थित है और इसपर मेसर्स कोल इंडिया लिमिटेड (सी.आई.एल.), की एक सहायक कम्पनी मेसर्स सेन्ट्रल कोलफील्डस लिमिटेड (सी.सी.एल.) का स्वामित्व है, जो कोयला मंत्रालय, भारत सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है यह खान झारखंड राज्य के हजारीबाग जिले में है और पूर्व- मध्य रेलवे के बरकाकाना-खेलारी प्रभाग पर पतरातु रेलवे स्टेशन से लगभग 05

कि.मी. दूर है। यह झारखंड राज्य की राजधानी, राँची, से लगभग 50 कि.मी. दूर है। भौगोलिक रूप में यह आक्षांश 23°40'00" से 23°41'00" उत्तर एवं देशान्तर 85°20'30" से 85°21'40" पूर्व के मध्य अवस्थित है। इस खान का खनन अधिकार मेसर्स सी. सी. एल. में निहित है।

- 2.1.2 यह खान दक्षिण करणपुरा कोलफील्ड के मध्य-भाग में स्थित है जो पूर्व-पश्चिम दिशा में विस्तारित है। क्षेत्र की कोयला सीमें निचले गोंडवाना संरचना के बराकर श्रंखला की है। 1973 में सभी गैर कोकिंग कोयला खानों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात् क्षेत्र की कोयला खानों को कोल माइन्स ऑथोरिटी (सी. एम. ए.) द्वारा अधिगृहीत किया गया और बाद में वर्ष 1975 में मेसर्स सी. सी. एल. के गठन के पश्चात् उसे स्थानान्तरित कर दिया गया। वर्तमान में सी. सी. एल. 64 कोयला खानों को संचालित करता है जिनमें 26 भूमिगत एवं शेष खुली खाने हैं। इन सभी खानों को प्रशासनिक नियंत्रण के 11 क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। सेंट्रल सौन्डा कोलियरी बरका-सयाल क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।
- 2.1.3 बरका-सयाल क्षेत्र मेसर्स सी. सी. एल. के 11 क्षेत्रों में से एक है और इसमें 9 खानें हैं। जिनमें 3 खुली खाने हैं और शेष 6 भूमिगत खानें हैं। इस क्षेत्र की भूमिगत खानें सामान्यतः मानव श्रम द्वारा पारंपरिक बोर्ड और पीलर विधि तथा अर्द्ध मशीनीकृत विधि से साइड डिस्चार्ज लोडर आदि प्रयोग करते हुए कार्य करती है।
- 2.1.4 सेंट्रल सौन्डा कोलियरी उत्तर-पूर्व में सौन्डा करणपुरा कोलियरी, दक्षिण-पूर्व में भुरकुन्डा कोलियरी, दक्षिण-पश्चिम में सौन्डा-डी कोलियरी और उत्तर-पश्चिम में सयाल-डी कोलियरी से घिरा है।

2.2 खान का इतिहास:-

मेसर्स करमचंद थापर एवं कम्पनी द्वारा वर्ष 1956 में सर्वप्रथम कोलियरी की शुरुआत की गई और वर्ष 1973 में कोयला खानों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात् खान को सी. एम. ए. द्वारा अधिगृहीत किया गया और बाद में 1975 में खान का स्वामित्व मेसर्स सी. सी. एल. को स्थानान्तरित कर दिया गया।

2.3 स्वामित्व :-

वर्ष 1971 और 1973 में कोयला खानों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात् चार सहायक कंपनियाँ यथा- मेसर्स भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, इस्टर्न कोलफील्डस् लिमिटेड, सेंट्रल कोलफील्डस् लिमिटेड और वेस्टर्न कोलफील्डस् लिमिटेड तथा एक नियंत्रक कम्पनी कोल इंडिया लिमिटेड, की स्थापना की गई। बाद के वर्षों में कम्पनियों के पुनर्गठन से कोल इंडिया की योजना व परिकल्पना शाखा, मे. कोल माइन्स प्लानिंग एन्ड डिजाइन इन्स्टीट्यूट सहित आठ सहायक कम्पनियों का सृजन हुआ। वर्तमान में मेसर्स सी. सी. एल. भारत सरकार का एक उपक्रम है। कम्पनी का संचालन श्री राजेन्द्र प्रसाद रिटोलिया, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में एक निदेशक मंडल करती है। चार क्रियाशील निदेशक यथा निदेशक तकनीकी (प्रचालन), निदेशक तकनीकी (परियोजना एवं नियोजन), निदेशक (वित्त) और निदेशक (कार्मिक) दैनिक प्रशासन एवं नियोजन में अध्यक्ष सह प्रबन्ध

निदेशक की सहायता करते हैं। सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी मेसर्स सी. सी. एल. के 64 खानों में एक है और खान अधिनियम, 1952 की धारा 76 के अन्तर्गत श्री एम. एम. सिंह, निदेशक तकनीक (प्रचालन) को खान का मालिक नामित किया गया है।

2.4 प्रबंधन:

- 2.4.1 कम्पनी मुख्यालय संगठन से खान स्तर तक खानों को चलाने के लिए कोयला क्षेत्र में एक विस्तृत प्रबन्ध सोपान बनाया गया है। क्षेत्रीय व उससे निचले स्तर को सामान्यतया स्थानीय प्रबंधन के रूप में परिभाषित किया जाता है। क्षेत्रों को मुख्य महाप्रबंधक या महाप्रबंधक की देख-रेख में रखा जाता है। मुख्य महाप्रबंधक या महाप्रबंधक को क्षेत्रीय स्तर पर अधिकारीगण यथा क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारी, क्षेत्रीय योजना अधिकारी, क्षेत्रीय अभियंता, क्षेत्रीय सर्वेक्षण अधिकारी, क्षेत्रीय वित्त अधिकारी इत्यादि सहायता प्रदान करते हैं। खान स्तर पर सामान्यतया एक या दो खानों को एक अभिकर्ता के प्रभार में रखा जाता है। प्रत्येक खान का प्रधान प्रबंधक होता है जिसे पर्यवेक्षी अधिकारियों जैसे-ओवरमैन, माइनिंग सिरदार इत्यादि इस के अतिरिक्त सहायक प्रबंधक, सुरक्षा अधिकारी, संवातन अधिकारी, सर्वेक्षक एवम् कार्मिक अधिकारी इत्यादि सहायता प्रदान करते हैं। दुर्घटना के समय स्थानीय प्रबंधन का विवरण अधोलिखित अनुच्छेदों में निहित है।
- 2.4.2 श्री मो. तसलीम, स्नातक खनन अभियंता और प्रथम श्रेणी खान प्रबंधक सक्षमता प्रमाणपत्र (कोयला) धारक, दिनांक 17.08.2004 से बरका-सयाल क्षेत्र के महाप्रबंधक थे। खान अधिनियम 1952 की धारा 2 (1) (C) के अन्तर्गत अभिकर्ता की परिभाषा के अनुसार वे सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी के मानित अभिकर्ता थे।
- 2.4.3 प्रथम श्रेणी खान प्रबंधक सक्षमता प्रमाण-पत्र (कोयला) और खनन अभियंत्रण में स्नातक, श्री उमेश शर्मा, 01.06.2003 से सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी के अभिकर्ता व परियोजना-अधिकारी थे। कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 8 ए के अन्तर्गत श्री शर्मा को अभिकर्ता नियुक्त किया गया था।
- 2.4.4 खान अधिनियम 1952 की धारा 17 के साथ पठित कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 31 के अन्तर्गत श्री एन. के. मार्तण्ड, प्रथम श्रेणी खान प्रबंधक सक्षमता प्रमाण-पत्र (कोयला) धारक, को खान का प्रबंधक नियुक्त किया गया था।
- 2.4.5 श्री ए.एल. रजक, द्वितीय श्रेणी प्रबन्धक सक्षमता प्रमाण-पत्र (कोयला) धारी, कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 31 ए के अन्तर्गत सितम्बर 2004 से खान के सुरक्षा पदाधिकारी नियुक्त थे तथा श्री आइ. डी. पी. सिंह द्वितीय श्रेणी प्रबन्धक सक्षमता प्रमाण-पत्र (कोयला) धारी, कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 32 के अन्तर्गत अवर प्रबन्धक के पद पर नियुक्त थे।
- 2.4.6 श्री पी. के. लाहिरी, ओवरमैन सक्षमता प्रमाण-पत्र धारक, को खान का कर्मी-निरीक्षक (खनन) नियुक्त किया गया था।

- 2.4.7 श्री विजय कुमार गुप्ता, सर्वेक्षक सक्षमता प्रमाण-पत्र (कोल) धारक, को अगस्त 2003 में खान का सर्वेक्षक नियुक्त किया गया था और श्री श्रीकांत गुप्ता एवं ओम प्रकाश उप-सर्वेक्षक उनकी सहायता करते थे। किन्तु उप-सर्वेक्षकों के पास अपेक्षित सांविधिक योग्यता नहीं थी।
- 2.4.8 उपरोक्त वर्णित विभिन्न स्तर के पदधारियों के पूर्व श्री बी. बी. दूबे, जो अब सेवा-निवृत्त हो चुके हैं, खान के अभिकर्ता थे और श्री कृष्ण मुरारी खान के प्रबंधक थे। श्री कृष्ण मुरारी वर्तमान में मेसर्स सी.सी.एल की अरगदा क्षेत्र में कार्यरत हैं। श्री विजय कुमार गुप्ता, के पूर्व श्री डी. के. सिंह, खान के सर्वेक्षक थे। श्री सिंह वर्तमान में मेसर्स सी. सी. एल. के उसी क्षेत्र के अधीन उरीमारी खुली खान में पदस्थापित हैं।
- 2.4.9 खान में, निचले स्तर पर दैनंदिन पर्यवेक्षण के लिए 12 ओवरमैन और 24 माइनिंग सिरदार नियुक्त किये गये थे। दुर्घटना के समय खान में दो खण्डों (क्षेत्रों) में कार्य चल रहा था, एक बाँसगढ़ा सी सीम में (विकास) और दूसरा बाँसगढ़ा सीम में पैनल संख्या 11 में डिपीलरिंग। विकास खण्ड से उत्पादन 120 टन प्रति दिन तथा डिपीलरिंग खण्ड से 100 टन प्रतिदिन था। प्रतिदिन 560 व्यक्तियों के औसत नियोजन के साथ दिनांक 01.06.2005 को खान की नामावली पर 832 व्यक्ति सूचीबद्ध थे।
- 2.4.10 खान में आठ-आठ घंटों के तीन पाली में कार्य चल रहा था तथा प्रथम पाली की शुरुआत प्रातः 8.00 बजे होती थी।

2.5 भूविज्ञान:

- 2.5.1 सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी दक्षिणी करणपुरा कोयला क्षेत्र के मध्य भाग में पड़ता है। क्षेत्र की कोयला सीमें निचले गोंडवाना शैल-समूह के बराकर स्तरित श्रेणी से सम्बद्ध है। कोयला धारी बराकर संस्तर दक्षिण 70° पश्चिम दिशा में 5 में 1 की सामान्य दर से झुकी हुई है। उत्तरी पूर्वी भाग में कोयला परत का नतिलम्ब उत्तर 20° पश्चिम से दक्षिण 20° पूर्व की ओर है।
- 2.5.2 सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी की सम्पत्ति के मध्य भाग से होकर लगभग पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाला लगभग 20 मी. पात (थो) का एक मुख्य भ्रंश (फॉल्ट) इसे दो भागों में विभाजित करता है।
- 2.5.3 क्षेत्र में विभिन्न संस्तरों पर कोयले की 27 परतें (सीम) हैं। तकनीकी व आर्थिक महत्व की तुलना कर इनमें से 19 सीमों को काम-लायक चिह्नित किया गया है।
- 2.5.4 खान क्षेत्र के अन्तर्गत आनेवाले उपरी सयाल, निचली सयाल, उपरी बालकुदरा, निचली बालकुदरा, ऊपरी नकारी, निचली नकारी, ऊपरी सेमाना, निचली सेमाना, हाथीदरी, बाँसगढ़ा, बाँसगढ़ा-सी, उपरी सिरका और निचली सिरका कोयला सीमों में आंशिक या विस्तृत रूप में कार्य किया गया है।
- 2.5.5 कोयला खान विनियम 1957 के विनियम 2 (12) में निहित परिभाषा के अनुरूप खान को डिग्री-II गैसीय घोषित किया गया था। कोयले की गुणवत्ता प्राथमिक तौर पर 17-28% राख व 4050-6000 कि. कैलोरी/कि.ग्रा. परम उष्मा परिमाण युक्त नन-कोकिंग थी।

2.6 प्रवेश-मार्गः *

खान में बहुविध इन्क्लाइन प्रवेशों मार्गों द्वारा सतह से अपेक्षित कोल सीम तक पहुँच कर कार्य किया गया है। इन प्रवेश मार्गों के विषय में, विशिष्ट सीम में कार्य-क्षेत्र के वर्णन के साथ, बाद के अनुच्छेद में विस्तृत चर्चा की गई है। बाँसगढ़ा सीम, जहाँ दुर्घटना घटित हुई थी, में इन्क्लाइन सं. -17, 18 एवं 25 के माध्यम से कार्य किया गया था। सीम के संवातन को सरल बनाने के लिए एक फैन - ड्रिफ्ट भी बनाया गया था।

2.7 खान के कार्य क्षेत्र:-

- 2.7.1 सम्पत्ति के तहत उपरी सयाल और निचली सयाल सर्वोच्च व समीपस्थ सीम थे अर्थात् ये एक दूसरे से 9 मी. के अन्दर थे। उपरी सयाल में पोखरिया विधि से कार्य किया गया था और निचली सयाल में भूमिगत विधि से कार्य किया गया था। तथापि ये कार्य-स्थल बाँसगढ़ा सीम के कार्य-स्थल से किसी भी प्रकार सम्बद्ध नहीं थे।
- 2.7.2 ऊपरी बालकुदरा और निचली बालकुदरा सीम भी समीपस्थ थे। ये निचली सयाल सीम से लगभग 26 मी. नीचे थे। बालकुदरा सीम में सम्पत्ति के उत्तर की ओर खुली खान/ओपेन-कास्ट विधि द्वारा कार्य किया गया था। इन खुली खदानों को आंशिक तौर पर भरा गया था। निचली बालकुदरा सीम के एक खण्ड में भूमिगत केविंग विधि द्वारा इन्क्लाइन सं. 19, 20 एवं 21 के माध्यम से कार्य किया गया था। ये कार्य - स्थल भी बाँसगढ़ा सीम के कार्य-स्थल से किसी प्रकार सम्बद्ध नहीं थे।
- 2.7.3 कुर्से सीम निचली बालकुदरा सीम के लगभग 20 मी. नीचे स्थित था। सीम में इन्क्लाइन सं. 11, 12, 15, 26 एवं 27 के द्वारा व्यापक रूप से भूमिगत केविंग विधि द्वारा कार्य किया गया था और निःशक्त (exhausted) था। बाँसगढ़ा सीम के पैनल सं. 11 के ऊपर व समीपस्थ क्षेत्र में यह सबसे उपरी सीम था।
- 2.7.4 कुर्से सीम के लगभग 17 मी. नीचे ऊपरी व निचली नकारी सीम (समीपस्थ) स्थित थे। उपरी नकारी सीम में दो इन्क्लाइनों यथा 6 एवं 9 द्वारा भूमिगत केविंग विधि से कार्य कर सील बंद कर दिया गया था। लोअर नकारी सीम में इन्क्लाइन सं. 6, 9 एवं 10 के माध्यम से कार्य किया गया था और ये सभी पीलर पर खड़े थे एवं सील बन्द कर दिये गये थे।
- 2.7.5 ऊपरी और निचली सेमाना सीम समीपस्थ सीम थे। ये निचली नकारी सीम के 23 मी. नीचे स्थित थे और इनमें इन्क्लाइन सं. 1, 2, 3, 4, 5, 7, 8 एवं 16 द्वारा भूमिगत केविंग एवं स्टोविंग विधि से कार्य किया गया था। ये सभी सीम 1995 में निःशक्त हो गए थे।
- 2.7.6 हाथीदारी सीम निचली सेमाना सीम के लगभग 46 मी. नीचे था। इन्क्लाइन सं. 13 एवं 14, 24, 30 एवं 31 के द्वारा इस सीम में आंशिक केविंग एवं आंशिक स्टोविंग विधि से कार्य किया गया था। इस सीम का कार्य जनवरी 1963 में आरंभ किया गया था और 2001 में सील बंद किया गया था। हाथीदारी सीम की सम्पत्ति के ऊपरी ओर के कुछ पैनलों में स्टोविंग विधि से निष्कर्षण की गई थी और शेष क्षेत्रों में केविंग विधि से निष्कर्षण की गई थी यह क्षेत्र उपरिशाही सीमों से जिनकी डिपीलरिंग हो चुकी थी, से सम्बद्ध थी।

- 2.7.7 बाँसगढ़ा सीम हाथीदारी सीम के नीचे स्थित है। 20 मी. पात (थ्रो) वाले भ्रंश (फॉल्ट) के नीचे डिप साइड की सम्पत्ति को केविंग विधि द्वारा पूरी तरह डिपीलर कर दिया गया था। मुख्य इन्क्लाइन के पूर्वी तरफ के सम्पत्ति का निष्कर्षण अंशतः केविंग विधि से और अंशतः स्टोविंग विधि से इन्क्लाइन सं. 17, 18 एवं 25 के द्वारा किया गया था।
- 2.7.8 बाँसगढ़ा-सी सीम, बाँसगढ़ा सीम के लगभग 56 मी. नीचे था और इसे विकसित किया जा रहा था। ये कार्य-स्थल बाँसगढ़ा सीम के पैनल सं. 11, जहाँ दुर्घटना हुई थी, से 750 मी. से अधिक की दूरी पर थे।
- 2.7.9 ऊपरी सिरका सीम बाँसगढ़ा -सी सीम के लगभग 52 मी. नीचे स्थित था और यह स्तम्भों (पीलर) पर खड़ा था। वर्तमान में इस सीम में सिर्फ पानी- पम्पिंग किया जा रहा था।
- 2.7.10 निचली सिरका सीम ऊपरी सिरका सीम के लगभग 15 मी. नीचे था। इसे आंशिक तौर पर विकसित किया गया था और स्तम्भों (पीलर) पर खड़ा था।
- 2.8 बाँसगढ़ा सीम के पैनल सं० 11 के सम्बन्ध में विभिन्न सीम के कार्य-स्थलों का विवरण:-
- 2.8.1 खान में ऊपरी सयाल सीम, निचली सयाल सीम, उपरी बालकुदरा और निचली बालकुदरा सीम मौजूद थे परन्तु किसी भी प्रकार से बाँसगढ़ा सीम के पैनल सं. 11 से सम्बन्धित नहीं थे। ये सभी सीम पैनल सं. 11 के ऊपर स्थित नहीं थे।
- 2.8.2 बाँसगढ़ा सीम के पैनल सं. 11 के समीप और उपर के क्षेत्रों में कुर्से सीम सबसे ऊपर था। इस सीम को वर्ष 1982- 83 में केविंग विधि से डिपीलर किया गया था और पैनल सं. 11 के ऊपर डीप साइड में अवस्थित था। इस स्थान पर आवरण लगभग 20 मी. था।
- 2.8.3 ऊपरी नकारी सीम कुर्से सीम के लगभग 18 मी. नीचे था। ऊपरी व निचली नकारी सीम समीपस्थ सीम थे पैनल सं. 11 के उपर वाले क्षेत्र में ऊपरी नकारी सीम का निष्कर्षण वर्ष 1983 में केविंग विधि से की गई थी। आवरण लगभग 27 मी. था। निचली नकारी सीम स्तम्भों (पीलर) पर खड़ा था।
- 2.8.4 ऊपरी सेमाना सीम, निचली नकारी सीम के 25 मी. नीचे स्थित था। ऊपरी सेमाना सीम पैनल सं० 11 के ऊपर आंशिक रूप से स्थित था और 1992 में विखंडन व स्टोविंग विधि से इसका निष्कर्षण किया गया था। आवरण लगभग 60 मी. था। ऊपरी सेमाना सीम और निचली सेमाना सीम लगभग तीन मी. के अन्तराल पर समीपस्थ थे।
- 2.8.5 निचली सेमाना सीम पैनल सं. 11 के ऊपर आंशिक रूप से अवस्थित था। कुछ क्षेत्र का निष्कर्षण स्टोविंग विधि से की गई थी और कुछ स्तम्भों (पीलर) पर खड़े थे।
- 2.8.6 हाथीदारी सीम, बाँसगढ़ा सीम के लगभग 26 मी. उपर स्थित था। इस सीम में पूरी तरह काम कर सील कर दिया गया था। पैनल सं० 11 के उपर आंशिक रूप से केविंग विधि द्वारा निष्कर्षण किया गया था और कुछ क्षेत्र स्तम्भों (पीलर) पर खड़े थे। लगभग 1 से 8 मी. पात (थ्रो) का एक भ्रंश (फॉल्ट) हाथीदारी सीम में बाँसगढ़ा सीम के पैनल सं. 11 के उपर मौजूद था।

2.8.7 पैनल सं. 11 के ऊपर हाथीदारी सीम के कार्य- स्थल को भ्रंश (फॉल्ट) (FX-FX) द्वारा दो खंडों में विभाजित किया गया था, जिसे उत्तरी और दक्षिणी खंड परिभाषित किया जा सकता है। उत्तरी खंड का निष्कर्षण केविंग विधि (पैनल सं. 7) द्वारा वर्ष 1992 में किया गया था। दक्षिणी खंड का आंशिक निष्कर्षण केविंग विधि द्वारा (पैनल सं. 10) वर्ष 1993-94 में किया गया। पैनल सं. 10 के डीप साइड की सम्पत्ति को स्तम्भों (पीलर) पर खड़ा छोड़ दिया गया था।

2.8.8 बाँसगढ़ा सीम, हाथीदारी सीम के लगभग 26 मी. नीचे स्थित था। इस खान में एक डिपीलरिंग डिस्ट्रिक्ट (पैनल सं.11), जहाँ दुर्घटना हुई थी, में कार्य चल रहा था।

2.8.9 बाँसगढ़ा-सी सीम, बाँसगढ़ा सीम के 56 मी. नीचे स्थित था और इसे विकसित किया जा रहा था। ये कार्य-स्थल पैनल सं. 11 से 750 मी. से अधिक दूरी पर थे।

2.9 बाँसगढ़ा सीम का विवरण:-

2.9.1 बाँसगढ़ा सीम की मोटाई 4.95 मी. थी और यह तली के साथ- साथ विकसित था। यह दक्षिण 74°पश्चिम दिशा में लगभग 5 में 1 (लगभग 11.5) की दर से झुका हुआ था। इस सीम को विभिन्न इन्क्लाइन समूहों (17, 18, 25 व फैन ड्रीफ्ट) के माध्यम से विकसित किया गया था व कार्य-स्थल अन्तः सम्बद्ध थे।

सीम को 7 में 1 की दर पर आभासी ढाल के साथ- साथ क्रॉस-कट चला कर विकसित किया गया था। इन्क्लाइन सं.17 हॉलेज मार्ग था। 17 क्रॉस-कट डिस्ट्रिक्ट के कार्य-स्थल से टबों को खींचने के लिए सतह पर एक डाइरेक्ट हॉलर लगाया गया था।

2.9.2 20 मी. निचले प्रक्षेप (डाउन थ्रो) वाले भ्रंश (फॉल्ट) से आगे के कार्य-स्थलों तक 22 लेवल/मुख्य डीप से चलाये दो ड्रीफ्टों से पहुँचा गया था और बाद में केविंग विधि से पूर्णतया डिपीलर कर दिया गया था। वर्तमान में ड्रीफ्टों से केवल पर्मींग किया जा रहा है।

इन्क्लाइन सं.17 का पूर्वी क्षेत्र (पैनल सं.15 को छोड़ जिसकी डिपीलरिंग स्टोविंग में पिछड़ने के कारण बन्द कर दी गई थी) डिपीलर कर सील बंद कर दिया गया था। इन्क्लाइन सं. 17 के पूर्वी भाग में नीचे वाले पैनल केविंग द्वारा तथा ऊपर वाले पैनल स्टोविंग द्वारा निष्कर्षित किये गये थे।

17 क्रॉस-कट क्षेत्र, 8 क्रॉस-कट क्षेत्र व मुख्य इन्क्लाइन के कार्य-स्थल स्तम्भों (पीलर) पर खड़े थे। 17 क्रॉस-कट के कार्य -स्थल 20 मी. पात (थ्रो) वाले भ्रंश (फॉल्ट) के उपरी (उत्तरी तरफ) भाग में थे।

2.9.3 17 क्रॉस-कट में 26 लेवल तक के कार्य क्षेत्र को पूर्व में (1974-76) में विकसित किया गया था और 26 लेवल से नीचे 1994 में विकसित किया गया था।

2.10 पैनल सं. 11 का विवरण:-

पैनल सं. 11 में मुख्य इन्क्लाइन से 11 लेवल के नीचे का विकसित क्षेत्र और 17 क्रॉस-कट सेक्शन के क्षेत्र समाहित थे। 16 क्रॉस-कट व 17 क्रॉस-कट के बिच पैनल की डीप साईड सीमा 29 लेवल में थी तथा 14 क्रॉस-कट व 16 क्रॉस-कट के बिच यह 28 लेवल में थी। पैनल के उपरी तरफ की सीमा मुख्य इन्क्लाइन के 11 लेवल तक थी। सतह से आवरण 60 से 130 मी. के बीच था।

पैनल की आसन्न छत स्लेटी पत्थर (सेल) तदोपरान्त बलुआ-पत्थर (सैंड-स्टोन) थी। हाथीदारी सीमा का भ्रंश (फॉल्ट) FX- FX बाँसगढ़ा सीमा के 15 क्रॉस-कट के उपर अर्थात् पैनल सं. 11 के मध्य में था। 17 क्रॉस-कट के समानान्तर पैनल लगभग 100 मी. से 400 मी. था और मुख्य इन्क्लाइन के समानान्तर लगभग 80 मी. से 150 मी. था।

अध्याय - III

सांविधिक प्रावधान

3.1 खान अधिनियम, 1952 की धारा-18:

मालिकों, अभिकर्ताओं और प्रबन्धकों के कर्तव्य और उत्तरदायित्व:

- (1) प्रत्येक खान का मालिक और अभिकर्ता, इस अधिनियम और इसके अधीन बने विनियमों, नियमों, उप-नियमों और आदेशों के प्रावधानों के अनुपालन के लिए वितीय तथा अन्य प्रावधानों की व्यवस्था करने एवं यथा आवश्यक अन्य उपायों की व्यवस्था करने के लिए उत्तरदायी होगा।
- (2) धारा 58 के खंड (डी) (ई) और (पी) के अधीन बने नियमों से सम्बन्धित विषयों के सम्बन्ध में, इनका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व खान के मालिक, अभिकर्ता तथा किसी ऐसे व्यक्ति (प्रबंधक के अलावा), जिसे पूर्वोक्त प्रावधानों के अनुपालन के लिए मालिक या अभिकर्ता द्वारा नियुक्त किया जाए, का होगा।
- (3) यदि उपधारा (2) के अधीन दिए गए किसी अनुदेशों अथवा प्रबंधक द्वारा धारा 17 की उप-धारा (3) के अधीन, अन्यथा दिए गए अनुदेशों के कार्यान्वयन में, इस अधिनियम और इसके अधीन बने विनियमों, नियमों, उप-नियमों या आदेशों के प्रावधानों का उल्लंघन होता है, तो ऐसे अनुदेशों को देने वाला प्रत्येक व्यक्ति भी सम्बद्ध प्रावधान के उल्लंघन के लिए उत्तरदायी होगा।
- (4) उप-धाराओं (1), (2) और (3) के अधीन, हरेक खान के मालिक, अभिकर्ता और प्रबंधक, प्रत्येक का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह इस बात का ध्यान रखें कि खान से सम्बन्धित सभी कार्य इस अधिनियम और इसके अधीन बने विनियमों, नियमों, उप-नियमों और आदेशों के प्रावधानों के अनुसार किए जा रहे हैं।

(5) इस अधिनियम अथवा इसके अधीन बने विनियमों, नियमों, उप-नियमों अथवा आदेशों के किसी भी प्रावधानों का, किस व्यक्ति द्वारा, चाहे वह कोई भी हो, उल्लंघन करने की स्थिति में, सिवाय ऐसे व्यक्तियों के, जिनके लिए विशेषतः किसी कार्य या वस्तु को करना अथवा किसी व्यक्ति को कोई कार्य या वस्तु करने से रोकना अवश्य हो, कि स्थिति में, वह व्यक्ति जो उल्लंघन कर रहा है उसके अतिरिक्त, निम्नलिखित व्यक्तियों में से प्रत्येक को ऐसे उल्लंघन के लिए दोषी समझा जाएगा जब तक कि वह यह प्रमाणित नहीं कर देता कि उसने प्रावधानों के निश्चित अनुपालन के लिए उचित सचेतना बरती थी और ऐसे उल्लंघन को रोकने के लिए उचित उपाय किए थे:-

- (6) उल्लंघन किये गए प्रावधानों के सम्बन्ध में, अधिकारी या अधिकारियों को, जिन्हें पर्यवेक्षण कार्य करने के लिए नियुक्त किया गया था;
- (7) खान का प्रबंधक;
- (8) खान का मालिक और अभिकर्ता;
- (9) उप-धारा (2) के अधीन उत्तरदायित्व का निर्वहन करने हेतु नियुक्त किये गये व्यक्ति, यदि कोई हो।

परन्तु उपरोक्त व्यक्तियों में से किसी के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही नहीं की जाएगी यदि पूछताछ और जाँच में यह पाया जाए कि वह व्यक्ति प्रथम दृष्टया जिम्मेदार नहीं है।

(ii) इस धारा के अधीन खान के मालिक या अभिकर्ता के विरुद्ध लाए गए किसी मुकदमे में यही बचाव नहीं होगा कि इस अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार प्रबंधक तथा अन्य पदाधिकारी नियुक्त किए गए हैं अथवा उप-धारा (2) के अधीन, उत्तरदायित्व का पालन करने के लिए, एक व्यक्ति को नियुक्त किया गया है।

3.2 कोयला खान विनियम, 1957 का विनियम 100(1):

क्षेत्रीय निरीक्षक की लिखित अनुमति और उसमें विनिर्दिष्ट शर्तों के अनुसार, कार्य को छोड़कर किसी भी पीलर के निष्कर्षण (Extraction) का प्रारंभ, संचालन या कार्यान्वयन नहीं किया जाएगा। इस उप-विनियम के अधीन, अनुमति के लिए दिए जाने वाले आवेदन के साथ, उस क्षेत्र के अद्यतन मापचित्र (Plan) की दो प्रतियाँ प्रस्तुत की जाएगी, जहाँ पीलरों के न्यूनीकरण अथवा निष्कर्षण का प्रस्ताव है, जिसमें पीलरों के निष्कर्षण या न्यूनीकरण का विस्तार, न्यूनीकरण या निष्कर्षण की विधि, सीम की मोटाई और गहराई, छत की प्रकृति तथा डीप की दिशा एवं दर को दर्शाया जाएगा।

3.3 कोयला खान विनियम, 1957 का विनियम 127:

भूमिगत जलप्लावन से खतरा-

- (1) प्रत्येक खान में, जल, अन्य तरल पदार्थ अथवा किसी ऐसे पदार्थ जिसके गीला होने पर बहने की संभावना हो, उसी खान के कार्य-स्थल से अथवा साथ की खान से, अर्न्तवाह(Inrush) को रोकने के लिए तथा जलराशी या अन्य तरल पदार्थ की जाँच अथवा निकासी के लिए बोर छिद्र करते समय होने वाली दुर्घटनाओं से बचाव के लिए उचित उपाय किए जाने चाहिए।

(2) ऐसी जगह कार्य किया जा रहा हो जो-

- (क) (i) कोई सीम या सेक्शन किसी दूसरी सीम या सेक्शन के नीचे हो, अथवा
- (ii) किसी सीम या संस्तर का ऐसा भाग, जो कि निचली सीम या संस्तर-क्रम में किसी अन्य स्थान से निचले तल पर हो; अथवा
- (iii) किसी सीम में कोई ऐसा स्थान, जो किसी उपरी सीम से गुजरने वाले फॉल्ट तक पहुँचता हो, जिसमें जल, अन्य तरल पदार्थ अथवा गीला होने पर बहने वाला कोई अन्य पदार्थ संचित हो, अथवा
- (ख) किसी जलीय संस्तर में हो,

उपर्युक्त विशिष्टताओं के सम्बन्ध में, सभी उपयोगी सूचना, जिसमें उनकी स्थिति, विस्तार एवं गहराई शामिल हो, अर्जित व अभिलिखित की जाएगी तथा जल या अन्य तरल पदार्थ अथवा ऐसी सामग्री जो गीली होने पर बहती है, के अन्तर्वाह से बचाव के लिए एक कार्य योजना तैयार की जाएगी और उस पर क्रियान्वयन होगा।

- (3) उप-विनियम (1) और उप-विनियम (2) की आवश्यकताओं पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, किसी कार्य-स्थल का, जो किसी अन्य कार्य-स्थल के 60 मीटर के दायरे में पहुँच गया है (ऐसा कार्य-स्थल नहीं जिसका भैतिक परीक्षण किया गया हो और जिसे जल या अन्य तरल पदार्थ अथवा कोई सामग्री जो गीली होने पर बह सकती हो के संचय से मुक्त पाया गया हो) और चाहे वह उसी खान में हो अथवा किसी पड़ोसी खान में, विस्तार नहीं किया जा सकेगा बशर्ते उसके लिए क्षेत्रीय निरीक्षक की पूर्व लिखित अनुमति न हो और वह ऐसी शर्तों के अधीन होगा, जिनका उसमें विशेष रूप से उल्लेख किया गया हो।

व्याख्या: - इस उप-विनियम के उद्देश्य के लिए, उपरोक्त कार्य-स्थलों के बीच की दूरी का, तात्पर्य एक ही सीम के अथवा कोई दो सीमों या सेक्शनों के कार्य-स्थलों की, जैसी स्थिति हो, किसी भी दिशा में समतल, लम्बवत् या तिरछी मापी गई सबसे छोटी दूरी, समझी जाए।

- (4) (क) उप-विनियम (3) में निर्दिष्ट किसी कार्य-स्थल के विस्तार की अनुमति के लिए भेजा गया प्रत्येक आवेदन, मापचित्र और संस्तर-क्रम की दो प्रतियों के साथ होना चाहिए, जिनमें निम्न बातें दर्शायी गई हो:

- (i) जहाँ कार्य-स्थल का विस्तार हो रहा हो, उसके संदर्भ में सभी अप्रचलित या परित्यक्त कार्य-स्थलों की रूपरेखा और ऐसे अप्रचलित अथवा परित्यक्त कार्य-स्थलों की सतह से गहराई सहित स्थिति;
- (ii) जिसके लिए अनुमति माँगी गई है उन प्रस्तावित कार्य-स्थलों की रूपरेखा, अभिन्यास और कार्यविधि;
- (iii) कार्य-स्थल, जिनका उल्लेख उप-विनियम के खंड (I) अथवा (II) में किया गया है, से सम्बन्धित फॉल्ट, डाइक व अन्य भूगर्भीय गड़बड़ियाँ तथा
- (iv) कोई अन्य सूचना जो प्रबंधन के पास उपलब्ध हो और कोई अन्य सूचना या विवरण जो मुख्य निरीक्षक द्वारा अपेक्षित हो।

- (ख) जब उप-विनियम (3) अथवा उप-विनियम (5) में उल्लिखित किसी कार्य-स्थल के विस्तार की अनुमति प्रदान की जाती है तो इसका विस्तार दृढ़तापूर्वक मानचित्र के

अनुसार अनुमोदित विधि से तथा उसमें उल्लेखित शर्तों के अनुसार किया जाना चाहिए और विस्तार में कोई परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए जब तक की ऐसे परिवर्तन के लिए मुख्य निरीक्षक द्वारा दुबारा अनुमति न दी गई हो।

- (5) जब किसी सीम में किसी कार्य-स्थल पर असामान्य जल रिसाव दिखाई दे या होने की आशंका अथवा संदेह हो तो कार्य-स्थल पर काम तुरंत बंद कर देना चाहिए और मुख्य निरीक्षक एवं क्षेत्रीय निरीक्षक को ऐसे रिसाव के बारे में तत्काल सूचित करना चाहिए। ऐसे कार्य-स्थल का आगे विस्तार मुख्य निरीक्षक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जाए और ऐसी शर्तों के अधीन किया जाए जो लिखित अनुमति में निर्दिष्ट हों।
- (6) (क) उप-विनियम (3) या उप-विनियम (5) में उल्लेखित किसी कार्य-स्थल की ऊँचाई या चौड़ाई 2.4 मीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए और कार्यरत आयतन पर कम से कम 5 मीटर के अन्तराल में, केन्द्र के पास कम से कम एक अग्रवर्ती बोर छिद्र होना चाहिए और दोनों बाजू में पर्याप्त तथा, जहाँ आवश्यक हो वहाँ, कार्य-स्थल के ऊपर और नीचे बोर-छिद्र कायम रहना चाहिए।
ऐसे सभी बोर-छिद्र एक-दूसरे के पर्याप्त रूप से समीप करने चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अप्रत्याशित रूप से अग्रवर्ती आयतन किसी जल या तरल पदार्थ अथवा गीली होन पर बह सकने वाली कोई सामग्रीयुक्त कार्य-स्थल में घुँस न जाए एवं आयतन से पर्याप्त दूरी जो की किसी सूरत में तीन मीटर से कम न होगी, पर आगे कायम रखे जायेंगे। यह एहतियात इस कार्य के लिए विशेष रूप से प्राधिकृत, प्रबंधक या ओवरमैन सक्षमता प्रमाण-पत्र धारी, किसी अधिकारी की प्रत्यक्ष देख-रेख में क्रियान्वित किए जाएंगे।
- (ख) ऐसे कार्य-स्थलों की वास्तविक ऊँचाई एवं चौड़ाई, किए गए बोर-छिद्रों की संख्या, प्रत्येक बोर-छिद्र की लम्बाई, किए गए प्रत्येक बोर-छिद्र का स्थान व दिशा बताने वाले रिकार्ड का रख-रखाव खंड (क) में संदर्भित अधिकारी द्वारा इस उद्देश्य के लिए बनाई गई एक सजिल्द पृष्ठांकित बही में रखा जाएगा और उसमें की गई प्रविष्टियों को ऐसे सक्षम अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित और दिनांकित किया जाएगा और प्रबंधक द्वारा प्रतिदिन प्रतिहस्ताक्षरित किया जाएगा। ऐसे कार्य-स्थल के उपरोक्त विवरणों को दर्शाने वाला एक मापचित्र और संस्तर-क्रम भी तैयार कर, उसका रख-रखाव किया जाएगा तथा प्रत्येक पखवाड़े में उसे कम से कम एक बार अद्यतन किया जाएगा।
- (7) जब तक उप-विनियम (8) के अधीन मुख्य निरीक्षक द्वारा विशिष्ट रियायत प्रदान न की जाए, उप-विनियम (3) अथवा उप-विनियम (5) में संदर्भित किसी कार्य-स्थल का विस्तार करते समय, चाहे ऐसे कार्य-स्थल के विस्तार की अनुमति प्रदान करते समय उप-विनियम (6) के किसी एक या सभी प्रावधानों के अनुपालन की आवश्यकता हो अथवा नहीं, उप-विनियम (6) के सभी प्रावधानों का दृढ़ता से पालन किया जाएगा।
- (8) यदि मुख्य निरीक्षक इस बात से संतुष्ट हो कि किसी खान या उसके किसी भाग की परिस्थितियाँ उप-विनियम (6) के किसी या सभी प्रावधानों के अनुपालन को अनावश्यक अथवा अव्यावहारिक बनाते हैं, तो वह एक लिखित आदेश द्वारा तथा उसमें विनिर्दिष्ट ऐसी शर्तों के अधीन, उप-विनियम (6) में उल्लेखित सभी या किसी शर्तों व आवश्यकताओं में छूट दे सकते हैं, परिवर्तन कर सकते हैं या हटा सकते हैं

और अगर उनकी राय में किसी खान या उसके किसी भाग की परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि वहाँ अतिरिक्त एहतियात लेने की आवश्यकता है तो वह एक लिखित आदेश दे सकते हैं कि उप-विनियम (6) में विनिर्दिष्ट उपायों के अलावा, ऐसे अतिरिक्त एहतियाती कदम उठाये जाएंगे।

अध्याय- IV

दुर्घटना

4.1 दुर्घटना का घटित होना:

4.1.1 इस अवस्था में, अब यह संगत समझा जाता है कि दुर्घटना को अंजाम देने वाली स्थितियों की सिलसिलेवार समीक्षा की जाए। ऐसा लगता है कि दिनांक 14 जून 2005 को प्रथम पाली (प्रातः 8 बजे से शाम 4 बजे तक) से खान में सामान्य रूप से काम किया जा रहा था। हमेशा की तरह, काम बाद की पालियों में भी जारी रहा और दिनांक 14.06.2005 को तीसरी पाली भी रात्रि 12.00 बजे सामान्य रूप से शुरू हुई। उस पाली में बाँसगढा सीम के कार्य-क्षेत्र एक ओवरमैन, श्री शंभुनाथ भुईया के प्रभार में था। तीसरी पाली के दौरान कोई भी प्रभारी अवर प्रबंधक अथवा सहायक प्रबंधक नहीं था। श्री भुईया ने पैनल संख्या 11 में 15 लोडरों सहित कुल 45 व्यक्तियों को काम पर लगाया था। उस दिन पैनल के लिए प्रथम पंक्ति के प्रभारी पर्यवेक्षक श्री बुधन महतो, माइनिंग सिरदार थे। कोयला तैयार करने का कार्य श्री जितेन्द्र प्रसाद, शाट-फायरर द्वारा किया गया था। तीन लोडरों को समय-दर पर कार्य में लगाया गया था तथा बाकी 12 लोडरों को मैनुअली अर्थात् बेलचों और टोकरियों की मदद से टर्बो में कोयला भरने के काम पर लगाया गया था। इन लोडरों को दो दलों में बाँटा गया था। उनमें से 6 लोडरों के एक दल को नार्थ फेस 14वें क्रॉस-कट के 25वें लेवल ऊत्तरी आयतन पर लगाया गया था तथा अन्य 6 लोडरों का दल 15वें क्रॉस-कट के 27वें लेवल ऊत्तरी स्लाइस पर लगाया गया था। 27वें लेवल स्लाइस के आयतन पर पहली पाली से ही कोयला उपलब्ध था, तथापि 14वें क्रॉस-कट के 25वें लेवल ऊत्तरी आयतन पर कोयला के लिए पाली के दौरान श्री जितेन्द्र प्रसाद, शाट-फायरर, द्वारा दो बार विस्फोट किया गया।

4.1.2 दिनांक 15.06.2005 को लगभग 06.30 बजे श्री प्रसाद, शाट-फायरर, यह सुनिश्चित करने के बाद कि आयतन पर भरने के लिए पर्याप्त मात्रा में कोयला उपलब्ध है, डिस्ट्रीक्ट छोड़कर चले गए। सूचना के अनुसार, उस समय दोनों आयतनों से कोयला भरने का काम जारी था। करीब 07.15 बजे श्री शंभुनाथ भुईया, ओवरमैन, से टेलिफोन पर बातचीत करने के बाद दो पम्प प्रचालक, श्री मो. हनीफ और श्री नगेन्द्र सिंह खान से चले गए। टेलिफोन 17वें क्रॉस-कट व 27वें लेवल के जंक्शन पर स्थित था। अतः निष्कर्षतः उस समय ओवरमैन डिस्ट्रीक्ट में टेलिफोन के समीप ही था।

4.1.3 लगभग 07.30 बजे, जब श्री मो. हनीफ 8वें क्रॉस-कट और मेन डीप के जंक्शन पर पहुँचे तो उन्होंने मेन डीप से जोर की आवाज सुनी तथा हवा का तेज झोंका और धूल के बादल निकलते देखा। हवा के झोंके ने उन्हें आगे की ओर धकेला। प्रसंगानुसार यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि वह घायल नहीं हुआ था। वह सतह पर पहुँचा और उसने ड्यूटी पर तैनात उपस्थिति लिपिक को घटना के बारे में सूचित किया। यह सूचना श्री ए.एल. रजक, सुरक्षा अधिकारी को भेजी गई जिन्होंने प्रबंधक, अभिकर्ता और अन्य अधिकारियों को सूचित किया।

4.1.4 लगभग उसी समय अर्थात् 07.30 बजे श्री नरेश मोची, ड्रेसर सतह पर उपस्थित था। उसने इन्क्लाइन के मुहाने पर हवा की विध्वंसक गति देखी और इस असामान्य स्थिति

का पता लगाने के लिए, अपने कुछ अन्य सह-कर्मियों के साथ खान में जाने का जोखिम उठाया। 17वें क्रॉस-कट व 21वें लेवल के जंक्शन पर उन्हें भँवरी युक्त पानी दिखाई दिया। वह करीब 08.10 बजे तेजी से वापस सतह पर आए तथा श्री संजय कुमार, अवर प्रबंधक, को सूचित किया जो कि उस समय तक इनक्लाइन के मुहाने पर मौजूद थे।

4.1.5 श्री उमेश शर्मा, अभिकर्ता, श्री एन. के. मार्तण्ड, प्रबंधक, श्री संजय कुमार, अवर प्रबंधक, श्री जगदीश शर्मा, ओवरमैन और अन्य सभी, जो उसके बाद इनक्लाइन के मुहाने पर इकट्ठे हो गए थे, करीब 08.20 बजे खान में उतरे। श्री शर्मा कुछ अन्य लोगों के साथ 8वें क्रॉस-कट पर गए तथा श्री मार्तण्ड व अन्य लोग 17वें क्रॉस-कट की तरफ गए। 8वें क्रॉस-कट में 20वें लेवल तक तथा 17वें क्रॉस-कट में 21वें लेवल जंक्शन तक सभी गैलरियाँ पानी से भरी हुई पाई गई थी।

4.1.6 कोयला भरने के काम पर लगे (12) लोडर, ओवरमैन, श्री शंभुनाथ भुईया और माइनिंग सिरदार श्री बुधन महतो खान में फँस चुके थे और बाहर नहीं निकल सके।

4.2 बचाव और बरामदगी:

4.2.1 खान के अभिकर्ता, श्री उमेश शर्मा, ने दुर्घटना के बारे में क्षेत्र के महाप्रबंधक को सूचित किया, जिन्होंने आगे खान सुरक्षा महानिदेशालय, राँची कार्यालय, निदेशक तकनीकी (प्रचालन) सी. सी. एल. और रामगढ़ स्थित बचाव स्टेशन को सूचित किया। तब निदेशक तकनीकी (प्रचालन) ने अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को घटना की वस्तुस्थिति से अवगत कराया। रामगढ़ बचाव केन्द्र से बचाव दल लगभग 11.00 बजे खान पर पहुँचे और उन्होंने जीवित बचे हुए लोगों को खोजने का प्रयास किया, परन्तु किसी का पता नहीं लगा।

4.2.2 खान के नामित मालिक/तकनीकी निदेशक श्री एम. एम. सिंह द्वारा इनक्लाइन संख्या-17 के समीप एक नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया। श्री बी. के. सिन्हा, तकनीकी निदेशक (पी. और पी.) तथा तीन मुख्य महा प्रबंधक यथा श्री आर. के. दूबे, श्री आर. बी. सिंह व श्री नवाब सिंह ने उनकी सहायता की। मेसर्स सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड के विभिन्न क्षेत्रों के महा प्रबंधकों ने अपने परियोजना अधिकारियों, अभियंताओं और कर्मियों को प्रत्येक पाली में जल निकासी सम्बन्धी विभिन्न कार्यों में लगाया।

4.2.3 बरामदगी कार्यों में खान सुरक्षा महानिदेशालय के अधिकारी सक्रिय रूप से शामिल थे। दुर्घटना की सूचना मिलने के तुरंत बाद, राँची, रामगढ़ और कोडरमा में पदस्थापित खान सुरक्षा महानिदेशालय के सभी अधिकारी खान पहुँच गए और मृतकों के शवों को निकाले जाने तक वहीं बने रहे।

4.2.4 श्री भास्कर भट्टाचार्य, महानिदेशक ने खान सुरक्षा महानिदेशालय, मुख्यालय के अधिकारियों के साथ उसी दिन अर्थात् दिनांक 15.06.2005 की रात्रि लगभग 09.00 बजे खान का दौरा किया और भूमिगत कार्य-स्थलों का निरीक्षण किया। उन्होंने खान सुरक्षा महानिदेशालय तथा प्रबंधन के अधिकारियों के साथ बैठक की। श्री भट्टाचार्य, ने दिनांक 18.06.2005 को पुनः भूमिगत कार्य-स्थलों का निरीक्षण किया जब भारतीय

नौसेना के गोताखोर खान में आए और चूँकि गोताखोर खनन परिस्थितियों से भलीभाँति परिचित नहीं थे अतः उन्होंने तलाशी के लिए उनको दिशा निर्देश दिया। खोजबीन के दौरान वे वहीं बने रहे। श्री भट्टाचारजी ने गोफ किनारों के प्रकट होने के बाद दिनांक 04.07.2005 को पुनः खान का निरीक्षण किया।

- 4.2.5 बरामदगी के लिए खान से जल निकासी महत्वपूर्ण हो गया। दिनांक 15 जून 2005 को पहला पम्प संस्थापित किया गया और करीब 4.00 बजे अपराह्न से जल निकासी का कार्य शुरू हुआ। तत्पश्चात् अतिरिक्त पम्पों की संस्थापना द्वारा पम्पिंग क्षमता का विस्तार किया गया। पम्प मेसर्स सी. सी.एल. के विभिन्न क्षेत्रों और मेसर्स कोल इंडिया लिमिटेड की सहायक संस्थाओं से भी प्राप्त किए गए थे।

पम्पों को चलाते और संस्थापित करते समय कुछ समस्याओं का सामना भी करना पड़ा। शुरुआत में वहाँ केवल दो ही (17 क्रॉस-कट और 8 क्रॉस-कट) गैलरियाँ थी, जहाँ पम्पों को लगाया गया। जब अतिरिक्त पम्पों को लगाने के लिए पर्याप्त जगह नहीं मिली तो उन्हें साथ की डिप गैलरियों में संस्थापित किया गया, जहाँ कोई हालेज मार्ग नहीं था।

सभी पम्पों की डिलीवरी पाइपलाइन के लिए केवल एक ही रास्ता (इन्क्लाइन संख्या 18) था। अतः सतह से दो बोर छिद्र किए गए और डिलीवरी पाइप लाइन को इन बोर-छिद्रों के माध्यम से सतह पर लाया गया।

पानी द्वारा गोफ क्षेत्र से लाए गए बड़े पत्थर/कचरे गैलरियों में जमा थे। इससे जलस्तर को और कम करने के लिए पम्पों को स्थानान्तरित करने में कुछ कठिनाई हुई।

- 4.2.6 14वें क्रॉस-कट और 13वें क्रॉस-कट के बीच 25वें लेवल में सम्बन्ध होने के कारण 8वें क्रॉस-कट डिस्ट्रीक्ट और पैनल संख्या 11 डिपीलरिंग डिस्ट्रीक्ट में वहाँ तक जलस्तर समान था। दिनांक 27.06.2005 को जब जलस्तर 25वें लेवल/14वें क्रॉस-कट के नीचे पहुँचा तब जलराशियाँ पृथक् हो गई। बाद में, 8वें क्रॉस-कट डिस्ट्रीक्ट में जल निकासी का कार्य दिनांक 05.07.2005 तक जारी रहा और जल का स्तर 225 मी. आर. एल. पर बनाए रखा गया था। 17वें क्रॉस-कट डिस्ट्रीक्ट में, एक 1000 गै. प्र. मि. का पम्प और एक 500 गै. प्र. मि. के पम्प द्वारा जलस्तर को 17वें क्रॉस-कट के 28वें लेवल तक (211 मी. आर. एल.) नीचे लाया गया।
- 4.2.7 भारतीय नौसेना के गोताखोरों का एक दल दिनांक 18.06.2005 को फँसे हुए जीवित लोगों को ढूँढने पहुँचा। यह दल पूरे बचाव कार्यों के दौरान, अर्थात् जब तक आखिरी शव नहीं मिल गया तब-तक वहाँ उपस्थित था। मेसर्स सिंगारेनी कोलियरी कम्पनी लिमिटेड से भी एक बचाव दल दिनांक 27.06.2005 को वहाँ पहुँचा और उसने बचाव कार्यों में सहयोग दिया।
- 4.2.8 सभी बचाव और बरामदगी कार्य बचाव दल की उपस्थिति में किए गए। आरम्भ में बचाव आधार मेन हालेज इन्क्लाइन के 15वें लेवल पर स्थापित किया गया था और बाद में उसे 17वें क्रॉस-कट के 23वें लेवल पर स्थानान्तरित कर दिया गया। शवों को बचाव दलों ने

भारतीय नौसेना के गोताखोरों/ सिंगरेनी बचाव दल और स्थानीय कर्मियों की मदद से बरामद किया।

4.2.9 दिनांक 19 जून 2005 को करीब 16.40 बजे पहला शव बरामद किया गया। तत्पश्चात्, अगले कुछ दिनों में, खान से सभी 14 मृतकों के शव बरामद कर लिए गए। आखिरी शव दिनांक 29 जून 2005 को करीब 15.30 बजे निकाला गया। बहरहाल, जलस्तर कम करने का कार्य जारी रहा ताकि इतनी बर्बादी करने वाले जल के प्रवेश के मार्ग को ढूँढा जा सके।

4.2.10 जलनिकासी का कार्य, दिनांक 10 जुलाई 2005, जब तक 28वें लेवल/17वें क्रॉस-कट का अधिदर्शन नहीं हुआ, तब तक जारी रहा। सूचना के अनुसार, श्री एन.राव, खान सुरक्षा निदेशक, खान सुरक्षा महानिदेशालय, राँची क्षेत्र और श्री बी.डी.यादव, क्षेत्र के महाप्रबंधक ने उस दिन पैनल संख्या 11 का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने 17वें क्रॉस-कट और 10वें क्रॉस-कट तथा 28वें लेवल और 29वें लेवल के बीच पीलरों पर अपघर्षण के लक्षण (क्रसिंग सिम्प्टम्स) देखे। 16वें क्रॉस-कट / 27वें लेवल जंक्शन के पास कुछ अस्तव्यस्ताएँ भी पाई गईं। असुरक्षित परिस्थितियों के कारण उन्होंने जलस्तर 17वें क्रॉस-कट / 28वें लेवल से और नीचे नहीं करने का निर्णय लिया।

4.2.11 डिस्ट्रिक्ट में 26वें लेवल के नीचे जलनिकासी के दौरान कार्बन मोनोऑक्साइड गैस (CO) पाई गई। प्रारंभ में कार्बन मोनोऑक्साइड गैस अल्प मात्रा में पाई गई और बाद में जब जलस्तर 27वें लेवल के नीचे किया गया और गोफ क्षेत्र नजर आने लगा तो यह बढ़ गई। बाद में, जलस्तर को 17वें क्रॉस-कट के 26वें लेवल तक बढ़ने देने पर कार्बन मोनोऑक्साइड कम हो गई। जब तक 25वाँ लेवल नहीं खुला था तब तक डिस्ट्रिक्ट की हवा वापस जाने का कोई रास्ता नहीं था। जल निकासी में प्रगति के साथ संवातन परिपथ स्थापित किया गया।

4.3 क्षतिपूर्ति:

मृतकों के नामितों को कम्पनी नियमावली के अनुसार तत्काल मुआवजा दे दिया गया है। मे. सी.सी. एल. ने कोर्ट को बताया कि दिए गए मुआवजे के अतिरिक्त प्रत्येक मृतक के एक आश्रित को रोजगार दिया गया है। क्षतिपूर्ति आयुक्त द्वारा देय मुआवजा जारी कर दिया गया है। कोयला मंत्रालय, भारत सरकार, ने प्रत्येक परिवार के लिए 2.0 लाख रुपये की एक अनुग्रह राशि मंजूर की है। "समूह वैयक्तिक दुर्घटना योजना" (ग्रुप पर्सनल एक्सीडेंट स्कीम) की विशेष योजना के अधीन ओरिएंटल इन्सोरेन्स कम्पनी द्वारा प्रत्येक परिवार को 5.0 लाख रुपये प्रदान किए गए हैं, आदि। मृतकों के परिवारों को दी गई राशि का विवरण परिशिष्ट- X में दिया गया है।

अध्याय - V निरीक्षण एवं अवलोकन

5.0 इस समय दुर्घटना के उपरान्त विविध अधिकारियों द्वारा उनके निरीक्षण के दौरान किये गये अवलोकनों का विस्तृत विवरण देना युक्तिसंगत होगा। सेंट्रल सौंड़ा कोलियरी में दुर्घटना के पश्चात् खा. सु. म. नि., सी.सी.एल., श्रमिक संघों के कई व्यक्तियों तथा अन्य व्यक्तियों ने खान का निरीक्षण किया। प्रथम औपचारिक निरीक्षण दिनांक 15 जून 2005 को करीब

18.00 बजे किया गया। जाँच अदालत के अध्यक्ष ने सर्वप्रथम दिनांक 19.11.2005 को श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, असेसर तथा खा सु म नि, सी.सी.एल, श्रमिक संघ एवं प्रेस के लोगों के साथ खान का निरीक्षण किया। तत्पश्चात श्री रवीन्द्र शर्मा, असेसर ने दिनांक 16 दिसंबर 2005 को खान का निरीक्षण किया।

5.1 सामान्य अवलोकन:

भूमिगत कार्य-स्थल का पहला निरीक्षण दिनांक 15.6.05 को सांय 6 बजे खा सु म नि के अधिकारियों द्वारा किया गया। उनके अवलोकन के अनुसार, पैनल सं. 11 में 17वें क्रॉस-कट डिस्ट्रिक्ट के 21वें तल (लेवल) तक तथा 8. क्रॉस-कट डिस्ट्रिक्ट में भी पानी भरा हुआ था। जैसे-जैसे जल निकासी का काम बढ़ता गया वैसे-वैसे क्षेत्र का नियमित निरीक्षण किया गया। जल जमाव से मुक्त क्षेत्रों में गाद, बल्लियां तथा शिलाखण्ड इत्यादि पाये गये। करीब 6.2 मी. X 5.4 मी. X 2.0 मी. तक के आकार वाले शिलाखण्ड जल दबाव के कारण अपने मूल स्थान से विस्थापित पाये गये। टब, रेल इत्यादि भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गये थे, जिनकी पहचान कर पाना मुश्किल था। विस्तृत विवरण निम्नलिखित है:-

- (i) अधिकांश डिप राइज गैलरियों में 28वें लेवल के ऊपर गाद तथा शिलाखण्ड आदि का जमाव पाया गया। लेवल गैलरियों में यह जमाव डिप साइड की ओर अर्थात् पश्चिम की ओर और अधिकांश डिप-राइज गैलरियों में यह जमाव दक्षिण की ओर पाया गया।
- (ii) कुछ गैलरियों, मुख्यतया दक्षिणी तरफ की, में 23वें लेवल के नीचे लाल बालू का जमाव पाया गया।
- (iii) कई जगहों पर लकड़ी की सिल्लियों, खूँटे तथा विखण्डित स्टील चॉक अपने मूल स्थान से विस्थापित तथा अम्बारों में पाये गये।
- (iv) 17वें क्रॉस-कट के 28वें उत्तरी लेवल में बालू का ढेर पाया गया।
- (v) पैनल में रेल की पटरियाँ मुड़ी हुयी पायी गयीं।
- (vi) 16वें क्रॉस-कट के 27वें उत्तरी लेवल स्लाइस जंक्शन पर पाँच खूँटे अपनी जगह पर सही सलामत पाये गये।

5.1.1 निम्नलिखित स्थानों पर कोयले, शेल तथा बलुआ पत्थर के बड़े-बड़े शिलाखण्ड पाये गये:-

- (i) 17वें क्रॉस-कट तथा 25वें दक्षिणी लेवल के जंक्शन पर करीब 3.2मी. X 2.9 मी. X 1.6मी. का कोयला/स्लेटी पत्थर का एक बड़ा शिलाखंड पाया गया;
- (ii) 15वें क्रॉस-कट तथा 25वें लेवल के जंक्शन पर करीब 1.0मी. X 1.0मी. X 0.5मी. का एक शिलाखंड पाया गया;
- (iii) 25वें लेवल के नीचे 14वें क्रॉस-कट में करीब 1.5मी. X 0.6मी. X 0.5मी. का एक शिलाखंड(बोल्डर) पाया गया;
- (iv) 26वें लेवल के नीचे 15वें क्रॉस-कट में 3.0मी. X 2.0मी. X 1.0मी. का एक शिलाखंड पाया गया;
- (v) दक्षिणी 25वें लेवल के नीचे 17वें क्रॉस-कट में करीब 2.4मी X 0.9मी. X 0.8मी. का सफेद-बलुआ-पत्थर शिलाखंड पाया गया;
- (vi) उत्तरी 25वें लेवल के नीचे 17वें क्रॉस-कट में करीब 2.1मी. X 1.2मी. X 0.6मी. का एक बलुआ-पत्थर शिलाखंड पाया गया;

- (vii) 15 क्रॉस-कट व 16 क्रॉस-कट तथा 26वें लेवल एवं 27वें लेवल के बीच स्थित पिलर में चले एक डीप-राइज गैलरी में करीब 3मी. X 1.5मी. X 1मी. माप का एक बलुआ-पत्थर शिलाखंड पाया गया;
- (viii) दक्षिणी 27वें लेवल तथा 16 क्रॉस-कट के जंक्शन पर करीब 6.2मी. X 5.4मी. X 2.0मी. का बलुआ-पत्थर शिलाखंड पाया गया;
- (ix) 16वें क्रॉस-कट के 27वें लेवल दक्षिण में करीब 4.5मी. X 4.5मी. X 2.5मी. का एक बड़ा बलुआ-पत्थर शिलाखंड पाया गया;
- (x) 17वें क्रॉस-कट में दक्षिणी 27वें लेवल के नीचे करीब 3.5मी. X 2.0मी. X 1.0मी. का एक शिलाखंड पाया गया और
- (xi) 17वें क्रॉस-कट के दक्षिणी 27वें लेवल में करीब 1.2मी. X 1.0मी. X 1.2मी. का एक शिलाखंड पाया गया।

5.1.2 निम्नलिखित स्थानों पर कोयले के टब पाये गये:-

- (i) 14वें क्रॉस-कट में 26वें लेवल के नीचे कोयले से भरे तीन टब दबी हुयी हालत में पाये गये;
- (ii) 15वें क्रॉस-कट के 25वें लेवल के जंक्शन पर एक भरा हुआ टब पाया गया;
- (iii) दक्षिणी 26वें लेवल व क्रॉस-कट के जंक्शन की गोलाई पर तीन कोयले के टब पाये गये। 17वें क्रॉस-कट के दक्षिणी 26वें लेवल में और पाँच कोयले के टब पाये गये और
- (iv) 17वें क्रॉस-कट के दक्षिणी 27वें लेवल में सात कोयला के टब पाये गये।

5.2 पैनल सीमा तथा गोफ-किनारों की तुलना में अवलोकन:

मापचित्र सं. 246 में दर्शाये गये पैनल, जिसके लिये खा सु म नि द्वारा दिनांक 28.11.2003 के पत्र सं. आर आर/10397/अनुमति100 (1)/03/2930 के तहत अनुमति प्रदान की गयी थी, की सीमा के बाहर निष्पादित किये गये निम्नलिखित कार्य-स्थल पाये गये:

- (i) 14वें क्रॉस-कट से 25वें लेवल में उत्तर की ओर एक विभजक गैलरी, भ्रंश (फॉल्ट) एफ एक्स-एफ एक्स की ओर चलायी गयी थी। (यह दुर्घटना के समय के कार्य स्थलों में से एक था)।
- (ii) 14वें क्रॉस-कट से 26 लेवल उत्तर, भ्रंश एफ एक्स-एक्स की ओर, भी पहले ही चलाया जा चुका था। यह भ्रंश-तल 14वें क्रॉस-कट के उत्तरी 25 लेवल जो की 8 क्रॉस-कट सेक्शन को जोड़ता था के साथ-साथ भी अनावृत था। उक्त स्थल पर भ्रंश का पात (थो) करीब 6.8 मी. था। इस संयोजन को डिपीलरिंग अनुमति के लिये आवेदित मापचित्र में नहीं दिखाया गया था।
- (iii) भ्रंश (फाल्ट) एफ एक्स-एफ एक्स के नजदीक उत्तरी 26वें लेवल से, 14वें क्रॉस-कट के समानान्तर, एक डीप गैलरी चलाई गई थी।
- (iv) 26वें लेवल से भ्रंश तल के अनुरेख निकाली गयी डीप-राइज गैलरी को जोड़ने के लिए 14वें क्रॉस-कट के उत्तरी 26वें लेवल से एक विभजक गैलरी चलाई गयी थी।

उत्तरी 27 लेवल के 14वें क्रॉस-कट डीप के भ्रंश तल पर गोफ किनारे चाल धँसा देखा गया था जो कि 16 क्रॉस-कट के 28 लेवल जंक्शन तक विस्तारित था। चाल में टूट की यह रेखा उत्तरी भ्रंश तल से दक्षिण-पश्चिम दिशा में विकर्णतः विस्तारित पाई गई थी। 17 क्रॉस-कट में 28 लेवल के नीचे पानी रहने के कारण टूट-रेखा का और अधिक विस्तार नहीं देखा जा सका। टूट-रेखा के साथ-साथ गोफ धँसी चाल से पूर्णरूपेण भरा पड़ा था।

अध्याय - VI

अदालत के समक्ष विचार-वस्तु व साक्ष्य

6.1 जल का स्रोत एवं मात्रा:

बांसगढ़ा सीम के 11 नंबर पैनल में दिनांक 15.6.05 को करीब 7.30 बजे पूर्वाह्न छत के गिरने तथा उक्त पैनल के कार्य-स्थल में बड़े पैमाने पर जल के अन्तर्वाह के संबंध में कोई विवाद नहीं है। विवाद वास्तव में जल के स्रोत पर है।

जल का स्रोत:

भारत सरकार, कोयला मंत्रालय द्वारा गठित उच्च अधिकार प्राप्त समिति, श्रमिक संघों के प्रतिनिधियों तथा खान सुरक्षा महानिदेशालय का विचार है कि छत गिरने से उपरिशायी हाथीदारी सीम का पानी बांसगढ़ा सीम में प्रवेश कर गया। कोयला खान अधिकारी संघ तथा खान प्रबंधन का विचार है कि छत गिरने के समय बांसगढ़ा सीम के पैनल सं. 11 के ऊपर हाथीदारी सीम में पानी नहीं था और यह पानी बांसगढ़ा सीम में हाथीदारी सीम से भिन्न किसी अन्य उपरिशायी सीम से आया था। उनके अनुसार पानी का बहाव छत गिरने के उपरान्त उपरिशायी सीम में संस्तर संचालन (स्ट्राटा मूवमेन्ट) के कारण हुआ, जो तत्काल न होकर छत के गिरने के कुछ समय पश्चात् हुआ था।

प्रबंधन तथा अधिकारी संघ का तर्क इस तथ्य पर आधारित है कि बांसगढ़ा सीम से हाथीदारी सीम तक 10 सेमी व्यास का बोरहोल बनाया गया था, जिससे होकर पूरी मोटाई (फुल बोर) में करीब चार महीने तक लगातार पानी बहता रहा और इस तरह सारा पानी हाथीदारी सीम से निकल गया। तत्पश्चात् करीब 3 सेमी बोर पानी ही बोर होल से बह रहा था, जो उनके अनुसार सामान्य संस्तर जल था, जो बारहमासी प्रकृति का था और इस कारण हाथीदारी सीम सूखा था।

उच्च अधिकार प्राप्त समिति, श्रमिक संघों तथा खान सुरक्षा महानिदेशालय का मानना है कि ध्वस्त बोर होल, जिसे वर्ष 1991 में ड्रिल किया गया था काफी पुराना था और स्पष्टतः पानी बहने के दौरान गाद/बालू आदि के कारण जाम हो गया था और इसके कारण हाथीदारी सीम पूर्णतः सूखा हुआ नहीं था।

खान प्रबंधन द्वारा सम्पोषित हाथीदारी सीम के मूल भूमिगत मापचित्र, जिसे दुर्घटना के पश्चात् खा.सु.म.नि. द्वारा जमा कर लिया गया था, के अध्ययन से पता चलता है कि पूर्व से पश्चिम की ओर जानेवाली 0.5 मी. थो का भ्रंश (फॉल्ट) बांसगढ़ा सीम के पैनल 11 के

ऊपर स्थित हाथीदारी सीम को दो भागों में बांटती है- भ्रंश (फॉल्ट) के दक्षिणी भाग का कार्य-स्थल तथा भ्रंश के उत्तरी भाग का कार्य-स्थल। इन दोनों कार्य-स्थलों के बीच स्थित सभी संयोजकों में पृथक्कारी अवरोधक दिये गये थे। इस प्रकार बाँसगढ़ा सीम के पैनल सं. 11 के ठीक ऊपर स्थित इन दो कार्य-स्थलों ने दो अलग जल निकाय सृजन किया था। हाथीदारी सीम के दोनो जल निकाय, जैसाकि ऊपर बताया गया है, दिनांक 15.6.2005 को हुई छत गिरने की घटना के कारण बाँसगढ़ा सीम के कार्य-स्थल से सम्बद्ध हो गये। पूर्व में बताये गये बोर होल, जिससे होकर हाथीदारी सीम के पानी का निकलना माना गया है, केवल एक ही जल निकाय से जुड़ा था। फॉल्ट प्लेन का दक्षिणी भाग पूर्णतः जलमग्न था और उसमें करीब 11.45 मिलियन गैलन पानी भरा था, जो छत गिरने के तत्काल बाद ही पूरे वेग से बाँसगढ़ा सीम के कार्य-स्थल में प्रवेश कर गया। अन्य उपरिशायी सीमों का पानी तथा बाँसगढ़ा सीम के फॉल्ट प्लेन के दूसरी तरफ का शेष पानी भी संभवतः नीचे की ओर बहा होगा।

जल निकायों, फॉल्ट प्लेन तथा बाँसगढ़ा सीम के पैनल सं. 11 के कार्य-स्थल की स्थिति दर्शाता हुआ हाथीदारी सीम का अंश मापचित्र एवं फॉल्ट प्लेन के दक्षिणी भाग में स्थित जल निकाय में जल संचरण की अनुमानित मात्रा की गणना को परिशिष्ट XI तथा XII पर दी गई है।

6.2 दुर्घटना का कारण:

6.2.1 छत के गिरने से वायु-विस्फोट: दुर्घटना का कारण।

खान प्रबंधन, अधिकारी संघ, ए आइ एम पी ए तथा आइ एम एम ए का मानना है कि दुर्घटना तथा श्रमिकों की मृत्यु का तत्काल कारण, वायु-विस्फोट था और तदुपरान्त पानी के नीचे आ जाने में मजदूर मरनोपरान्त डुब गए।

उपरोक्त दावा इन मान्यताओं पर आधारित था कि उपर स्थित (उपरिशायी) हाथीदारी सीम सूखा था और यह कि मृत व्यक्तियों के अन्त्यपरीक्षण प्रतिवेदन के अनुसार मृत्यु का कारण प्रघात (शॉक) कठोर, खुरदरे तथा भारी वस्तु से होनेवाले चोटों के कारण (हेमरेज) रक्तस्राव था। अदालत इन मान्यताओं को सही नहीं मानती है। उपरिशायी हाथीदारी सीम की, पानी की तुलना में, स्थिति की चर्चा ऊपर के पैरा 6.1 में स्पष्ट रूप से कर दी गयी है और यह मानना कि हाथीदारी सीम पूर्णतः जल-मुक्त था, सही नहीं है। इसके अतिरिक्त पुलिस प्रतिवेदन में मरनेवालों के शरीर पर किसी भी बाहरी आघात की पुष्टि नहीं की गयी है। चिकित्सकों के प्रतिपरीक्षण से पता चला कि मृतकों का शव-परीक्षण यंत्रवत् किया गया और इसलिए शव-परीक्षण प्रतिवेदन में दिये गये मृत्यु के कारण स्वीकार्य नहीं हो सकते हैं। शव-परीक्षण प्रतिवेदन के अनुसार मृत्यु का कारण तथा सभी मृतकों के संदर्भ में अपमृत्यु विचारण प्रतिवेदन में उल्लिखित चोटों की प्रकृति को दर्शाने वाली तालिका परिशिष्ट XIII पर संलग्न है। इसके अतिरिक्त जाँच-पड़ताल तथा अवलोकनों से साबित होता है कि 21वें लेवल के ऊपर खान के अन्य भागों में किसी भी प्रकार का अवलम्ब (support) विस्थापन, संपत्ति नुकसान या किसी भी व्यक्ति को चोट नहीं लगी थी। यहाँ तक कि पंप खलासी, जिसके साक्ष्य पर वायु विस्फोट की घटना को मान्यता दी गई थी, भी घायल नहीं हुआ था। वायु-विस्फोट की घटना का कोई अन्य प्रभावशाली संकेत भी नहीं था। रेल पथों आदि का

नुकसान केवल 21वें लेवल, जहाँ तक पानी चढ़ा था, तक ही सीमित था जिससे उपलक्षित है कि ये नुकसान जल-अन्तर्वाह के दबाव के कारण हुए थे। खान की बाँसगढ़ा सीम में वायु-विस्फोट का कोई इतिहास नहीं था और छत गिरने के समय खुली छत का विस्तार भी इस प्रकार के उच्च परिमाण वाले वायु-विस्फोट के लिए पर्याप्त नहीं था।

उपरोक्त के परिपेक्ष्य में, खान प्रबंधन तथा अधिकारी संघ इत्यादि का यह दावा कि छत गिरने से वायु-विस्फोट के कारण श्रमिकों की मृत्यु हुई, को स्वीकारा नहीं जा सकता है।

6.2.2 पानी का अन्तर्वाह: दुर्घटना का कारण के

उच्च अधिकार प्राप्त समिति, खा.सु.म.नि. तथा श्रमिक संघों का मानना था कि श्रमिकों की मृत्यु पानी में डूबने से हुई। अदालत के समक्ष प्रस्तुत साक्ष्य, बयान तथा विविध पक्षों के आपसी तर्क-वितर्क तथा मापचित्रों, अभिलेखों आदि का गहन परीक्षण एवं सर्वोपरि शव-परीक्षण करनेवाले चिकित्सकों के प्रति परीक्षण एवं पुलिस की अपमृत्यु विचारण प्रतिवेदन से निष्कर्ष निकलता है कि दुर्घटना तथा श्रमिकों की मृत्यु का मूल कारण ऊपर स्थित हाथीदारी सीम से नीचे पानी का आकस्मिक अन्तर्वाह एवं डूबना था।

6.3 शव-परीक्षण रिपोर्ट:

मृतकों का शव-परीक्षण दिनांक 19.6.2005 से 29.6.2005 के बीच मेसर्स सी सी एल की सौंदा अस्पताल में किया गया था। यह कार्य भिन्न-भिन्न चिकित्सकों को सौंपा गया था। छः चिकित्सकों ने मृतकों का शव-परीक्षण किया। मृत्यु के निर्धारित कारणों में खुरदरे तथा भारी पदार्थों से होनवाले चोटों के कारण रक्तस्राव तथा प्रघात था। सभी मामलों में कमोवेश यही कारण बताया गया। मृतकों का शव-परीक्षण करनेवाले सभी चिकित्सकों से दिनांक 18.2.06 को अदालत द्वारा पूछताछ की गयी। पूछताछ के क्रम में चिकित्सकों ने स्वीकार किया कि शवों के अत्यधिक सड़ जाने के कारण चीर-फाड़ उनके बजाय अस्पताल के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों द्वारा किया गया। अदालत को यह विश्वास करने के लिए प्रेरित किया गया कि शव-परीक्षण कार्य यंत्रवत् किया गया और यहाँ तक कि चिकित्सकगण चिकित्सकिय विधिशास्त्र पर अदालत के प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाये। चिकित्सक या तो इस तथ्य से अनभिज्ञ थे या वे यह बता नहीं पाये कि डूबने के 20-40% मामलों में पानी मृतक के फेफड़े में प्रवेश नहीं करता है।

पुलिस की अपमृत्यु विचारण प्रतिवेदन ने खुलासा किया कि शव फूल गये थे और विकृत तथा सड़ने के विविध चरणों में पहुँच गये थे। मृतकों के शरीर की बाह्य त्वचा कई जगहों पर बाहर आ गई थी। शवों की इस स्थिति का कारण उनका पानी तथा कीचड़ में डूबा होना था। एक प्रतिवेदन छोड़कर अन्य सभी में बाह्य चोट की चर्चा नहीं की गयी थी।

अपने समक्ष प्रस्तुत सभी साक्ष्यों पर विचार कर अदालत इस नतीजे पर पहुँची है कि सभी मौतें वायु-विस्फोट से ने होकर डूबने के कारण हुई।

6.4 जल प्रवेश स्थान तथा मार्ग:

खा.सु.म.नि. की सांविधिक जाँच ने जल प्रवेश-स्थान पैनल के उत्तर पश्चिमी भाग के अशान्त क्षेत्र तथा फॉल्ट प्लेन का उभयनिष्ठ बिन्दु पर स्थित बताया है। निरीक्षण के दौरान किये गये अवलोकनों तथा बाँसगढ़ा सीम के पैनल 11 में गाद, बोल्टर आदि का वितरण

खा.सु.म.नि. के इस अवधारणा को बल प्रदान करते हैं और पूरी सम्भावना है कि छत गिरने के बाद उपरिशायी सीमों का पानी इसी कमजोर प्लेन (तल) से नीचे आया।

6.5 पैनल सीमा के बाहर कार्य करने की भूमिका:

उच्च अधिकार प्राप्त समिति तथा खा.सु.म.नि. द्वारा दुर्घटना की जाँच से यह स्पष्ट हो गया कि बाँसगढ़ा सीमा के पैनल 11 में खा.सु.म.नि. द्वारा विनिर्दिष्ट क्षेत्र के बाहर कार्य किया गया था। इस बात की पुष्टि खान प्रबंधन द्वारा खा सु म नि से अनुमति प्राप्त करने के दौरान दिये गये मापचित्रों, दुर्घटना के उपरान्त तैयार किये गये मापचित्रों तथा दुर्घटना के उपरान्त खा सु म नि द्वारा जप्त किये गये मापचित्रों से होती है। मापचित्र सं. 246 में दर्शायी गई स्वीकृत पैनल सीमा, जिसके लिए खा.सु.म.नि.के पत्र सं. आर आर/10397/पर्म100(1)/03/2930 दिनांक 28.11.2003 के द्वारा अनुमति प्रदान की गई थी, के बाहर निष्कर्षण कार्य हुआ पाया गया।

छत गिरने (रूफ फॉल) की गोफ किनारा रेखा उत्तरी 27 लेवल के 14 क्रॉस-कट डीप से निकले फॉल्ट प्लेन पर देखी गयी और उसका विस्तार 16 वें क्रॉस-कट में 28 लेवल जंक्शन तक था। गोफ किनारा रेखा के साथ-साथ छत टूटी हुई थी। छत टूटने की रेखा उत्तरी फॉल्ट प्लेन से होकर दक्षिण-पश्चिमी दिशा में विकर्णतः फैली थी। 17वें क्रॉस-कट में 28 लेवल के नीचे जल जमाव के कारण टूटने की रेखा का उससे आगे का विस्तार नहीं देखा जा सका। टूट-रेखा की संपूर्ण लम्बाई में छत गिरे हुये सामग्री से पूर्णतः भरी हुई पायी गयी।

उपरोक्त तथ्य के आलोक में यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुमति प्राप्त सीमा क्षेत्र से बाहर कार्य करने तथा कमजोर प्लेन अर्थात् पैनल के उत्तर-पश्चिम में स्थित फॉल्ट प्लेन से छत संस्तर में एक कमजोर क्षेत्र उजागर हुआ जिसने छत गिरने और तदनन्तर जलप्लावन में सहयोग दिया। पैनल के निर्धारित सीमा के अन्दर कार्य को निष्पादित करने में खान प्रबंधन सचेत नहीं था।

6.6 कोयला मंत्रालय द्वारा गठित उच्च अधिकार प्राप्त समिति की रिपोर्ट:

कोयला मंत्रालय द्वारा गठित उच्च अधिकार प्राप्त समिति ने हलफनामे के द्वारा अदालत के समक्ष अपनी प्रतिवेदन दी। श्री एस. चौधरी, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, सी एम पी डी आई. एल, जो उक्त समिति के अध्यक्ष भी हैं, ने अदालत के समक्ष समिति की प्रतिवेदन के निष्कर्षों की व्याख्या की। समिति ने कहा कि कोलियरी प्रबंधन द्वारा उपरिशायी सीमों से जल निकासी की कोई व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक प्रयास नहीं किया गया था जैसा कि खा.सु.म.नि. द्वारा डिपिलरिंग अनुमति के तहत अपेक्षित है। समिति का निष्कर्ष था कि ऊपर स्थित हाथीदारी सीमा का जमा पानी दोनों सीमों के अवरोधक (पार्टिंग) से होकर बाँसगढ़ा सीमा में प्रवेश कर गया और जलमग्न करने के पश्चात् हाथीदारी तथा बाँसगढ़ा सीमों का पानी 252 मी. आर.एल. अर्थात् बाँसगढ़ा सीमा के 21वें लेवल तक आकर स्थिर हो गया।

6.7 खा.सु.म.नि. की सांविधिक जाँच रिपोर्ट:

दुर्घटना के पश्चात खा.सु.म.नि. द्वारा की गयी सांविधिक जाँच ने दुर्घटना के कारणों पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला है:

"जब बारह खान श्रमिक (लोडर) एक ओवरमैन तथा माइनिंग सिरदार की देख-रेख में, फॉल्ट से प्रभावित तथा पैनल के बाहर, केविंग विधि से डिपिलरिंग कार्य में संलिप्त थे तभी सोफ में एक बड़ी छत गिरी जिसके साथ-साथ ऊपरी सीम के 26मी. अवरोधक (पार्टिंग) से होकर अकस्मात और उग्र जल अन्तर्वाह हुआ परिणामस्वरूप हुए वायु-विस्फोट, पानी तथा मलवे के कारण सभी की मौत हो गयी।"

यह दुर्घटना रोकी जा सकता थी, यदि:

- (I) कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम, 100(1) के अन्तर्गत प्रदत्त अनुमति पत्र सं. आर आर/10397/अनुमति 100(1)/03/2930, दिनांक 28.11.2003 की शर्त सं. 5.3 के अनुसार समस्त डिपिलरिंग कार्य के दौरान पैनल के उदग्र एवम् 60 मी. के अन्दर स्थित सीमों के गोफों तथा क्षेत्र को पूर्णतः जलमुक्त रखा गया होता;
- (II) कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 100(i) के अन्तर्गत प्रदत्त अनुमति पत्र सं. आर आर/10397/अनुमति 100(1)/03/2930, दिनांक 28.11.2003 की शर्त सं. 2.0 का उल्लंघन कर मापचित्र सं. 246 में दर्शाये गये पैनल के सीमा क्षेत्र के बाहर काम नहीं किया गया होता;
- (III) कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम, 59(1) (ब) (vi) के अनुसार मापचित्र पर पैनल की सीमा, फॉल्ट की स्थिति तथा इसके पात (थ्रो) की दिशा तथा परिमाण को मापचित्र पर दर्शाया गया होता।

6.8 मेसर्स सी. सी. एल. द्वारा नियुक्त समिति की रिपोर्ट:

मेसर्स सी.सी.एल. ने अपनी ओर से एक तीन सदस्यीय समिति का गठन किया, जिसमें प्रो. ए. के. घोष, भूतपूर्व निदेशक, भारतीय खान विद्यापीठ, प्रो. आर. एन. गुप्ता, निदेशक, राष्ट्रीय पत्थर यांत्रिकी संस्थान, कोलार तथा डा. एस.के.सिंह, वैज्ञानिक, के.ख.अ.सं. थे। समिति ने दुर्घटना के कारणों पर निम्नलिखित निष्कर्ष दिया:-

दुर्घटना व्यापक वायु-विस्फोट का प्रत्यक्ष परिणाम थी। पूरी संभावना है कि दुर्घटना स्थल पर फॉल्ट प्लेन सीएफ 11 के साथ-साथ हुई "स्टीक-स्लीप" गति ने सक्रिय भू-गति की तीव्रता को और बढ़ा दिया जो उपरिशायी सीम तक पहुँच गई जो कि जलप्लावन का स्रोत थी। सभी उपलब्ध अभिमुख साक्ष्यों से पता चलता है कि चौदह व्यक्तियों की मृत्यु के लिए वायु-विस्फोट ही प्रत्यक्ष तथा एकमात्र उत्तरदायी कारण था। चूँकि फॉल्ट-प्लेन संचालन तथा परिणामी प्रभाव मानव नियंत्रण से परे प्राकृतिक शक्तियों द्वारा प्रेरित थी अतः कोई भी व्यक्ति यह सोचने के लिए बाध्य होगा कि यह घटना ईश्वर-कृत है।

उक्त समिति के सदस्यों से अदालत द्वारा पूछताछ की गयी। प्रथमतः समिति के सदस्यों की नियुक्ति या समिति का गठन सी.सी.एल प्रबंधन की तरफ से एक स्वप्रेरित कार्य था। बाद में डा. एस.के.सिंह, बोर्ड एवं पिलर विभागाध्यक्ष, के.ख.अ.सं., धनबाद तथा समिति के एक अन्य सदस्य ने अदालत के समक्ष बयान दिया कि इसमें और अधिक वैज्ञानिक अन्वेषण की आवश्यकता है। श्री आर. पी. रिटोलिया, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, सी.सी.एल. ने अदालत के समक्ष बताया कि इस समिति की प्रतिवेदन कोयला मंत्रालय द्वारा गठित समिति की प्रतिवेदन को अभिभूत नहीं कर सकती है। अदालत के समक्ष सभी साक्ष्यों का मूल्यांकन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकलता है कि इस समिति की प्रतिवेदन एक पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष को पुनः स्थापित करने का मामला है अतः अदालत, पूरे विवेक के साथ, इसके पीछे के तर्क तथा समिति के निष्कर्ष को स्वीकार नहीं कर सकता है।

अध्याय - VII

निष्कर्ष

- 7.0 उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर, अदालत इस निष्कर्ष पर पहुँची है कि दुर्घटना का कारण छत गिरने के परिणामस्वरूप बाँसगढ़ा सीम के कार्यरत डिस्ट्रीक्ट और ऊपरिशायी हाथीदारी सीम के परित्यक्त व जलाक्रान्त कार्य-स्थल के बीच सम्बन्ध स्थापित हो जाना था। कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 100(1) के अन्तर्गत प्रदत्त अनुमति पत्र सं. आर आर/10397/अनुमति 100(1)/03/2930, दिनांक 28.11.2003 की शर्त सं. 5.3 के अनुसार कार्यरत बाँसगढ़ा सीम के उदग्र एवम् 60 मी. के अन्दर स्थित हाथीदारी सीम को जलमुक्त रख पाने में विफलता के कारण दुर्घटना घटी।

पैनल सं. 11 की स्वीकृत सीमा के परे निष्कर्षण व भ्रंश तल (फॉल्ट प्लेन) के अनावरण ने छत के धँसने व तदन्तर जलप्लावन में सहयोग दिया।

अध्याय - VIII

उत्तरदायित्व

- 8.1 एक बार दुर्घटना का कारण स्थापित हो जाने पर उसका उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाना है। दुर्घटना के कारण से यह स्पष्ट है कि उक्त दुर्घटना खा.सु.म.नि. के अनुमति-पत्र में निहित शर्तों की अनपालना के कारण घटी। मुख्यरूप से यह कार्यान्वयन में मानवीय विफलता का मामला है और इसलिये, मे. सी. सी. एल. के खान व क्षेत्रीय स्तर के स्थानीय अधिकारी इस दुर्घटना के लिए उत्तरदायी ठहराए गये हैं। विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है:-

- 8.2 खान अधिनियम, 1952 की धारा 18 (4) निम्नवत् है :-

"सभी खान के मालिक, अभिकर्ता व प्रबन्धक प्रत्येक इस बात के लिये उत्तरदायी होंगे कि खान संबंधित सारे क्रिया-कलाप इस खान अधिनियम तथा तदनु रूप रचित विनियम, नियम, उपनियम व आदेशों की व्यवस्थाओं के अनुरूप संचालित हों।"

श्री मो. तसलीम, दिनांक 17. 8. 2004 से दुर्घटना की तिथि तक खान के महा प्रबन्धक व मानित अभिकर्ता थे। श्री उमेश शर्मा, दिनांक 01.6.2003 से दुर्घटना की तिथि तक खान के परियोजना पदाधिकारी व अभिकर्ता थे। खान के अभिकर्ता के रूप में उनके कार्य-काल के दौरान कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 100(1) के अन्तर्गत खा.सु.म.नि. द्वारा प्रदत्त अनुमति-पत्र की शर्तों का उल्लंघन कर पैनल सं. 11 में निष्कर्षण किया गया। अतः वे, दुर्घटना के लिये उत्तरदायी ठहराये जाते हैं।

8.3 श्री एन. के. मार्तण्ड, जनवरी, 2004 से दुर्घटना की तिथि तक खान के प्रबन्धक थे। खान प्रबन्धक के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान खा.सु.म.नि. के पूर्वोक्त अनुमति-पत्र के उल्लंघन में पैनल सं. 11 में निष्कर्षण किया गया था। जैसे कि कोयला खान विनियम, 1957 के नियम 41 से अपेक्षित है, प्रबन्धक को यह सुनिश्चित करना था कि खान के सुरक्षा पहलू अच्छी हालत में रहते। पर, वे ऐसा करने में असमर्थ रहे और इसलिये दुर्घटना के लिये उत्तरदायी ठहराये जाते हैं।

8.4 श्री ए. एल. रजक, सितम्बर, 2004 से दुर्घटना की तिथि तक खान के सुरक्षा अधिकारी थे। कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 41ए के अनुसार श्री रजक से यह अपेक्षित था कि वे खान प्रबन्धक को इस बाबत सूचित करते कि खान में खान अधिनियम तथा उसके अन्तर्गत बने विनियम व नियम की व्यवस्थाओं का पालन हो रहा है या नहीं। सुरक्षित कार्य पद्धतियों को प्रोत्साहित करने की भी उनसे अपेक्षा थी पर वे ऐसा करने में वे विफल रहे अतः दुर्घटना के लिये उत्तरदायी ठहराये जाते हैं।

8.5 श्री आई.डी.पी. सिंह, खान के सहायक प्रबन्धक तथा सामान्य पाली के प्रभारी थे। जैसा कि कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 42 के अन्तर्गत अनुबद्ध है, वे यह सुनिश्चित करने में विफल रहे हैं कि उनके अधीन सारे कार्य-कलाप खान अधिनियम, विनियम, नियम की व्यवस्थाओं व तदनु रूप दिये गये आदेशों के अनुरूप संचालित हों, अतः वे दुर्घटना के लिये उत्तरदायी ठहराये जाते हैं।

8.6 खा.सु.म.नि. की भूमिका:

8.6.1 खा.सु.म.नि. की दुर्घटना संबंधी संलिप्तता के बारे में अदालत की कार्यवाही के दौरान विभिन्न पक्षों द्वारा निम्नलिखित दो मुद्दे उठाये गये:-

अ. खा.सु.म.नि. द्वारा प्रदत्त अनुमति की भूमिका और

ब. अनुमति प्रदान के पश्चात खा.सु.म.नि. के अधिकारियों द्वारा किये गये निरीक्षण की भूमिका।

8.6.2 अदालत ने सम्बन्धित दस्तावेजों और खा.सु.म.नि. के अधिकारियों की विस्तृत परीक्षा की और निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुँची है:

अ. खा.सु.म.नि. द्वारा प्रदत्त अनुमति की भूमिका:

(i) अनुमति प्रदान का प्राधिकार:

श्री एस.के. मन्डल, उप-निदेशक खान सुरक्षा (खान निरीक्षक) की अनुशंसा पर श्री आर. गुहा, खान सुरक्षा निदेशक (क्षेत्रीय खान निरीक्षक) द्वारा कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 100 (1), जो कि निम्नलिखित है, के अन्तर्गत अनुमति प्रदान की गई थी:

"क्षेत्रीय निरीक्षक की लिखित अनुमति के बगैर किसी स्तम्भ का न्युनीकरण या निष्कर्षण न तो प्रारम्भ किया जाएगा, न चालू रखा जाएगा और न ही संचालन किया जाएगा और ऐसे कार्य उन शर्तों के अनुरूप होंगे जो कि वे अनुमति में उल्लेखित करना चाहें।"

वर्तमान मामले में अनुमति प्रदान करने का अधिकार क्षेत्रीय निरीक्षक में निहित है, अतः श्री गुहा अनुमति प्रदान करने में पूरी तरह से कानून की सीमा के भीतर थे।

(ii) जलप्लावन के विरुद्ध सुरक्षा की व्यवस्था:

जलप्लावन के खतरे से सुरक्षा के लिये उक्त अनुमति-पत्र में निम्नलिखित शर्त अनुबद्ध थी:-

"निष्कर्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया के दौरान यह सुनिश्चित किया जायेगा कि पैनल के ठीक उपर एवं 60 मी. के दायरे में आने वाले उपरिशायी सयाल, बालकुदरा, कुरसे, ऊपरी नकारी, निचली नकारी, ऊपरी सेमाना, निचली सेमाना और हाथीदारी सीम के गोफ जलमुक्त रहें।"

अदालत का ऐसा दृष्टिकोण है कि अनुमति-पत्र में जलप्लावन के खतरे के विरुद्ध समुचित सुरक्षा प्रबन्ध समाविष्ट किये गये थे और यह भी कि यदि खान प्रबन्धन ने उपरोक्त शर्त की अनुपालना की होती तो यह दुर्घटना नहीं घटती।

ब. खा सु म नि के अधिकारियों द्वारा अनुमति प्रदान के बाद निरीक्षण की भूमिका:

श्री डी. के. मल्लिक, खान सुरक्षा उपनिदेशक ने अनुमति प्रदान के बाद दिनांक 19.03.2005, 05.05.2005, 12.05.2005, 18.05.2005 और 07.06.2005 को खान का निरीक्षण किया था जब पैनल सं. 11 में डिपिलरिंग का कार्य जारी था। श्री मल्लिक ने अपने निरीक्षण के दौरान अनुमति-पत्र की शर्त के उल्लंघन को निर्दिष्ट नहीं किया था। श्री मल्लिक ने अदालत को बयान दिया कि प्रबन्धन ने पहले ही यह लिखित रूप में खा सु म नि को सूचित किया था कि उपरिशायी हाथीदारी सीम को बोरहोल के द्वारा जलमुक्त कर दिया गया है। उन्होंने प्रबन्धन के दावे पर विश्वास किया और निरीक्षण के दौरान उसका सत्यापन नहीं कर सके। उन्हें अपने कर्तव्यों के निर्वाहन में ज्यादा सावधान रहना चाहिये था।

अध्याय - IX

अनुशंसा

- 9.0 खान अधिनियम, 1952 की धारा 24, जिसके अन्तर्गत इस जाँच-अदालत का गठन हुआ है, से यह भी अभिप्रेरित है कि प्रतिवेदन में ऐसी टिप्पणियाँ भी हो सकती हैं जिन्हें समावेसित करना अदालत उचित समझता हो।

अतः हम उजागर तथ्यों पर आधारित, कतिपय अनुशंसायें करने के लिये इस अवसर का प्रयोग करना चाहेंगे:-

- 9.1 खान निरीक्षण की वर्तमान पद्धति में खा.सु.म.नि. अपने अधिकारियों द्वारा किये गए सुरक्षा स्थिति के व्यक्तिपरक मूल्यांकन पर बहुत ज्यादा निर्भर करता है। किसी समय यह फैसले में विभ्रम की ओर प्रेरित कर सकता है। ऐसी परिस्थितियों से बचने के लिये खा.सु.म.नि. को एक व्यापक व वैज्ञानिक निरीक्षण पद्धति की रचना करनी चाहिये जिससे की, जहाँ तक सम्भव हो, व्यक्तिपरक मूल्यांकन दूर किया जा सके।
- 9.2 वैधानिक व्यवस्थाओं की अनुपालना में मानवीय विफलताओं के कारण ही सर्वाधिक दुर्घटनाएँ होती हैं। समय-समय-पर, ऐसी विफलताओं की पुनरावृत्ति क्षुब्धकारी है। इसलिये, ऐसा महसूस किया जाता है कि अधिकारियों एवं पर्यवेक्षकों के मन में वैधानिक व्यवस्थाओं की तुलना में कर्तव्य-बोध बिठाने के लिये समुचित व नियमित प्रशिक्षण की अविलंब आवश्यकता है।
- 9.3 खान अधिनियम, 1952 एवं इसके अधिनस्थ वैधानिक व्यवस्थाओं का प्रवर्तन खा.सु.म.नि. के प्राथमिक कर्तव्यों में से एक है। संबद्ध समस्याओं के परिमाण व जटिलताओं के मद्देनजर खा.सु.म.नि. के अधिकारियों व कर्मचारियों की संख्या में भारी कमी है। इस संस्था की मजबूती के लिये सरकार को तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता है जिससे कि खा.सु.म.नि. शासनादेश के प्रति न्याय कर सके।
- 9.4 इस अदालत के श्रवण-सत्रों के दौरान खानों में वैधानिक जन-शक्ति की कमी का मुद्दा बारंबार केन्द्र में आया। खानों में कार्य-पर्यवेक्षण का कामगारों की सुरक्षा से सीधा सम्बन्ध है। अतः यह सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि खान प्रबन्धन द्वारा वैधानिक जन-शक्ति के नियमित नियोजन हेतु एक स्पष्ट नीति बने व कार्यान्वित हो।
- 9.5 अदालत की कार्यवाही के दौरान श्रमिक-संघों के प्रतिनिधियों ने इस बात का अभिवेदन किया कि मृतकों के परिवारों को भुगतान किये गये मुआवजे की रकम बहुत ही अपर्याप्त थी। सरकार दुर्घटना से पीड़ित परिवारों को देय मुआवजा की मात्रा बढ़ाने पर विचार कर सकती है।
- 9.6 बहुत बड़ी संख्या में खानों वाली कम्पनी में एक व्यक्ति के लिये सभी खानों की सुरक्षा पहलुओं पर समुचित ध्यान देना अत्यन्त कठिन है। अतः अदालत का ऐसा मत है कि ऐसी

कम्पनियों में स्वामित्व नामांकन दो या तीन निदेशकों के बीच बांटा जा सकता है। इससे वे खानों के सुरक्षा मामलों को अधिक प्रभावी ढंग से निपटाने में समर्थ हो सकेंगे।

9.7 आन्तरिक सुरक्षा संगठन की भूमिका:

अधिकतर कम्पनियों ने खानों में सुरक्षा पर पाँचवी राष्ट्रीय सम्मेलन की अनुशंसा से उद्भूत स्वशासन के सिद्धांत को अमली जामा पहनाने के लिये अपनी सुरक्षा नीति का प्रतिपादन और आं. सु. सं. (आन्तरिक सुरक्षा संगठन) का सृजन कर लिया है। अदालत यह महसूस करता है कि यद्यपि आं. सु. सं. अस्तित्व में था पर यह बहुत प्रभावी नहीं रहा है। उनकी भूमिका अधिक अर्थपूर्ण हो सकती है यदि:

अ. आं. सु. सं. की अनुमति के बाद ही नये क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ किये जायें और

ब. आं. सु. सं. का मुखिया या तो कम्पनी बोर्ड में हो या उसे ऐसे निदेशक के प्रति जवाबदेह होना चाहिये जो उत्पादन से सीधे तौर पर सम्बन्धित न हो।

अध्याय - X

व्यय की वसूली

10.0 खान अधिनियम, 1952 की धारा 58 (C) द्वारा प्रदत्त अधिकार से गठित खान नियमावली, 1955 का नियम 22 जाँच अदालत को इसके लिये अधिकृत करता है कि यदि दुर्घटना प्रबन्धन की असावधानी या लापरवाही के कारण घटित हुई हो तो अदालत के व्यय की प्रतिप्राप्ति सम्बन्धित खान मालिक से करने का निर्देश दे। यह प्रतिवेदन यह प्रकट करता है कि यह दुर्घटना खान महाप्रबन्धक, अभिकर्ता व अन्य अधिकारियों की सुरक्षा सावधानियाँ बरतने में हुई लापरवाही के कारण घटी। इसलिये, परिणाम स्वरूप इस जाँच अदालत के सारे खर्चे प्रबन्धन यथा मे. सेन्ट्रल कोल फील्डस लि. से वसूल किये जाने हैं। हम उपरोक्त प्रबन्धन को इस अदालत के सारे खर्चे का भुगतान करने का निर्देश देते हैं।

ह०
(रवीन्द्र शर्मा)
असेसर

ह०
(राजेन्द्र प्रसाद सिंह)
असेसर

ह०
(डॉ. पी. डी. शेनॉय)
अध्यक्ष

आभारोक्ति

मैं, अपने प्रतिष्ठित असेसरो, श्री रवीन्द्र शर्मा और श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, का उनकी मूल्यवान सहायता एवम् मार्गदर्शन के लिए, हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। मैं, विभिन्न मजदूर संघ के प्रतिनिधियों, मेसर्स सी. सी. एल. के प्रबंधन, कोयला अधिकारी संघ के सदस्यों, अखिल भारत खनन कार्मिक संघ और इनमोसा के प्रतिनिधियों को धन्यवाद देता हूँ, जिनकी अनवरत सहायता के बिना यह जाँच इतनी शीघ्रता और दक्षता से सम्पन्न करना संभव नहीं था। मैं, खान सुरक्षा महानिदेशालय और इसके अधिकारियों तथा कर्मचारियों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने न केवल उनके द्वारा एकत्रित दस्तावेजों को प्रस्तुत करने में अपितु आवश्यकता पड़ने पर हर तरह की सहायता के लिए भी आगे आकर, स्वैच्छिक सहयोग दिया। अन्ततः मैं सी.एम.पी.डी.आई.एल के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने अपने परिसर में अदालत के अधिवेशनों के संचालन के लिए उत्कृष्ट व्यवस्था की।

अन्त में, मैं खान सुरक्षा उपनिदेशक, श्री जी.विजय कुमार के अच्छे कार्य के लिये आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने कोर्ट के सचिव का कार्यभार संभाला।

ह०

(डॉ. पी. डी. शेनॉय)

अध्यक्ष

परिशिष्ट-1

मृतकों का व्योरा

क्रम सं०	मृतकों के नाम	आयु	व्यवसाय
1.	श्री शिकाक्री मांझी	51वर्ष	लोडर
2.	श्री भोला	43वर्ष	लोडर
3.	श्री भीमो सेठी	57वर्ष	लोडर
4.	श्री लक्ष्मण मुण्डा	59वर्ष	लोडर
5.	श्री बालकू महतो	53वर्ष	लोडर
6.	श्री राम बृक्ष राम	47वर्ष	लोडर
7.	श्री मैनेजर राम	47वर्ष	लोडर
8.	श्री जीतराम मांझी	31वर्ष	लोडर
9.	श्री देवा साव	59वर्ष	लोडर
10.	श्री किशुन महतो	27वर्ष	लोडर
11.	श्री हरिहर साव	59वर्ष	लोडर
12.	श्री सुभाष सेठी	57वर्ष	लोडर
13.	श्री शंभुनाथ भुईया	53वर्ष	ओवरमैन
14.	श्री बुधन महतो	59वर्ष	सिरदार

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय**अधिसूचना**

नई दिल्ली, 17 अक्टूबर, 2005

का.आ. 1494(अ).—जबकि, झारखण्ड राज्य के हजारीबाग जिले में मैसर्स सेंट्रल कोलफील्ड लिमिटेड की कोयला खदान, विशेष रूप से सेंट्रल सौंदा कोलियरीज में 15 जून, 2005 को (14 जून, 2005 की तीसरी पाली) दुर्घटना हुई है, जिसमें कुछ व्यक्तियों की मृत्यु हुई है;

और, जबकि, केन्द्रीय सरकार की राय है कि दुर्घटना होने के कारणों और परिस्थितियों की औपचारिक जांच पड़ताल करवाई जानी चाहिए;

अतः, अब, खान अधिनियम, 1952 (1952 का 35) की धारा 24 की उप-धारा (i) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, ऐसी जांच-पड़ताल करने और तीन माह की अवधि के भीतर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए श्रम मंत्रालय के पूर्व सचिव डॉ. पी. डी. शेनॉय को नियुक्त करती है। केन्द्रीय सरकार, जांच-पड़ताल करवाने में अग्रेसर के रूप में निम्नलिखित व्यक्तियों को भी नियुक्त करती है, अर्थात :—

1. श्री आर. शर्मा, पूर्व खान सुरक्षा महानिदेशक, धनबाद।
2. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, अध्यक्ष, राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ।

[फा. सं. एन-11012/1/2005-आई एस एच-II]

के. चन्द्रमौली, संयुक्त सचिव

परिशिष्ट -III**सं० एन- 11012/1/2005-आई एस एच-II****भारत सरकार****श्रम एवं रोजगार मंत्रालय**

नई दिल्ली, दिनांक 21 दिसम्बर, 2005

सेवा में,
महानिदेशक,
खान सुरक्षा महानिदेशालय
(ध्यानाकर्षण श्री भास्कर भट्टाचार्य, महानिदेशक)
धनबाद।

विषय :- दिनांक 15.06.2005 को सेंट्रल सौंदा कोलियरी में घटी दुर्घटना के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों एवम् और कारणों की जांच के लिए गठित जांच न्यायालय के लिए श्री जी०विजय कुमार, खान सुरक्षा उपनिदेशक (मुख्यालय) धनबाद, की सचिव के रूप में नियुक्ति।

महोदय,

मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है कि सक्षम प्राधिकारी ने, इस मंत्रालय की अधिसूचना संख्या. एस.ओ. 1494(ई) दिनांक 17.10.2005 के अधीन, दिनांक 15.06.2005 को सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी में घटी दुर्घटना के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों एवं कारणों की जांच के लिए डॉ.पी. डी.शिर्नॉय की अध्यक्षता में गठित जांच न्यायालय के सचिव के रूप में, श्री जी.विजय कुमार, खान सुरक्षा उपनिदेशक (मुख्यालय) धनबाद की नियुक्ति का अनुमोदन कर दिया है।

2. यह नियुक्ति, इस आदेश के जारी होने की तिथि से लेकर डॉ.पी.डी.शिर्नॉय जांच न्यायालय के कार्यकाल तक प्रभावी रहेगी।
3. श्री जी.विजय कुमार, खान सुरक्षा उपनिदेशक (मुख्यालय) धनबाद अपने सामान्य कर्तव्यों के अतिरिक्त जांच न्यायालय के सचिव के कर्तव्यों का भी निर्वाहन करेंगे।

भवदीय,

ह०

(सी०ए०भास्करन)

भारत सरकार के निदेशक

प्रतिलिपि प्रेषित:

- i. श्री जी.विजय कुमार, खान सुरक्षा उपनिदेशक(मुख्यालय) धनबाद।
- ii. डॉ.पी.डी.शिर्नॉय, अध्यक्ष, जांच न्यायालय को उनके अर्द्ध शासकीय पत्र सं०1(12)/2005-सामान्य सी०एस०-1 दिनांक 24.11.2005 के संदर्भ में।

ह०

(सी०ए०भास्करन)

भारत सरकार के निदेशक

परिशिष्ट- IV

भारत के राजपत्र असाधारण भाग -II खण्ड 3(ii)में प्रकाशित किया जाए

भारत सरकार

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 19 जनवरी, 2006

अधिसूचना

एस.ओ. 57(अ).—जबकि भारत सरकार ने श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की अधिसूचना संख्या एस ओ 1494 (ई) दिनांक 17 अक्टूबर 2005 के द्वारा मेसर्स सेन्ट्रल कोलफिल्ड लिमिटेड की कोलियरी में, खासकर झारखंड राज्य के हजारीबाग जिले में सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी में दिनांक 15 जून 2005 को घटित दुर्घटना, जिसमें कई लोगों की मौत हो गई थी, के कारण और परिस्थितियों का पता लगाने के लिए तथा उसकी जवाबदेही निर्धारित करने के लिये श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के पूर्व सचिव डॉ. पी. डी. शिर्नॉय को औपचारिक जांच करने और तीन महीनों के अवधि के अन्दर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए नियुक्त किया गया है। जांच की अवधि दिनांक 16/01/2006 तक थी।

और जबकि यह आवश्यक हो गया है कि जांच तथा रिपोर्ट प्रस्तुत करने की अवधि को बढ़ाया जाए।

अतः, अब, केन्द्र सरकार एतद द्वारा यह अवधि, अगले तीन महीनों, के लिए, दिनांक 17 जनवरी 2006 से 16 अप्रैल 2006 तक अथवा जांच की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के दिन/तिथि तक, जो भी पूर्व हो, बढ़ाती है। तदनुसार, जांच करने के लिए तथा रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए अध्यक्ष डॉ. पी. डी. शिनाय की नियुक्ति का कार्यकाल एवं परामर्शदाताओं के रूप में, श्री आर.शर्मा पूर्व खान सुरक्षा महानिदेशक तथा श्री राजेंद्र प्रसाद सिंह, अध्यक्ष, राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ की नियुक्ति का कार्यकाल भी अगले तीन महीनों के लिए अर्थात् दिनांक 16 अप्रैल 2006 तक अथवा जांच न्यायलय की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के दिन/तिथि तक, जो भी पूर्व हो बढ़ाया जाता है।

(फाईल सं० एन- 11012/1/2005-आई एस एच-II)

ह०

(के०चन्द्रमौली)

भारत सरकार के संयुक्त सचिव

सेवा में,

प्रबंधक

भारत सरकार मुद्रणालय

मायापुरी, रिंग रोड, नई दिल्ली।

परिशिष्ट- V

भारत के राजपत्र असाधारण भाग - II खण्ड 3(ii) में प्रकाशित किया जाए

भारत सरकार

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 03 अप्रैल 2006

अधिसूचना

एस.ओ. 483(अ).—जबकि भारत सरकार ने श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की अधिसूचना संख्या एस ओ 1494 (ई) दिनांक 17 अक्टूबर 2005 के द्वारा मेसर्स सेन्ट्रल कोलफिल्ड लिमिटेड की कोलियरी में, खासकर झारखंड राज्य के हजारीबाग जिले में सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी में दिनांक 15 जून 2005 को घटित दुर्घटना, जिसमें कई लोगों की मौत हो गई थी, के कारण और परिस्थितियों का पता लगाने के लिए तथा उसकी जवाबदेही निर्धारित करने के लिये श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के पूर्व सचिव डॉ. पी. डी. शिनाय को औपचारिक जांच करने और तीन महीनों के अवधि के अन्दर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए नियुक्त किया गया है। जांच की अवधि दिनांक 16/01/2006 तक थी जिसे दिनांक 16/04/2006 तक बढ़ाया गया था।

और जबकि यह आवश्यक हो गया है कि इसकी अवधि बढ़ाई जाए जिसके अन्दर जांच पूरी की जा सके व रिपोर्ट प्रस्तुत की जा सके।

अतः अब, केन्द्र सरकार एतद द्वारा यह अवधि, अगले तीन महीनों के लिए, दिनांक 17 अप्रैल 2006 से 16 जुलाई 2006 तक अथवा जांच की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के दिन/तिथि तक, जो भी पूर्व हो, बढ़ाती है। तदनुसार, जांच करने के लिए तथा रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए अध्यक्ष डॉ. पी. डी. शिनाय की नियुक्ति का कार्यकाल एवं परामर्शदाताओं के रूप में, श्री आर.शर्मा पूर्व खान सुरक्षा महानिदेशक तथा श्री राजेंद्र प्रसाद सिंह, अध्यक्ष, राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ की नियुक्ति का कार्यकाल भी अगले तीन महीनों के लिए अर्थात् दिनांक 16 जुलाई 2006 तक अथवा जांच न्यायालय की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के दिन/तिथि तक, जो भी पूर्व हो बढ़ाया जाता है।

(फाईल सं० एन- 11012/1/2005-आई एस एच-II)

ह०

(के. चन्द्रमौली)

भारत सरकार के संयुक्त सचिव

सेवा में,

प्रबंधक

भारत सरकार मुद्रणालय

मायापुरी, रिंग रोड, नई दिल्ली।

परिशिष्ट- VI

गवाहों की सूची

क्र. सं.	नाम एवं पता	शपथ-पत्र डायरी सं. एवं दिनांक	गवाही की तिथि	टिप्पणी
1	श्री एम. एम. सिंह, नि.त.(संचालन), सी.सी.एल.	16 दिनांक 30.12.2005	28 जनवरी, 06 एवं 12 मार्च 06 (प्रो.ए.के.घोष, डॉ. आर.के.गुप्ता एवं डॉ.एस.के.सिंह की समिति की रिपोर्ट पर)	
2	श्री बी भट्टाचार्य, म.नि., खान सुरक्षा महानिदेशालय।		28 जनवरी, 2006	सीधे कोर्ट में प्रस्तुत किया गया।
3	श्री के नागेश्वर राव, निदेशक, आर. आर., खा.सु. नि.		28 जनवरी, 2006	वही
4	श्री जे.एन.सिंह, सा.एम.ओ. ए. आई. ।		29 जनवरी, 2006	वही
5	श्री रमेश कुमार बुबना, आई.एम.एम. ए. के प्रतिनिधि	1 दिनांक 22.12.2005	29 जनवरी, 2006	

6	श्री अशोक कुमार शर्मा, ए. आई. एम. पी. ए.	11,12 दिनांक 30.11.2005	29 जनवरी, 2006	
7	श्री रमेन्द्र कुमार, एटक ¹	4 दिनांक 29.12.2005	29 जनवरी, 2006	
8	श्री कुमार महेश सिंह, इटक	18 दिनांक 31.12.2005	29 जनवरी, 2006	
9	श्री कमलेश सहाय, बी. एम. एस.	2 दिनांक 27.12.2005	29 जनवरी, 2006	
10	श्री बसंत कुमार सिंह, बी. एम. एस.	3 दिनांक 27.12.2005	29 जनवरी, 2006	
11	श्री मिथिलेश कुमार सिंह, सीटू	17 दिनांक 31.12.2005	29 जनवरी, 2006	
12	श्री मिहिर चौधरी, सीटू	21 दिनांक 28.01.2006	29 जनवरी, 2006	
13	श्री शंभू नारायण झा, इटक	20 दिनांक 28.12.2005	29 जनवरी, 2006	
14	श्री पी. के. कंचन, निदेशक सी. एम. पी.डी. आई. एल.		18 फरवरी, 2006	शपथ-पत्र नहीं
15	श्री बी. बी. दुबे, तत्कालीन अभिकर्ता	31 दिनांक 18.02.2006	18 फरवरी, 2006	
16	डा. अशोक कुमार सिन्हा, सदर अस्पताल, हजारीबाग।		18 फरवरी, 2006	शपथ-पत्र नहीं
17	डा. चन्द्र प्रकाश चौधरी, सदर अस्पताल, हजारीबाग।		18 फरवरी, 2006	शपथ-पत्र नहीं
18	डॉ. बिनोद नारायण, सदर अस्पताल, हजारीबाग।		18 फरवरी, 2006	शपथ-पत्र नहीं
19	डॉ. शिव प्रसाद सिन्हा, सदर अस्पताल, हजारीबाग।		18 फरवरी, 2006	शपथ-पत्र नहीं
20	डॉ. राजेश कुमार गुप्ता, सदर अस्पताल, हजारीबाग।		18 फरवरी, 2006	शपथ-पत्र नहीं
21	डॉ. बिनय कुमार, सदर अस्पताल, हजारीबाग।		18 फरवरी, 2006	शपथ-पत्र नहीं
22	श्री धनजय कुमार सिंह, सर्वेक्षक, जिन्होंने अनुमति मापचित्र पर हस्ताक्षर किया।	30 दिनांक 18.02.06	18 फरवरी, 2006	
23	श्री राहुल गुहा, उपमहानिदेशक (म.अंचल) तथा तत्कालीन निदेशक, राँची क्षेत्र।	22 दिनांक 07.02.2006	19 फरवरी, 2006	
24	श्री एस. के. मंडल, उपनिदेशक (पू.अंचल) तत्कालीन उपनिदेशक, राँची क्षेत्र।	24 दिनांक 10.02.2006	19 फरवरी, 2006	

25	श्री डी. के. मलिक, उपनिदेशक, राँची क्षेत्र।	23 दिनांक 10.02.2006	19 फरवरी, 2006	
26	डा. रामशरण राय अनुसंधान विला, झारुडीह, पो- धनबाद (झारखण्ड)	10, दिनांक 30.12.2005	19 फरवरी, 2006	
27	श्री उमेश शर्मा, पूर्व अभिकर्ता, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी।	13 दिनांक 30.12.2005	19 फरवरी, 2006	
28	श्री नरेन्द्र कुमार मार्तण्ड, पूर्व प्रबन्धक, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी।	8 दिनांक 30.12.2005	19 फरवरी, 2006	
29	श्री अजब लाल रजक, पूर्व सुरक्षा अधिकारी, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी।	5 दिनांक 30.12.2005	19 फरवरी, 2006	
30	श्री एम. के. थापर, इस. ई. सी. एल.	42 दिनांक 11.03.2006	11 मार्च, 2006	
31	श्री वी. के. सिंह, एन.सी.एल.	43 दिनांक 11.03.2006	11 मार्च, 2006	
32	श्री अजय कुमार, डी.पी.	41 दिनांक 11.03.2006	11 मार्च, 2006	
33	डॉ. ए.के.सरकार, डी.एफ.	40 दिनांक 11.03.2006	11 मार्च, 2006	
34	डॉ. ए.के. सिन्हा, सदर अस्पताल, हजारीबाग।		11 मार्च, 2006	शपथ-पत्र नहीं
35	श्री मु० तस्लीम, म.प्र.	37 दिनांक 11.03.2006	11 मार्च, 2006	
36	श्री गोपाल प्रसाद, उ.मु.ख.अ., सी.एम.पी.डी. आई. एल.	34 दिनांक 11.03.2006	11 मार्च, 2006	
37	श्री कृष्ण मुरारी, पूर्व प्रबंधक	44 दिनांक 11.03.2006	11 मार्च, 2006	
38	श्री एस.चौधरी, सी.एम.डी सी. एम. पी.डी. आई. एल. एवं अध्यक्ष, विभागीय जाँच समिति।	35 दिनांक 11.03.2006	12 मार्च, 2006	
39	श्री. ए. के. घोष		12 मार्च, 2006	श्री एम.एम. सिंह के शपथ-पत्र सं. 45 दि.12.03.06 पर
40	डॉ. एस.के. सिंह		12 मार्च, 2006	वही
41	श्री पी. एन. मिश्रा, महा. सचिव, इनमोसा	9 दिनांक 30.12.2005	12 मार्च, 2006	
42	श्री रमेन्द्र प्रसाद सिंह, अखिल भारतीय भारत खान	32 दिनांक 23.02.2006	12 मार्च, 2006	

	मजदूर महासंघ के प्रतिनिधि(सीटू)			
43	श्री इन्द्रदेव प्रसाद सिंह, पूर्व सहायक प्रबंधक, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी।	14, दिनांक 30.12.2005	12 मार्च, 2006	
44	डॉ. दीनानाथ पाण्डे, सिविल सर्जन, एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी, हजारीबाग।		25 मार्च, 2006 एवं 26 मार्च, 2006	शपथ-पत्र नहीं
45	श्री आर. पी. रिठोलिया, अ. सह प्र. नि., सी सी एल	15, दिनांक 30.12.2005	25 मार्च, 2006	
46	श्री बी आर त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक, एम. सी. एल. एवं तत्कालीन मुख्य महाप्रबंधक बरका-सयाल क्षेत्र, सी.सी.एल.	46, दिनांक 12.03.2006	25 मार्च, 2006	
47	श्री संजय कुमार, सहायक प्रबंधक, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी, चार्ज रिपोर्ट पर।	47, दिनांक 25.03.2006	25 मार्च, 2006	
48	श्री आदित्य साहू, महासचिव, बी.एम.एस.	7, दिनांक 30.12.2005	25 मार्च, 2006	

परिशिष्ट-VII

प्रति परीक्षण का सारांश

श्री भास्कर भट्टाचार्य, खान सुरक्षा महानिदेशक, धनबाद:

श्री भास्कर भट्टाचार्य ने अभिसाक्ष्य दिया कि-

(क) खान अधिनियम, 1952 की धारा 23(2) के अन्तर्गत जाँच की गयी और श्री के. नागेश्वर राव, खान सुरक्षा निदेशक, राँची क्षेत्र द्वारा जाँच प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया है और उन्होंने उनके कथन का समर्थन किया।

(ख) को.खा.वि., 1957 के विनियम 100(1) के अन्तर्गत अनुमति प्रदान करने के लिए खान सुरक्षा निदेशक अधिकृत है।

श्री के.नागेश्वर राव, खान सुरक्षा निदेशक, राँची क्षेत्र, राँची:

श्री राव ने गवाही दिया कि-

- (क) को.खा.वि., 1957 के विनियम 100(1) के अन्तर्गत अनुमति प्रदान करने का अधिकार खान सुरक्षा निदेशक में निहित है।
- (ख) अधिकांश अनुमति, प्रबंधन द्वारा दी गई सूचनाओं के आधार पर दिये जाती हैं।
- (ग) आसन्न मामले में अनुमति का अनुमोदन उनके पूर्वाधिकारी श्री आर. गुहा द्वारा किया गया था और श्री एस.के. मंडल, खान सुरक्षा उपनिदेशक, द्वारा हस्ताक्षरित था।

श्री बी.बी. दुबे, तत्कालीन अभिकर्ता:

श्री दुबे ने गवाही दिया कि-

- (क) खान के अभिकर्ता की हैसियत से उन्होंने अनुमति के लिए आवेदन दिया था, लेकिन अनुमति, उनकी सेवानिवृत्ति के पश्चात् प्राप्त हुई।
- (ख) उन्होंने आवेदन में डिपीलरींग कार्य शुरू होने के पूर्व उपरिशायी सीम को जलरहित करने की प्रतिबद्धता दर्शायी थी।
- (ग) खान में वायु ब्लास्ट का कोई इतिहास नहीं था और बाँसगढ़ा सीम के उपरिशायी संस्तर (स्ट्राटा) में सिर्फ 15% बालू-पत्थर था।

परिशिष्ट VII

डॉ. श्री ए.के. सिन्हा, सदर अस्पताल, हजारीबाग:

डॉ. सिन्हा ने गवाही दिया कि-

- (क) मृत्यु का कारण धाररहित और भारी चीज से चोट लगने से पहुँचा सदमा और रक्तस्राव था। शव परीक्षण 3 से 7 दिनों के बाद किया गया था। मृत्यु डूबने से होनेवाली श्वासावरोध के कारण नहीं हुई थी क्योंकि अँतड़िया संकुलित नहीं थी और फेफड़ा अक्षत और विवर्ण था तथा फूला हुआ नहीं था।
- (ख) वे शुष्क डूब नामक घटना तथा यह कि डूबने के 20-40% मामले इस प्रकार के होते हैं, से अवगत नहीं थे।
- (ग) उन्होंने चोदीज मेडिकल ज्यूरिसप्रुडेन्स एवं टॉक्सिकोलॉजी की किताब (23 वाँ संस्करण) के अंश को पढ़ा था जिसके पृष्ठ-601 में यह लिखा हुआ था कि-" कुछ मामलों में अवरुद्ध श्वासावरोध से मृत्यु हो सकती है, जिसे शुष्क डूब से जाना जाता है जो के कंठ में थोड़ी मात्रा में जल प्रवेश से प्रारंभ डूबे कंठ-अतिसंकुचन के कारण होता है। ऐसे मामलों में पानी फेफड़े में प्रवेश नहीं करता है और डूबने का आदर्श संकेत अनुपस्थित रहता है।" माइल्स के अनुसार 20 से 40% डूबने के मामले इस वर्ग के हैं। यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि स्वरतंत्र में औचक बन्दी का शव-परीक्षण से पता लगना संभव नहीं होता।

- (घ) यह पूछे जाने पर कि क्या उन्होंने च्योदीज मेडिकल ज्यूरिसप्रुडेन्स और टॉक्सिकोलॉजी की किताब पढ़ी थी उन्होंने कहा कि पूरी तरह नहीं पढ़ी थी। पुनः यह पूछे जाने पर कि क्या उपाधिग्रहण के पश्चात् पिछले बीस वर्षों में क्या उन्होंने पढ़ा था, उन्होंने फिर टालते हुए कहा कि वह रोज शव-परीक्षण करते रहे हैं।
- (ङ) उन्होंने गवाही दिया कि वह एक नेत्रविज्ञानी हैं।
- (च) विभिन्न प्रकार के डूबने के बारे में पूछने पर वह निरुत्तर रहे-यथा - 1. गीला-डूब - मीठे या नमकीन पानी में। 2. शुष्क-डूब 3. परोक्ष-डूब तथा 4. निमज्जन संलक्षण या हाइड्रोक्युस (ठंडे पानी में डूबना)
- (छ) उनसे पूछा गया कि क्या वह यह जानते थे कि अचेतन अवस्था में श्वास नली में काफी कम पानी प्रवेश करता है, यदि किसी व्यक्ति को डूबते समय आघात या मूर्छा से वेहोश कर दिया जाये, तो वह तली तक जाता है और एक बार वह कुछ ऊपर तक भी उठ सकता है पर अक्सर बिना हाथ पैर मारे डूब जाता है। ऐसे मामलों में श्वासन नली में काफी कम पानी प्रवेश करता है और जिसका शव-परीक्षण के समय पता करना बेहद मुश्किल होता है। उन्होंने यह कहकर कि पेट में पानी नहीं था इस प्रश्न का उत्तर टाल दिया।
- (ज) उन्होंने पारिक की च्चेक्सट बुक ऑफ मेडिकल ज्यूरिसप्रुडेन्स, फोरेन्सिक मेडिसिन एवं टॉक्सिकोलॉजी नामक किताब को नहीं पढ़े जाने की बात स्वीकारी, जिसमें डूबने की प्रक्रिया के साथ शुष्क डूब तथा निमज्जन संलक्षण, अचेतन का आप्लावन और लगभग डूब या परोक्ष डूब संलक्षण के बारे में लिखा था।
- (झ) यह पूछे जाने पर कि वह शव-परीक्षण बिना दिमाग लगाए यांत्रिक तरीके से एवं बिना मेडिकल ज्यूरिसप्रुडेन्स एवं टॉक्सिकोलॉजी के सामयिक ज्ञान के करते थे उन्होंने जबाब दिया कि उन्होंने दिमाग तो लगाया था पर इस विषय में उनका ज्ञान अद्यतन नहीं हो सकता है।
- (ञ) शव सड़े हुए दुर्गन्धयुक्त थे एवं इसे निष्प्रभावी करने का कोई तरीका नहीं था। अतएव, इन बदबूदार शवों के पास जाकर विच्छेदित करना किसी के लिए भी मुश्किल था। वह मास्क एवं टोपी पहने हुए थे। एक चतुर्थ वर्गीय, कर्मचारी जिसे अनुभव के सिवा शव-परीक्षण में या मेडिकल साइन्स में कोई डिग्री या डिप्लोमा नहीं था, ने उनके निर्देशन में शव का विच्छेदन किया।
- (ट) चार भिन्न विशेषज्ञों द्वारा अनुमोदित शव परीक्षण के चार तकनीक के नाम पूछे जाने पर उन्होंने इसकी जानकारी नहीं होने की बात स्वीकारी।
- (ठ) उन्होंने इस बात पर आंशिक सहमति जताई कि एक भी शव-परीक्षण तकनीक के नाम की जानकारी के बिना बराबर शव परीक्षण आशंकापूर्ण था।
- (ड) यह पूछे जाने पर कि ऐसे शव-परीक्षा प्रतिवेदन का मूल्य उसके लिये प्रयोग किये गये कागजात के बराबर भी नहीं है उन्होंने जबाब को टाला और कहा कि उनकी जानकारी में यह सही था।
- (ढ) उन्होंने किसी प्रभाव में आकर मृत्यु का कारण लिखे जाने से इंकार किया।

(ण) हजारीबाग उपायुक्त के मौखिक आदेश पर अपराह्न 7.00 से 8.00 बजे के बीच शव-परीक्षण किया गया था।

सभी 6 डॉक्टर अदालत के हॉल में उपस्थित थे और यह पूछे जाने पर कि शव-परीक्षण की चार विधि को यदि कोई जानते हों तो सामने आयें, कोई भी सामने नहीं आया। फिर यह पूछे जाने पर कि यदि चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी से किसी ने ऐसा सहयोग नहीं लिया था तो सामने आयें, कोई सामने नहीं आया।

डॉ. सी.पी. चौधरी, सदर अस्पताल, हजारीबाग:

डॉ. चौधरी ने गवाही दिया कि-

(क) वह एक शिशु रोग विशेषज्ञ हैं और देहान्त के 3 से 7 दिनों के पश्चात् शव-परीक्षण किया।

(ख) घोट मृत्यु-पूर्व के थे।

(ग) मृत्यु रक्तस्राव एवं प्रघात के कारण हुई थी।

(घ) उन्हें यह जानकारी थी कि यदि किसी की मृत्यु प्रघात के कारण हुई हो तो पानी के अन्दर भी कोई व्यक्ति पानी नहीं पी सकता है और इसपर सहमति जताई कि उल्लेखित घोट इतनी गहरी थी कि तत्काल मृत्यु हो गयी होगी क्योंकि हृदय फट गया था। उन्हें यह मालूम था कि शुष्क-डूब नामक कोई चीज होती है।

(ङ) खान में सुनामी जैसे पानी के प्रवेश से सदमा के कारण शुष्क-डूब से मृत्यु की संभावना हो सकती थी।

डॉ. विमोद नारायण, सदर अस्पताल, हजारीबाग:

डॉ. नारायण ने गवाही दिया कि-

(क) वह एक नेत्र रोग विशेषज्ञ हैं और उन्हें 22 वर्षों का अनुभव प्राप्त है।

(ख) वो इसपर सहमत हुए कि यदि कोई अचेत व्यक्ति पानी के बड़े विस्फोट से धक्का खाता है तो वह पानी बिल्कुल नहीं पी सकता। उन्होंने इस बात पर सहमति जताई कि पानी अपने साथ मानव शरीर को भी बहा ले जा सकता है।

(ग) डूबने की विभिन्न विधियों के सम्बन्ध में पूछने पर वह इसके मात्र दो प्रकार के बारे में कह सके और कहा कि सूखे डूब में कण्ठच्छद् बन्द हो जाता है और जब यह होता है तो श्वासनली संकुलित हो जाती है, लेकिन इस मामले में श्वासनली संकुलित नहीं हुई थी।

(घ) सभी चार मामलों, जिनके उन्होंने शव परीक्षण किये, में सड़ने की शुरुआत हो चुकी थी और सभी चारों मामलों में उन्होंने एक ही भाषा और शब्द का प्रयोग किया और मृत्यु का कारण भी वही था।

(ड) उन्होंने परीक्षण के लिए कोई आन्त्र-अंश नहीं भेजा।

डॉ. एस. पी. सिन्हा, सदर अस्पताल, हजारीबाग:

डॉ. सिन्हा ने गवाही दिया कि-

- (क) उन्होंने पैथोलॉजी में डिप्लोमा किया है और दो शवों का परीक्षण किया और मृत्यु का कारण प्रघात था।
- (ख) वे शव-परीक्षण के समय मोदीज टॉक्सिकोलॉजी किताब के 1992 का संस्करण पढ़ा करते हैं।
- (ग) शव का सड़ना शुरू हो गया था। उन्होंने इस बात पर सहमति जताई कि शुष्क-डूब में मानव शरीर पानी नहीं खींचता है और इसे छाती की कोटर में श्वासनली या फेफड़े में संग्रह करता है। शुष्क-डूब में फेफड़े और पेट पानी से नहीं भरे रहते हैं।
- (घ) जल के आकस्मिक प्रवाह के कारण शिरा-तंत्र-अवरोध (vagal inhibition) की व्याख्या करने के लिए कहे जाने पर उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने- शिरातंत्र-अवरोध के पैराग्राफ को मोदीज ज्यूरिसप्रुडेंस एण्ड टॉक्सिकोलॉजी, (23 वाँ संस्करण) के पृष्ठ सं.-602 को पढ़ा जिसमें यह लिखा है कि शिरातंत्र-अवरोध से डर कर अचानक हृदयारोध होता है और यह पानी में अचानक व असंभावित गिरने से पानी के छाती व पेट के गर्त से टकराने पर होता है। नाक की झिल्ली पर ठंडे पानी की आकस्मिक टक्कर से शिरातंत्र-अवरोध हो सकता है। बर्फीले पानी (4.7° से.) पर तैरने की क्षमता, दुबले व्यक्ति में श्वसन प्रतिक्रिया में वृद्धि से उत्पन्न श्वासहीनता के कारण और मोटे व्यक्ति में शरीर का तापमान अत्यधिक गिर जाने के कारण, गर्म जल की अपेक्षा कम होती है इस प्रक्रिया में ठंडे जल में तत्काल मृत्यु की व्याख्या की जा सकती है। 6 मार्च, 1968 को पोटोमेक नदी में नौ सेवा कर्मियों की बर्फीले पानी में मृत्यु हो गई थी।
- (ड) उन्होंने माना कि वह निश्चितता के साथ नहीं कह सकते हैं कि मृत्यु सिर्फ चोट के कारण ही हुई थी। शुष्क-डूब व शिरातंत्र अवरोध की अन्य संभावनाएँ भी मृत्यु का कारण हो सकती थी।

डॉ. आर. के. गुप्ता, सदर अस्पताल, हजारीबाग

डॉ. गुप्ता ने गवाही दिया कि-³

- (क) उनका 15-16 साल का अनुभव है, वह बाल-रोग में एम. डी हैं और (दो) शवों का उन्होंने परीक्षण किया है दोनों की मृत्यु का कारण प्रघात था। उनके पास टॉक्सिकोलॉजी में कोई डिप्लोमा या डिग्री नहीं है।
- (ख) उन्होंने माना कि जब उन्हें शव-परीक्षण के लिए कहा गया था तब तक शव बहुत ज्यादा खराब हो चुके थे।

- (ग) उन्होंने माना मृत्यु के कारण तक पहुँचने में कुछ मुश्किलें थी।
- (घ) उन्होंने स्वीकार किया शव-परीक्षण को वैज्ञानिक तरीके से करने में सक्षम होने के लिए उन्होंने मेडीकल ज्युरिसप्रुडेंस एवं टॉक्सिकोलॉजी की किताब पूरी तरह नहीं पढ़ी थी।
- (ङ) उन्होंने यह माना कि जल विस्फोट का अत्यधिक प्रहार शरीर में वैसा ही चोट का कारण हो सकता है जैसा कि धार रहित वस्तु से होता है।

डॉ. विनय कुमार, सदर अस्पताल, हजारीबाग:

डॉ. कुमार ने गवाही दिया कि वह एक शिशु रोग विशेषज्ञ हैं और मृत्यु के 7-10 दिन के बाद दो शवों का परीक्षण किया था, जिसकी मृत्यु का कारण रक्तस्राव और प्रघात था। उन्हें विभिन्न प्रकार से डूबने की जानकारी नहीं थी।

श्री राहुल गुहा, खान सुरक्षा उप महानिदेशक(मध्य अंचल), धनबाद और तत्कालीन खान सुरक्षा निदेशक, राँची क्षेत्र:

श्री गुहा ने गवाही दिया कि -

- (क) को.खा.वि., 1957 के विनियम 100(1) के अन्तर्गत अनुमति जारी करने के लिए उन्हें क्षेत्रीय खान निरीक्षक के रूप में अधिकार प्राप्त था।
- (ख) जलप्लावन के खतरे के प्रति सतर्कता बरतने के लिए अनुमति पत्र में उन्होंने आवश्यक शर्तों को शामिल किया था।
- (ग) पैनल सीमा के अन्तर्गत निर्धारित संख्या में पिलरों के लिए अनुमति जारी की गयी थी।

श्री एस. के. मंडल, खान सुरक्षा उप-निदेशक, पूर्वी अंचल, सीतारामपुर, तत्कालीन खान सुरक्षा उपनिदेशक, राँची क्षेत्र:

श्री मंडल ने गवाही दिया कि -

- (क) अनुमति की सिफारिश करने के पूर्व उन्होंने खान का निरीक्षण नहीं किया था;
- (ख) प्रबंधन द्वारा प्रस्तुत सूचनाओं के आधार पर अनुमति प्रदान करना नियमित व्यवहार में था।

श्री उमेश शर्मा, परियोजना अधिकारी /अभिकर्ता, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी (निलम्बनाधीन):

श्री शर्मा ने गवाही दिया कि उन्होंने उत्पादन एवं उत्पादकता से ज्यादा महत्व सुरक्षा को दिया।

श्री अजय कुमार, निदेशक (कार्मिक), सी.सी.एल:

श्री अजय कुमार ने यह गवाही दिया कि वह पैनल सं.-11 की अनुमति के संबंध में कुछ भी नहीं जानते हैं और वे इस बात पर सहमत नहीं थे कि कार्मिक निदेशक के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में सुरक्षा एक थी। कार्मिक निदेशक के रूप में वे खनन क्षेत्र की सुरक्षा के लिए जिम्मेवार थे क्योंकि

सुरक्षा कार्यवाही के रूप में विधि व्यवस्था की समस्याएँ उनके अधीन थी; लेकिन भूमिगत खान में सुरक्षा का मामला उनके अधीन नहीं है।

श्री मो. तसलीम, महाप्रबंधक, सी.सी.एल (निलम्बनाधीन):

श्री तसलीम ने गवाही दिया कि-

- (क) महाप्रबंधक की हैसियत से अपने कार्यकाल में वह खान में अनेक बार गए थे और दुर्घटना के बाद बचाव कार्य में हिस्सा भी लिया था।
- (ख) भूमिगत कार्य स्थल में 21 लेवल के उपर जहाँ तक पानी पहुँचा था, कोई भी सम्पत्ति नष्ट नहीं हुई थी।
- (ग) अनुमति पत्र उनके द्वारा नहीं देखा गया था।
- (घ) खान मापचित्र पर सर्वेक्षक ने हस्ताक्षर किया था कि नहीं, यह उन्हें याद नहीं था।
- (ङ) उन्होंने इस बात की पुष्टि नहीं की थी कि जिस बोर होल से पानी आ रहा था वह हाथीदारी सीम से जुड़ा हुआ था वल्कि दूसरो पर सिर्फ विश्वास किया और भूमिगत बोरिंग मशीन, जिसे इस खान में लाया गया था को दूसरे खान में विस्थापित कर दिया गया।

श्री गोपाल प्रसाद, उप मुख्य खनन अभियंता, सी.एम.पी.डी.आई.एल:

श्री प्रसाद ने गवाही दिया कि यदि सांविधिक प्रावधानों के साथ सी.एम.पी.डी.आई.एल. द्वारा तैयार व्यवसायिक योजना का अनुकरण किया गया होता, तो यह दुर्घटना नहीं घटती।

श्री कृष्ण मुरारी, प्रबंधक, (अनुमति के लिये आवेदन देते समय):

5

श्री मुरारी ने यह गवाही दिया कि पैनल सं.-11 एक स्थानपत्र पैनल था और चूकि पम्पिंग दर धीमी थी, अतएव जलनिकासी पूर्ण होने के पहले उन्होंने अनुमति प्रदान के लिये आवेदन दिया था।

श्री एस. चौधरी, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, सी.एम.पी.डी.आई.एल.:

श्री चौधरी ने गवाही दिया कि -

- (क) कोयला मंत्रालय, भारत सरकार, द्वारा नियुक्त विभागीय जाँच समिति के विचारार्थ विषय के तीन खंड थे:
 - (i) दुर्घटना का कारण,
 - (ii) सी.सी.एल के किसी अधिकारी की लापरवाही और
 - (iii) बचाव कार्य में किसी प्रकार का विलम्ब।

(ख) वे खनन अभियंत्रण में स्नातक के साथ प्रथम श्रेणी प्रबंधक (कोयला) प्रमाण-पत्र धारी पोखरिया

खनन में स्नातकोत्तोर उपाधि प्राप्त सात वर्षों के व्यवहारिक अनुभव के साथ साढ़े तीन दशक से कोयला उद्योग से जुड़े हुए थे।

- (ग) श्री एल. झा खनन अभियंत्रण में स्नातक थे और 30 वर्षों से भी अधिक का व्यवहारिक अनुभव था।
- (घ) श्री सलीमुद्दीन खनन उद्योग में करीब 30 वर्षों के अनुभव के साथ एक कार्मिक के रूप में थे;
- (ङ) श्री एन. प्रसाद एक खनन अभियंता थे और उन्हें सी.एम.पी.डी.आई.एल. और कोयला खान दोनों का अनुभव था;
- (च) समिति ने सात बार से भी अधिक खान का दौरा किया और सी. सी. एल. के अध्यक्ष सह प्रबंधक निदेशक तथा अन्य निदेशकों सहित 29 बयान दर्ज किये;
- (छ) 18 प्रलेखों को सूचीबद्ध किया गया और उन्हें बाल्यूम -II में सम्मिलित किया गया है (7 अथवा 8 प्लान की प्रतियाँ) जबकि ग्रंथ I में 100 से अधिक पृष्ठ हैं;
- (ज) साक्ष्य से यह संकेत मिलता है कि सा.सु.म.नि. की अनुमति प्राप्त क्षेत्र से बाहर कोयला खनन किया गया;
- (झ) खान प्रबंधक द्वारा यह समझा गया कि बोर होल से पानी के प्रवाह का कम होने का अर्थ है कि उपरिशायी हाथीदारी सीम में पानी नहीं है;
- (ञ) दुर्घटना का कारण सर्वसम्मत था;
- (ट) अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक और तकनीकी निदेशक सहित अन्य के बयानों से यह संकेत मिलता है कि छत धँस गयी थी और तब पानी आया एवं यह सामान्य अवधारणा थी जो कि 26.6.2005 को बताई गयी।
- (ठ) उनके द्वारा शव-परीक्षण की रिपोर्ट दिनांक 28.6.2005 को प्राप्त किया गया और
- (ड) दुर्घटना के समय स्टेण्डिंग गोफ का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 4000 वर्ग मी. था।

श्री एम.एम. सिंह, निदेशक तकनीक, सी.सी.एल.

श्री सिंह ने गवाही दिया कि-

- (क) प्रो. ए.के. घोष, डॉ. आर.एन. गुप्ता और डॉ. एस. के. सिंह की समिति को नियुक्त करने के लिए उन्होंने जॉच-अदालत से लिखित अनुमति नहीं प्राप्त की थी;
- (ख) उन्होंने न ही कोयला मंत्रालय, भारत सरकार और न ही सी.आई.एल. से समिति की नियुक्ति के पूर्व अनुमति प्राप्त की थी;

- (ग) कोयला मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जाँच समिति की नियुक्ति के बारे में जाँच अदालत को अवगत नहीं कराया गया;
- (घ) प्रो. घोष एवं अन्य की समिति का भुगतान सी.सी.एल द्वारा किया जाएगा।
- (ङ) सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड के महाप्रबंधक, भूविज्ञान, श्री आर.के. चौधरी के अन्वेषण एवं अध्ययन पर समिति ने बहुत ज्यादा विश्वास किया।
- (च) दुर्घटना के समय हाथीदारी सीम में पानी नहीं था और
- (छ) यह पूछे जाने पर कि डूबने की अपेक्षा धाररहित चीज की चोट द्वारा 14 व्यक्तियों की मौत को साबित करने के लिए क्या वह अतिसाधारण रुचि ले रहे हैं कहा कि अदालत को गलत सूचना देने का उनका कोई इरादा नहीं था।

प्रो. अजय कुमार घोष, भूतपूर्व निदेशक, भा.ख.वि.:

प्रो. घोष ने गवाही दिया कि-

- (क) वह खान के 21 लेवल में नहीं गये थे। कार्य क्षेत्र में उनके दो सहकर्मी गए थे। उन लोगों ने पाँच बार खान का दौरा किया और वह भूमि के नीचे दो बार गए थे लेकिन दुर्घटना स्थल तक नहीं;
- (ख) उन्होंने सी.सी.एल के महाप्रबंधक, भूविज्ञान, को सेन्ट्रल साँडा खान के बालू नमूना की (शैल विज्ञान) (पेट्रोलॉजी) आधारित अध्ययन कर रिपोर्ट देने के लिए कहा था क्योंकि दुर्घटना के पहलू पेंचीदा थे जिनके स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी। उनके सहकर्मियों ने यह बताया था कि 24 लेवल के नीचे के क्षेत्र में व ईद-गिर्द मटमैले बालू का विस्तृत ढेर पाया गया था और वे यह जानना चाहते थे कि बालू कहाँ से आया था।
- (ग) उन्होंने शव-परीक्षण प्रतिवेदन का अध्ययन किया था।
- (घ) उन्होंने व्यक्तिगत तौर पर दो व्यक्तियों से पूछ-ताछ की थी जिनमें एक पंप खलासी, श्री नागेन्द्र, और दूसरा समयपाल, सत्येन्द्र सिंह, थे जो उन्हें सही और सम्बन्धित लगे;
- (ङ) हाथीदारी सीम को विगत में केबिंग विधि से डीपीलर किया गया था।
- (च) उन्होंने यह नहीं माना कि उपरिशायी सीम का पानी हाथीदारी सीम में टपक रहा था और यह भी कहा कि हाथीदारी सीम में रिसाव स्वभाविक था;
- (छ) निष्कर्षण से हुए दरार से होकर बालू नहीं आया होगा;

(ज) वायु विस्फोट की प्रचण्डता वायु विस्थापन दर पर निर्भर है;

(झ) निकास पथ के जरिये वायु विस्थापन की दर वायु विस्थापन हेतु आनेवाली सामग्री दर पर निर्भर करेगा।

(ञ) वायु विस्फोट होने के लिए छत को प्लेट की तरह कार्य करना चाहिए;

(ट) उन्होंने कभी नहीं कहा कि हाथीदारी सीम सूखा था और यह कि कुछ संस्तर जल का होना लाजिमी था।

डॉ. एस. के. सिंह, अध्यक्ष, बोर्ड एवं पिलर विभाग, केन्द्रीय खनन अनुसंधान संस्थान:

श्री सिंह ने गवाही दिया कि-

(क) उन्होंने अपना प्रतिवेदन तैयार करने के लिए शव-परीक्षण रिपोर्ट पर ध्यान दिया था;

(ख) इसकी विशेष वैज्ञानिक जाँच की आवश्यकता थी;

(ग) खान में 21 लेवल के उपर सर्पोट का कोई विस्थापन नहीं हुआ था;

(घ) प्रतिवेदन तैयार करने के लिए उन्हें कुछ पारिश्रमिक दिया जाएगा।

श्री इन्द्रदेव प्रसाद सिंह, सहायक प्रबंधक, सेंट्रल सौंदा कोलियरी (निलम्बनाधीन):

श्री सिंह ने गवाही दिया कि-

(क) छत का घँसना पिछली पारी में हुआ था जब वहाँ केवल पर्यवेक्षकगण ही उपस्थित थे। इस पारी में किसी भी प्रशासक की तैनाती नहीं की गई थी विनियम के अन्तर्गत कर्मियों को हटाने के लिये पर्यवेक्षकगण पूरी तरह समर्थ थे और यह कि दुर्घटना के दौरान वे अपने पदस्थापना स्थान से बाहर थे;

(ख) उन्होंने पर्यवेक्षकों की संविधिक प्रतिवेदन पुस्तिका में इन प्रविष्टियों को जाँच अदालत द्वारा प्रलेखों को दिखाने के क्रम में देखा था कि खतरे की संभावना है और कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 127 का उल्लंघन किया जा रहा था।

(ग) ऐसी प्रविष्टियों के संबंध में किसी ने उन्हें सूचित नहीं किया था;

(घ) वरिष्ठ अधिकारियों यथा परियोजना अधिकारी/प्रबंधक ने यह प्रमाणित किया था कि खान सुरक्षित ढंग से चल रहा था क्योंकि अपने निरीक्षण के बाद उन्होंने किसी प्रकार के असुरक्षित हालात को उजागर नहीं किया था।

परिशिष्ट - VIII

डॉ. पी. डी. शिनोंय, जाँच न्यायालय

सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी में दिनांक 15 जून, 2005 को घटित दुर्घटना के कारणों और परिस्थितियों के सम्बन्ध में

अदालत द्वारा दिनांक 19.11.2005 को खान का निरीक्षण।

.....

1. भारत सरकार, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, ने भारत के राजपत्र में दिनांक 17.10. 2005 की अधिसूचना संख्या-एस.ओ.1494 (अ) के द्वारा मेसर्स सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड की सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी में दिनांक 15 जून, 2005 को घटित दुर्घटना के कारणों और परिस्थितियों की औपचारिक जाँच करने के लिए डॉ. पी. डी. शिनोंय, पूर्व सचिव, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, की अध्यक्षता में एक जाँच न्यायालय की नियुक्ति की।
2. डॉ. पी. डी. शिनोंय, अध्यक्ष, जाँच न्यायालय तथा श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, जाँच न्यायालय के असेसर, ने सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी की बाँसगढ़ा सीम, पैनल संख्या 11 के भूमिगत कार्य स्थलों का निरीक्षण किया।
3. डॉ. शिनोंय, के साथ निम्नलिखित व्यक्ति थे:
 - 3.1 ट्रेड यूनियन की ओर से :
 - i. एटक के श्री रामेन्द्र कुमार,
 - ii. एटक के श्री शफीक खान,
 - 3.2 अधिकारी संघ की ओर से:
 - i. श्री जे. एन. सिंह,
 - 3.3 मेसर्स सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लि. की ओर से:
 - i. श्री एम. एम. सिंह, निदेशक तकनीकी,
 - ii. श्री जे. आर. शर्मा, महाप्रबंधक (सुरक्षा),
 - iii. श्री बी. डी. यादव, महाप्रबंधक बरका सयाल क्षेत्र,
 - iv. श्री सत्येन्द्र सिंह, अभिकर्ता, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी,
 - v. श्री बी. बी. सिन्हा, प्रबंधक, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी,
 - vi. श्री एम. एन. झा, बचाव अधीक्षक, रामगढ़ बचाव केंद्र,

3.4 खा सु म नि की ओर से:

- i. श्री भास्कर भट्टाचार्य, महा-निदेशक,
- ii. श्री के. के. पासी, उप-महानिदेशक (दक्षिण पूर्वी अंचल),
- iii. श्री अनूप विश्वास, निदेशक (मुख्यालय),
- iv. श्री डी. के. मल्लिक, उप-निदेशक,

3.5 प्रेस/मीडिया की ओर से:

- i. सहारा टी.वी. के रिपोर्टर,
- ii. दैनिक जागरण समाचार पत्र के रिपोर्टर इत्यादि।

4. अनुगमन मार्ग: इन्क्लाइन संख्या 17 से प्रवेश कर नीचे गये और 17 क्रॉस-कंट डिस्ट्रीक्ट (पैनल संख्या 11) में 26वें लेवल तक गए, 26वें लेवल के जंक्शन पर पानी पाया गया था। जल निकासी के लिए एक 500 गैलन प्रति मिनट (जी पी एम) का पम्प चल रहा था। निरीक्षण के पश्चात उसी मार्ग से ऊपर लौटे।
5. निरीक्षण के दौरान डा. पी.डी. शिनाय, अध्यक्ष, जॉच न्यायालय ने यूनिशन के प्रतिनिधियों, कामगारों, खान के अधिकारियों और पर्यवेक्षकों, उच्च प्रबंधन, प्रेस वालों, इत्यादि से चर्चा की।

परिशिष्ट- IX

डॉ.पी.डी.शिनाय जॉच - न्यायालय

सेन्ट्रल साँडा कोलियरी में दिनांक 15 जून, 2005 को घटित दुर्घटना के कारणों और परिस्थितियों के सम्बन्ध में

श्री रवीन्द्र शर्मा, असेसर, जॉच - अदालत द्वारा दिनांक 16.12.2005 को खान का निरीक्षण।⁸

- 1.0 परिचय: मैं दिनांक 16.12.2005 को सेन्ट्रल साँडा कोलियरी गया और खान के बाँसगढ़ा सीम के उन कार्य-स्थलों का निरीक्षण किया जहाँ 15 जून, 2005 को (14 जून 2005 की तीसरी पाली में) दुर्घटना घटी थी। निरीक्षण के दौरान मेरे साथ सर्व श्री एम. एम. सिंह, निदेशक तकनीकी (संचालन), मेसर्स सी. सी. एल., बी. के. सिन्हा, निदेशक तकनीकी (परियोजना एवम् योजना) मेसर्स सी. सी. एल., जे. आर. शर्मा, महा प्रबंधक (सुरक्षा एवम् बचाव), बी. डी. यादव, महाप्रबंधक, बरका-सयाल क्षेत्र, सत्येन्द्र सिंह, अभिकर्ता, सेन्ट्रल साँडा कोलियरी, बी. एस. सिन्हा, प्रबंधक, सेन्ट्रल साँडा कोलियरी, रमेन्द्र कुमार, महासचिव, एटक, के. के. पासी, उप-महानिदेशक, (दक्षिण-पूर्वी अंचल), खा.सु.म.नि., के. नागेश्वर राव, खान सुरक्षा निदेशक और जी. विजय कुमार, खान सुरक्षा उपनिदेशक थे।

2.0 खान के बारे में सामान्य सूचना:

- 2.1 स्थिति: सेन्ट्रल साँडा कोलियरी, झारखण्ड राज्य के हजारीबाग जिले में पतरातू पुलिस थाना के अधिकार क्षेत्र में स्थित है। यह राँची से सड़क द्वारा 75 कि. मी. की दूरी पर है।

2.2 **स्वामित्व:** खान का स्वामित्व कोल इण्डिया लिमिटेड की सहायक मेसर्स सेन्ट्रल कोलफिल्डस् लिमिटेड के पास है।

2.3.0 प्रबंधन:

2.3.1 खान के स्तर पर खान का प्रबंधन एक परियोजना अधिकारी (अभिकर्ता) तथा एक प्रबंधक द्वारा किया जाता है। सुरक्षा अधिकारी, सहायक प्रबंधकगण, पर्यवेक्षी पदाधिकारी और सक्षम व्यक्ति उनकी सहायता करते हैं।

2.3.2 क्षेत्रीय स्तर पर खान का प्रबंधन महा प्रबंधक द्वारा किया जाता है, क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारी तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी उनकी सहायता करते हैं।

2.3.3 निगम स्तर पर खान का प्रबंधन निदेशक मण्डल द्वारा किया जाता है जो कि अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक और निदेशक तकनीकी (ओ.पी), जिसे खान के मालिक के रूप में नामित किया गया था, सहित चार कार्यकारी निदेशकों से बना है।

3.0 खान के कार्यस्थल:

3.1 **बाँसगढ़ा सीम:** बाँसगढ़ा सीम जिसमें, दुर्घटना हुई थी, लगभग 4.9 मी. मोटी व 5 में 1 की दर से दक्षिण 74रूपश्चिम दिशा में झुकी हुई है। दुर्घटना के दिन इस सीम के पैनल संख्या 11 में केविंग विधि से स्तम्भ (पीलर) निष्कर्षण का कार्य किया जा रहा था।

3.2 **उपरिशायी तथा अधिशायी सीम:** उपरिशायी सीमों में पूर्व में केविंग/स्टोविंग विधि से कार्य किया गया था अथवा उन्हें स्तम्भ बनाकर छोड़ दिया गया है और वर्तमान समय में वे अगम्य हैं। अधिशायी सीमों में स्तम्भ युक्त/अक्षत हैं।

3.2.1 उपरिशायी तथा अधिशायी सीम के कार्य-स्थलों की स्थिति नीचे दर्शायी गई है:-

मोटाई		सीम/विभाजन	अभ्युक्तियाँ
20.0 मी.			
5.3 मी.	\\\\\\\\\\\\\\\\	कुरसे सीम	धँसी हुई
17.0 मी.		विभाजन	
7.3 मी.	////////	ऊपरी नकारी	धँसी हुई/पीलर पर (आग के कारण परित्यक्त)
3.0 मी.		विभाजन	
2.0 मी.	\\\\\\\\\\\\\\\\	निचली नकारी सीम	पीलर पर
21.0 मी.		विभाजन	
4.0 मी.	////////	ऊपरी सेमाना सीम	अंशतः बालू भरी (आग के कारण परित्यक्त)
1.7 मी.		विभाजन	
3.6 मी.	\\\\\\\\\\\\\\\\	निचली सेमाना सीम	बालू भरी
46.0 मी.		विभाजन	
3.6 मी.	////////	हाथीदारी सीम	धँसी/बालू भरी/पीलर पर

26.0 मी.		विभाजन	
4.9 मी.	\\\\\\\\\\\\\\	बाँसगढ़ा सीम	14.6.2005 को डिपीलर की जा रही थी
56.0 मी.		विभाजन	
1.9 मी.	////////	बाँसगढ़ा ए सीम	विकसित की जा रही है
51.0 मी.		विभाजन	
6.7 मी.	\\\\\\\\\\\\\\	ऊपरी सिरका सीम	पीलर पर
15.5 मी.		विभाजन	
2.5 मी.	////////	निचली सिरका सीम	पीलर पर/अक्षत

4.0 बाँसगढ़ा सीम के कार्य-स्थलों का निरीक्षण :

4.1 अनुगमन मार्ग: मैं नम्बर 17 इन्क्लाइन में 17 क्रॉस-कट तक गया, 17 क्रॉस-कट में 28वें लेवल तक गया और पैनल संख्या 11 के कार्य-स्थलों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के पश्चात मैं उसी मार्ग से वापस सतह पर लौटा।

4.2 अवलोकन:

4.2.1 बलुआ पत्थर के बड़े - बड़े शिलाखण्ड निम्नलिखित स्थानों पर पाए गए:

- लगभग 3.2 मी. X 2.9 मी. X 1.6 मी. आकार का एक शिलाखण्ड 25वें लेवल और 17वें क्रॉस-कट के संगम (जंक्शन) पर,
- लगभग 3.5 मी. X 2.0 मी. X 1.0 मी. आकार का एक शिलाखण्ड 25वें लेवल और 17वें क्रॉस-कट में,
- लगभग 6.2 मी. X 5.4 मी. X 2.0 मी. आकार का एक शिलाखण्ड 16 वें क्रॉस-कट और 27वें दक्षिणी लेवल के संगम (जंक्शन) पर।

4.2.2 17वें क्रॉस-कट और 27वें लेवल के संगम पर पटरी मुड़ी हुई/क्षतिग्रस्त पाई गई।

4.2.3 17वें क्रॉस-कट और 27वें लेवल के संगम पर छः टब पूरी तरह क्षतिग्रस्त/विकृत पाए गए।

4.2.4 उस क्षेत्र में कई स्थानों पर कीचड़ में सने हुए बालू के ढेर पाए गए।

4.2.5 17वें क्रॉस-कट में 28वें लेवल के नीचे डीप साइड में कार्य स्थल डूबे हुए पाए गए।

4.2.6 16वें क्रॉस-कट के 27वें लेवल में गोफ किनारे के शिलाखण्ड देखे गए थे।

4.3 निरीक्षण के दौरान¹⁰ शिलाखण्डों, क्षतिग्रस्त टबों, पटरी, गोफ किनारे के पत्थरों के लिए गए छाया चित्र संलग्न हैं।

ह.

(रवीन्द्र शर्मा)

असेसर, जॉच-न्यायालय

परिशिष्ट - X

क्षतिपूर्ति ब्योरा

क्रम सं०	मृतक	व्यवसाय	कर्मकार प्रतिपूर्ति और अनुग्रह राशी रु.	भुगतान की तिथि	जिन्हें रोजगार दिया गया
1.	श्री राम बृक्ष राम	लोडर	3,26,140 +25,000	19.06.2005	राम जनम कुमार (पुत्र)
2.	श्री भोला	लोडर	3,51,080 +25,000	19.06.2005	श्याम नारायण राजभर (पुत्र)
3.	श्री जीतराम मांझी	लोडर	4,11,000 +25,000	20.06.2005	श्रीमती एतवारी देवी (पत्नी)
4.	श्री शंभुनाथ भुईया	ओवरमैन	2,85,380 +25,000	20.06.2005	श्रीमती बंगोबाला भुईयां (पत्नी)
5.	श्री किशुन महतो	लोडर	4,27,140 +30,000	20.06.2005	श्रीमती तिलवा देवी (पत्नी)
6.	श्री शिकाकरी मांझी	लोडर	3,12,840 +25,000	20.06.2005	भगवान दास मुर्मू (पुत्र)
7.	श्री देवा साव	लोडर	2,42,100 +10,000	23.06.2005	रवीन्द्र साव (पुत्र)
8.	श्री सुभाष सेठी	लोडर	2,56,660 +25,000	24.06.2005	सोहन सेठी (पुत्र)
9.	श्री मैनेजर राम	लोडर	3,26,140 +25,000	27.06.2005	राम प्रसाद राम (पुत्र)
10.	श्री भीमो सेठी	लोडर	2,56,660 +25,000	27.06.2005	रामलाल (पुत्र)
11.	श्री बालकू महतो	लोडर	2,85,360 +25,000	28.06.2005	जलेश्वर यादव (पुत्र)
12.	श्री हरिहर साव	लोडर	2,42,100 +25,000	28.06.2005	नारायण साव (पुत्र)
13.	श्री लक्ष्मण मुण्डा	लोडर	2,42,100 +25,000	29.06.2005	महावीर कुमार मुण्डा (पुत्र)
14.	श्री बूधन महतो	सरदार	2,42,100 +25,000	29.06.2005	जयेन्द्र कुमार (पुत्र)

ANNEXURE - XI



CENTRAL SAUNDA COLLIERY
 PART PLAN OF HATIDARI SEAM, TRACED FROM PLAN NO. 194, STATIONING 344
 OUTLINE OF PANEL NO. 11 (BANSAGARHA SEAM) AND OUTLINE OF
 PROBABLE WATER CATCHMENT AREA. SCANNED AND REDUCED
 NOT TO SCALE.

PREPARED BY
 (SOURAV ROY) (GORAKH SINGH)
 SURVEYORS, D.G.M.S. DHANBAD

TRACED BY
 CHANDAN ORRAN
 HEAD DRAUGHTSMAN

सेवा में,

माननीय जॉच न्यायालय,

सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी।

प्रिय महोदय,

असेसर के मौखिक निदेशानुसार हम, एतद्वारा, दिनांक 15.06.2005 को सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी के बाँसगढ़ा इन्क्लाइन में घटित दुर्घटना के संबंध में, संलग्न प्लान में हरे रंग की बिन्दु रेखा से दर्शाए गए क्षेत्र में, अनुमानित रिक्त स्थान और जल की मात्रा का परिकलन प्रस्तुत कर रहे हैं।

1. विकसित क्षेत्र:

1591 मी. (गैलरियों की कुल लम्बाई) X 4.5 मी. (गैलरी की औसत चौड़ाई) X 3 मी.

(गैलरी की औसत ऊँचाई)

= 21,478.5 घन मी. □ 21,478.5 X 220 गैलन =

□ 4.725 मिलियन गैलन(I)

2. डिपीलर किया गया क्षेत्र:

आकार संख्या	आकार का प्रकार	परिमाण (मी. में)	क्षेत्रफल (वर्ग मी. में)
1	आयत	25 X 22	550.00
2	त्रिभुज	द्व X 80 X 40	1600.00
3	त्रिभुज	द्व X 25 X 15	187.50
4	समानान्तर चतुर्भुज	67X (37+42+38+50)/4	2795.25
5	त्रिभुज	द्व X 47 X 16	376.00
6	विषम चतुर्भुज	(80 +70)/2 X 28	2100.00
7	आयत	135 X (38 + 37+ 41+ 42)/4	5332.50
8	आयत	25 X (29 + 30 + 31)/3	750.00
9	आयत	25 X 13	325.00
10	आयत	27 X 5	135.00

कुल 14,151.25 वर्ग मी.

कुल परिमाण = 14151.25 X 3.6 (गैलरी की औसत ऊँचाई) X 60%

(परिकल्पित रिक्त स्थान)

= 30, 566.70 घन मी.

जल की मात्रा (गैलन में) = 30,566.70 X 220 □ 6724674 गैलन

□ 6.725 मिलियन गैलन(II)

विकसित और डिपीलर किए गए दोनों क्षेत्र में जल का कुल परिमाण = (I) + (II)

= 4.725 + 6.725 = 11.45 मिलियन गैलन

(डिपीलर क्षेत्र में 60% रिक्त स्थान लिए जाने पर)

अवलोकन तथा आदेश हेतु प्रस्तुत।

भवदीय

ह०

गोरख सिंह

ह०

सौरभ राय

सर्वेक्षक (मुख्यालय)

खा सु म नि, धनबाद।

परिशिष्ट - XIII

शव-परीक्षण रिपोर्ट में उल्लिखित मृत्यु का कारण और अप-मृत्यु रिपोर्ट में उल्लिखित चोटों की तालिका:

क्रम सं०	मृतक का नाम	पदनाम	शव परीक्षक का नाम	शव परीक्षा संख्या	शव परीक्षा तिथि	अप मृत्यु रिपोर्ट में उल्लिखित चोटें	शव-परीक्षा के अनुसार मृत्यु के कारण
1.	श्री राम बृक्ष राम	लोडर	डॉ० ए. के. सिन्हा	227067	19.06.2005	पानी में डूबे रहने के कारण शरीर फूल गया और चेहरे की चमड़ी निकल गई।	कठोर, मोथरे और भारी पदार्थ से हुए प्रघात एवम् रक्तस्राव।
2.	श्री मोला	लोडर	डॉ० सी. पी. चौधरी	227068	19.06.2005	पानी में डूबे रहने के कारण शरीर फूल गया और चेहरे की चमड़ी निकल गई तथा सिर पर चोट के निशान।	-वही-
3.	श्री जीतराम मांझी	लोडर	डॉ० विनोद नारायण	227083	20.06.2005	शरीर फूला हुआ, हाथ पैर ढीले और चेहरा क्षतिग्रस्त	कठोर, और भारी पदार्थ से हुए प्रघात एवम् रक्तस्राव के कारण।
4.	श्री शम्भाधु भुईया	ओवरमैन	डॉ० विनोद नारायण	227082	20.06.2005	-वही-	-वही-
5.	श्री किशुन महतो	लोडर	डॉ० विनोद नारायण	227081	20.06.2005	-वही-	-वही-
6.	श्री शिकारी मांझी	लोडर	डॉ० विनोद नारायण	227080	20.06.2005	-वही-	-वही-
7.	श्री देवा साव	लोडर	डॉ० एस. पी. सिन्हा	227079	23.06.2005	पानी व कीचड़ में डूबे रहने के कारण फूला हुआ शरीर।	कठोर, मोथरे और भारी पदार्थ से हुए प्रघात एवम् रक्तस्राव के कारण।
8.	श्री सुभाष सेठी	लोडर	डॉ० एस. पी. सिन्हा	227078	24.06.2005	-वही-	-वही-
9.	श्री मेनेजर राम	लोडर	डॉ० आर. के. गुप्ता	227074	27.06.2005	पानी व कीचड़ में डूबे रहने के कारण कई जगह की चमड़ी ढीली पड़ गई थी।	प्रबल, कठोर, तथा मोथरे पदार्थ से अनेक स्थानों से हुए प्रघात एवम् रक्तस्राव के कारण।
10.	श्री भीमो सेठी	लोडर	डॉ० आर. के. गुप्ता	227073	27.06.2005	पानी में डूबे रहने के कारण चमड़ी ढीली पड़ गई थी।	-वही-
11.	श्री बालकू महतो	लोडर	डॉ० विनय कुमार	227461	28.06.2005	भूमिगत खदान में छत के गिरने व पानी तथा कीचड़ में डूबे रहने के कारण शरीर फूल गया और चमड़ी व मांस-पेशीयों ढीले पड़ कर अलग हो गए।	कठोर, मोथरे और भारी पदार्थ से हुए प्रघात एवम् रक्तस्राव के कारण।
12.	श्री हरिहर साव	लोडर	डॉ० विनय कुमार	227460	28.06.2005	-वही-	-वही-
13.	श्री लक्ष्मण मुण्डा	लोडर	डॉ० सी. पी. चौधरी	227453	29.06.2005	-वही-	-वही-
14.	श्री बृधन महतो	सिरदार	डॉ० ए. के. सिन्हा	227457	29.06.2005	-वही-	-वही-

परिशिष्ट - XIV

पंजीकृत

भारत सरकार
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय
खान सुरक्षा महानिदेशालय

दूरभाष+ 91651 2280141

फैक्स +91651 2280145

संख्या - आर.आर/1039/पर्म 100(1)/03/2930

राँची, दिनांक 23.11.2003

प्रेषक

खान सुरक्षा निदेशक,
राँची क्षेत्र, खा.सु.म.नि.,
"मानस", राँची हिल के सामने,
रातू रोड, राँची- 834001

सेवा में,
अभिकर्ता,
सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी;
मेसर्स सी. सी. एल.,
पो.-सी.सी.एल.सौंडा, जिला-हजारीबाग (झारखण्ड)

विषय: सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी के बाँसगढ़ा सीम, में पैनल सं.11 के पीलरों की निकासी केविंग विधि से करने की अनुमति तथा क्रम बद्ध सपोर्ट नियमावली (एस.एस.आर.) का अनुमोदन।

प्रिय महोदय,

कृपया अपने पत्र संख्या - सी. एस./पी. ओ./पर्म/ बाँग/03/568 दिनांक 13.03.2003 तथा उसके साथ संलग्न मापचित्रों /संस्तर क्रम /प्रारूप एस. एस. आर. का संदर्भित करें।

2.0 मामले का परीक्षण, आपके द्वारा दी गई सूचना और प्रस्तुत किए गए मापचित्रों और संस्तर क्रम (सेक्सनों) में दर्शायी गई सूचना के आधार पर, किया गया।

कोयला खान विनियम, 1957 के विनियम 100 (1) के अन्तर्गत मुख्य खान निरीक्षक (खान सुरक्षा महानिदेशक के रूप में भी पदनामित) को प्रदत्त शक्तियों के आधार पर तथा मुख्य खान निरीक्षक (खान सुरक्षा महानिदेशक के रूप में भी पदनामित) द्वारा खान अधिनियम, 1952 की धारा 6 (1) के अन्तर्गत प्रदत्त अधिकार के आधार पर मैं एतद् द्वारा नीचे दी गई शर्तों के अधीन बाँसगढ़ा सीम के पैनल संख्या - 11, जैसा आपके द्वारा प्रस्तुत मापचित्र संख्या 246 दिनांक 30.03.2003 में दर्शाया गया है, में केविंग विधि से पीलरों के निकासी की अनुमति देता हूँ।

3.0 मुझे प्रदत्त शक्तियों के आधार पर, मैं,

- (क) विनियम 108 के अन्तर्गत एतद् द्वारा प्रबंधक द्वारा प्रस्तुत प्रारूप क्रम बद्ध सपोर्ट नियमावली को संशोधनों के साथ अनुमोदित करता हूँ। अनुमोदित (एस.एस.आर.) की दो प्रतियाँ आवश्यक कार्यवाही के लिए संलग्न हैं। इन्हें प्रबंधक द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित किया जाएगा और ऐसी एक हस्ताक्षरित प्रति को रिकार्ड के लिए इस निदेशालय को लौटाना होगा और
- (ख) इसके अतिरिक्त, विनियम 118 ए (4) के उपबन्ध के अन्तर्गत आपके द्वारा विनियम 118 ए (1) (क) (ग) और (घ) के प्रावधानों के अनुपालन की अपेक्षा है।

4.0 इस संबंध में आपका ध्यान विशेष रूप से निम्नलिखित बातों की ओर आकर्षित किया जाता है:

- (क) विनियम 100 (5) के साथ पठित इस महानिदेशालय के तकनीकी परिपत्र संख्या 2 वर्ष 1988 जो कि गोफ में छत के किसी खतरनाक ओवर हैंगिंग के कारण होने वाले वायु विस्फोट की किसी संभावना से उत्पन्न खतरों को कम करने के लिए बरती जाने वाली सावधानियों के संबंध में है;
- (ख) विनियम 112 (1) (ग) के साथ पठित इस महानिदेशालय के तकनीकी परिपत्र संख्या 11 वर्ष 1959 जो कि धँसने की संभावना वाले सतही क्षेत्र की घेराबंदी करने के संबंध में है;
- (ग) विनियम 118 ए (1)
 - खण्ड (क) पैनलों/सब पैनलों के निर्धारण के संबंध में सीम की उद्भवन अवधि (इन्क्यूवेशन पीरियड) को ध्यान में रखना जो की नौ माह है।
 - खण्ड (ग) के साथ पठित इस महानिदेशालय के तकनीकी परिपत्र संख्या 3 वर्ष 1988 खण्ड (ग) जो कि पैनलों/सब पैनलों के चारों ओर तैयार किए जाने वाले पृथक्करण (आइसोलेसन)/प्रारंभिक (प्रिपरेटरी) दिवारों (स्टोपिंग)/ के विनिर्माण इत्यादि के मानकों से संबंधित है।
 - खण्ड (घ) प्रत्येक पैनलों/ उप पैनलो को निष्कर्षण के तुरन्त बाद उनका पृथक्करण करने के संबंध में है। इसके होते हुए भी, जहाँ पिलरों की निकासी रोक दी गई है, जिसके कारण सीम की उद्भवन अवधि (इन्क्यूवेशन पीरियड) के भीतर उस पैनल/सब पैनल का निष्कर्षण असम्भव लगे तो उस पैनल/ सब पैनल के गोफ आउट भाग को सील कर दिया जाएगा।
- (घ) विनियम 118 ए (3) (ग) जो कि, डिपिलरिंग डिस्ट्रीक्ट तथा गोफ आउट एरिया के चारों ओर बनाए गए पृथक्करण दीवारों (आइसोलसन स्टोपिंग) के निरीक्षण करने और उनके रिकार्ड रखने के संबंध में है। इन निरीक्षणों में उस पैनल/ सब पैनल में गोफ आउट क्षेत्रों के चारों ओर बनाए गए पृथक्करण दिवारों का निरीक्षण करना भी शामिल है जिनसे निकासी जारी है। पृथक्करण दिवारों के निरीक्षण का रिकार्ड प्रत्येक दिवार के लिए अलग-अलग रखा जायगा।

(ड.) इस महानिदेशालय के तकनीकी परिपत्र संख्या-4 वर्ष 1988, जो कि, घँसान रिकार्डों, मापचित्र (मापचित्रों)/(संस्तर क्रम) के रख रखाव, स्थानीय (लोकल)/मुख्य फाल इत्यादि से संबंधित सूचना रखने और उनकी प्रतिलिपियाँ इस निदेशालय को प्रस्तुत करने के संबंध में है।

5. पीलरों की निकासी आरम्भ करने से पूर्व:

5.1 पैनल के सभी पीलरों को दर्शाने वाला एक परस्पर संबद्ध परिशुद्ध अन्तर्लम्ब मापचित्र जो कि न्युनीकरण गुणक (आर.एफ) 1:250 के पैमाने पर बना हुआ हो और जिसमें निष्कर्षण, पीलरों के न्युनीकरण (रिडक्सन) एवं विभाजन (स्प्लिटिंग) की विधि तथा क्रम दर्शाया गया हो, उसे संदर्भित डिस्ट्रिक्ट के सभी भूमिगत पदाधिकारियों और प्रभारी स्टाफ को दिया जाएगा। इसे प्रत्येक पाली में अद्यतन किया जाएगा।

5.2 पैनल के ऊपरी सतह पर पानी के जमाव होने अथवा प्रवाह को रोकने के लिए "गारलैण्ड ड्रेन" बनाने के साथ-साथ अन्य सभी समुचित कदम उठाए जाएंगे।

5.3 यह सुनिश्चित करना होगा कि सयाल, बालकुदरा कुर्से, ऊपरी नकारी, निचली नकारी, अपर सीमाना, लोवर सीमाना तथा हाथीदारी सीम, जो कि पैनल के ऊपर लम्बवत् स्थित हैं और 60 मी० के अन्तर्गत आती हैं, के सभी गोफों को पूरे निष्कर्षण (डिपीलरिंग) प्रक्रिया के दौरान जल-मुक्त रखा गया है।

5.4 बाँसगढ़ा सीम के पैनल संख्या 11 के ऊपर स्थित सतही क्षेत्र की अदाह्य सामग्रियों से भराई और समतलीकरण नियमित रूप से की जाएगी।

5.5 पैनल में कार्बन मोनोआक्साइड और मिथेन गैस का अनुश्रवण (मानिट्रिंग) नियमित रूप से किया जाएगा। यदि किसी समय डिस्ट्रिक्ट में कार्बन मोनोआक्साइड या मिथेन गैस का पता चलता है तो उपरोक्त पैनल में निष्कर्षण तत्काल रोक दिया जाएगा और इसकी सूचना इस निदेशालय को भेजी जाएगी। कार्यालय में, ऐसे परीक्षणों का रिकार्ड एक आबद्ध व पृष्ठांकित पुस्तिका में रखा जाएगा।

6 निष्कर्षण की प्रस्तावित विधि निम्नलिखित होगी:-

6.1 प्रत्येक पीलर के बीचोंबीच एक केन्द्रीय विभाजक लेवल (सेन्द्रल लेवल स्प्लिट) चलाकर उसे दो समान भागों में विभाजित किया जाएगा ऐसे विभाजक की चौड़ाई 4.2 मी. से अधिक नहीं होगी।

6.2 प्रत्येक आधे पीलर की निकासी स्लाइस काटकर की जाएगी जिसकी चौड़ाई 4.2 मी. से अधिक नहीं होगी तथा निकटस्थ गोफ के सामने कम से कम 2 मी. मोटी कोयले की एक पट्टी (रिब) छोड़नी होगी, तथापि किसी भी कार्यस्थल पर किसी भी समय छत अनावरण (रूफ एक्सपोजर) का क्षेत्र 80 वर्ग मी. से अधिक नहीं होगा। यद्यपि निकटवर्ती गोफ के सामने छोड़ी गई कोयले की पट्टी को, सुरक्षा का ध्यान रखते हुए वहाँ से वापस जाते समय, विवेक पूर्वक कम किया जा सकता है।

- 6.3 एक समय में एक पीलर में एक से अधिक स्लाइस की निकासी नहीं की जाएगी। किसी पीलर के दूसरे आधे- भाग की निकासी तब तक आरम्भ नहीं की जाएगी जब तक कि उस पीलर के निकटतम अन्दरूनी आधे पीलर की निकासी का कार्य पूरा न कर लिया गया हो।
- 6.4 पीलर की निकासी के कार्य का आरम्भ निचले/अन्दरूनी छोर (डीप/इनवाई इन्ड) से किया जाएगा और सुव्यवस्थित तरीके से उपरी/बाहरी छोर (राइज/आउटबाई इन्ड) की ओर विकर्णतः निष्कर्षण रेखा (डाइगोनल लाइन ऑफ़ एक्सट्रैक्शन) बनाते हुए बढ़ा जाएगा और ऐसा करते समय निष्कर्षण रेखा में "V" आकृति की रचना नहीं होने दी जाएगी।
- 6.5 पैनल में उँचाई को बढ़ाने का कार्य (हाइटनिंग आपरेशन) विभाजकों और स्लाइस के ठीक बाहरी मूल गैलरियों में प्रारम्भ किया जाएगा और ऐसा करते समय जंक्शन पर अड़खा (लेज) नहीं बनने दिया जाएगा। पैनल की पूरी उँचाई तक की निकासी एक ही प्रक्रिया में की जाएगी और यह उँचाई 4.2 मी. से अधिक नहीं बढ़ने दी जायगी।
- 7.0 पैनल पर भार (लोड) और अभिसरण (कनवरजेंन्स) को मानीटर करने के लिए अनुकूल स्थान पर लोड सेल और कनवरजेंन्स रिकार्डरों/मीटरों को संस्थापित किया जाएगा। लोड सेल और कनवरजेंन्स रिकार्डरों के अवलोकनों को नियमित रूप से प्रत्येक कार्यकारी पाली में लिया जाएगा। यदि अवलम्ब (प्रॉप) पर भार 5 टन से अधिक है और अथवा छत का अभिसरण (कनवरजेंन्स) 10 मी. मी. से अधिक है तो पैनल में डिपीलरिंग आपरेशन को रोक दिया जाएगा और व्यक्तियों को पैनल से हटा लिया जाएगा। पैनल में पुनः सामान्य कार्य प्रबंधक द्वारा पैनल का निरीक्षण किए जाने के बाद ही आरम्भ किया जाएगा।
- 8.0 कृपया नोट करें कि यह अनुमति निम्नलिखित अतिरिक्त शर्तों के अधीन है:
- 8.1 इस अनुमति से संबद्ध परिस्थितियों, जिसके कारण खान में नियोजित कामगारों के जीवन को अथवा खान को खतरे की संभावना हो, में कोई परिवर्तन होने की दशा में खनन प्रक्रिया, जिसके लिए यह अनुमति प्रदान की गई है, तत्काल रोक दी जाएगी और उसकी सूचना इस निदेशालय को भेजी जाएगी। उपरोक्त खनन प्रक्रिया इस निदेशालय की सुस्पष्ट और नवीन लिखित अनुमति के बिना दुबारा फिर से चालू नहीं की जाएगी।
- 8.2 यह अनुमति विशिष्ट रूप से उपर्युक्त उल्लिखित विनियमों के अधीन और किसी अन्य विधि के प्रावधानों, जो भी हो अथवा जो किसी भी समय प्रयोज्य हो, उस पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना जारी की जा रही है।
- 8.3 यदि आवश्यक समझा जाए तो उपर्युक्त अनुमति को किसी भी समय संशोधित किया जा सकता है अथवा वापस लिया जा सकता है।
- 8.4 यह अनुमति दिनांक 31.12.2005 तक मान्य होगी।

भवदीय,

हस्ताक्षर

खान सुरक्षा निदेशक
राँची क्षेत्र।

ज्ञापन संख्या -आर.आर/10397/परम 100(1)/03/2931-2933 राँची, दिनांक 23.11.2003

प्रतिलिपि सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु निम्नलिखित को प्रेषित:

1. निदेशक तकनीकी (प्रचालन) नामित मालिक, मेसर्स सी. सी. एल. दरभंगा हाउस, राँची।
2. महाप्रबंधक/मानित अभिकर्ता, बरकाकाना क्षेत्र, मेसर्स सी. सी. एल., डाकघर: बरकाकाना, जिला: हजारीबाग।
3. प्रबंधक, सेन्ट्रल सौंडा कोलियरी, मेसर्स सी. सी. लिमिटेड, डाकघर: सी. सी. एल. सौंडा, जिला : हजारीबाग।

हस्ताक्षर

खान सुरक्षा निदेशक
राँची क्षेत्र।

ज्ञापन संख्या-आर.आर/10397/परम 100(1)/03/2934 राँची, दिनांक 23.11.2003

प्रतिलिपि खान सुरक्षा महानिदेशक धनबाद को खान सुरक्षा उप-महानिदेशक (दक्षिण-पूर्वी अंचल) राँची के माध्यम से समूह उप-निदेशक (जी. डी. डी.) की टिप्पणियों की एक प्रतिलिपि सहित सूचनार्थ प्रेषित।

हस्ताक्षर

28.11.03

कृते खान सुरक्षा निदेशक

MINISTRY OF LABOUR AND EMPLOYMENT

NOTIFICATION

New Delhi, the 8th September, 2006

S.O. 1460(E).—In pursuance of Section 27 of the Mines Act, 1952 (35 of 1952) the Central Government hereby publishes, as Appendix to this Notification, the following report submitted to it under Sub-section (4) of Section 24 of the said Act by the Court of Inquiry appointed to hold an inquiry into the causes and circumstances attending the accident which occurred on 15th June, 2005 in the collieries of M/s Central Coalfield Limited, more particularly in the Central Saunda Colliery in Hazaribagh District of Jharkhand State.

"Report of the Court of Inquiry into the major accident involving 14 persons at Central Saunda Colliery of M/s Central Coalfields Limited on 15th June, 2005."

[F. No. N-11012/1/2005-ISH-II]

S. K. SRIVASTAVA, Jt. Secy.

APPENDIX

DR. P. D. SHENOY COURT OF INQUIRY

**Report of the Court of Inquiry into the Major Accident Involving
14 persons at Central Saunda Colliery of M/s. Central Coalfields Ltd.
that occurred on 15th June, 2005.**

CHAPTER: I

INTRODUCTION

- 1.1.1 On 15th June, 2005 in the early hours of the day, a fatal accident occurred in the underground workings of Central Saunda Colliery of M/s. Central Coalfields Limited (herein after referred as CCL), a subsidiary company of M/s. Coal India Limited (CIL) in Hazaribagh district of Jharkhand State. In this unfortunate accident, fourteen (14) mine workers lost their lives. A list containing the names of the victims, their age, and occupation is given at Annexure-I.
- 1.1.2 In exercise of the powers conferred by sub-section(1) of section 24 of The Mines Act, 1952, Government of India, Ministry of Labour and Employment issued a notification vide no. S.O. 1494(E) dated the 17th October, 2005, appointing a Court of Inquiry for holding a formal inquiry into the causes and circumstances attending the accident. Dr. P.D. Shenoy, IAS (Retd.), former Secretary, Ministry of Labour and Employment was appointed as the Chairman, whereas, Sri Ravindra Sharma, Director-General of Mines Safety (Retd.) and Sri Rajendra Prasad Singh, President, Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, were appointed as assessors. A copy of the notification is given at Annexure-II.
- 1.1.3 Sri G. Vijaya Kumar, Deputy Director of Mines Safety (Dy. DMS), Directorate-General of Mines Safety (DGMS), Head Quarters (HQ), Dhanbad was appointed as Secretary to the Chairman, Court of Inquiry

vide Ministry of Labour and Employment's letter no. N-11012/1/2005-ISH.II dated, 21st December, 2005. (Annexure-III)

1.1.4 The period of Inquiry and presentation of report was extended from 17th January, 2006 to 16th April, 2006 vide notification dated 19th January, 2006 by the Govt. of India, Ministry of Labour and Employment. (Annexure-IV)

1.1.5 The period of the inquiry was further extended from 17th April, 2006 to 16th July, 2006 vide notification dated 03rd April, 2006. (Annexure-V)

1.2 Court of Inquiry:

1.2.1 The Chairman, Court of Inquiry, issued Public Notice inviting submission by way of an affidavit from general public, who were acquainted or interested in or had knowledge on the subject matter related to the accident by 31st December, 2005. The affidavits were to be duly attested by a Notary Public and were to be submitted to the Court in triplicate.

1.2.2 The notices mentioned in the preceding paragraph were published in newspapers. The dates of such publication and the names of the newspapers in which the notices were published are detailed in the following table.

Sl.No.	Name of the Newspaper	Language	Date of Publication
1.	Prabhat Khabar	Hindi	28.11.2005
2.	Ranchi Express	Hindi	28.11.2005
3.	The Telegraph	English	28.11.2005

1.2.3 A total of 20 (twenty) affidavits were received by the Court by the date given, i.e. 31.12.2005. However, the Court allowed submission of affidavits even after the given date. During the open sittings of the Court, subsequent affidavits or depositions were called for from various individuals or organizations with the aim of gathering all relevant information relating to the case. In all, 48 witnesses were examined by

the Court spread over a number of sessions. A list of all the deponents and their dates of examination is enclosed at Annexure-VI. Till the completion of the proceedings, 40 affidavits were submitted to the Court. Most of witnesses were cross-examined directly to clarify certain issues.

1.3 Inspections:

The Chairman, Court of Inquiry, Dr. P.D. Shenoy, accompanied by Sri Rajendra Prasad Singh, Assessor, inspected the underground workings of Bansgarha seam of Central Saunda Colliery through Incline no.17. on 19.11.2005. Representatives of one trade union, Coal Mines Officers Association, Management of the Coal company and DGMS accompanied the Court of Inquiry during the inspection. Sri Ravindra Sharma, Assessor, further inspected the mine on 16.12.2005. Sri Sharma was accompanied by representatives of the Mine Management, DGMS and one Trade Union. Observations made during these inspections in the form of reports are given at Annexure-VIII and IX.

1.4 Procedure:

The Court decided to consider written affidavits supported by deposition in person before the Court. The Court would then cross examine the deponents to further clarify matters in an open Court so that the truth could be revealed and utmost transparency could be maintained. The Court also decided to call relevant witnesses other than those who submitted affidavits for examination. The issue of cross-examination by the parties was considered very carefully by the Court and the Court arrived at the conclusion that such cross-examination may not add much value to the proceedings and may delay the submission of the report to the Government inordinately. However, the Chairman and assessors cross-examined witnesses to the extent required and elicited additional information. While cross-examining the Court kept in mind the

submissions made by various parties. During the first hearing of the Court on the 28th and 29th of January, 2006, the Chairman directed the Court Secretary to display at the Court venue all relevant documents and affidavits received by the Court, and accorded permission to all parties to examine the documents, so that all parties could be kept informed about everything related to the case. Accordingly, the Court Secretary displayed all the relevant documents in the afternoon of 29th January and whole day on the 30th January, 2006. Again, after the second hearing of the Court on 18th and 19th February, the Court Secretary displayed all documents on 22nd and 23rd February, 2006 and again on 13th and 14th March, 2006. The secretary for convenience of interested parties was himself present on all the dates mentioned above.

1.5 Proceedings:

1.5.1 On 19th November, 2005, Dr. P.D. Shenoy, the Chairman and Sri Rajendra Prasad Singh, Assessor visited the mine and site of occurrence. Sri Ravindra Sharma, Assessor visited the mine and site of occurrence on 16th December, 2005.

1.5.2 On 20th November, 2005, the Court decided to-

- (a) issue public notice in local papers inviting submission of affidavits by interested parties by 31st December, 2005,
- (b) issue notices to registered/recognised Trade Unions and to CMD and Director (Tech) of M/s CCL, to adduce their evidence to the Court on 17th and 18th December, 2005,
- (c) hold sittings of the Court at Subarnarekha Hall, Staff Training College Hostel, M/s CMPDIL, Ranchi and
- (d) appoint a Secretary to the Court.

1.5.3 On 17th December, 2005, representatives of Trade Unions namely Sri Mihir Chaudhary, NCOEA, CITU(Jharkhand); Sri Badri Singh, Vice President Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh affiliated to INTUC; Sri Hari Shankar Singh, Janta Mazdoor Sangh affiliated to HMS; Sri Ramendra Kumar, General Secretary, United Coal Workers Association/AITUC; Sri Kumar Mahesh Singh, Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh/INTUC and representatives of Coal Mines Officers' Association of India (CMOAI) expressed their general views related to the accident. The Court assured them that absolute transparency would be maintained in the process of inquiry. The Court also assured them that each of them would get one more opportunity for deposition after submission of affidavits.

1.5.4 On 18th December, 2005, Sri R.P. Ritolia, CMD, CCL; Sri M.M. Singh, Director Technical CCL; Sri Basant Kumar Singh, General Secretary, BMS; Sri K.K. Passi, Dy. Director-General of Mines Safety, South Eastern Zone, Ranchi; Sri Ramendra Kumar, General Secretary, United Coal Workers Association/AITUC; Sri N.K. Singh, representative of Coal Mines Officer's Association of India(CMOAI) – briefed the Court about the accident.

On questions raised by some parties, the Chairman clarified that the Court would follow proper procedure and directed the concerned officials to make available all related documents/ inputs to the Court.

1.5.5 On 28th January, 2006, Sri M.M. Singh, Director Technical, CCL; Sri Bhaskar Bhattacharjee, DGMS; and Sri K. Nageswara Rao, Director of Mines Safety, Ranchi Region, Ranchi deposed before the Court.

1.5.6 On 29th January, 2006, Sri J.N. Singh on behalf of CMOAI; Sri Ramesh Kumar Bubna, representing IMMA; Sri Ashok Kumar Sharma representing AIMPA; Sri Ramendra Kumar, United Coal Workers Union (AITUC); Sri

Kumar Mahesh Singh, INTUC; Sri Kamlesh Sahay, BMS; Sri Basant Kr. Singh, General Secretary, CCL Colliery Karmachari Sangh; Sri Mithilesh Kr. Singh, Working President of Bihar Colliery Karmachari Union (CITU); Sri Mihir Chowdhury, General Secretary, NCOEA (CITU); and Sri Shambhu Narain Jha, Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh (INTUC) deposed before the Court.

1.5.7 On 18th February, 2006, Sri P.K. Kanchan, Director, CMPDIL; Sri B.B. Dubey, the then Agent of Central Saunda Colliery; Dr. A.K. Sinha; Dr. C.P. Choudhary; Dr. Binod Narayan; Dr. S.P. Sinha; Dr. R.K. Gupta; Dr. Binay Kumar; and Sri Dhananjay Kr. Singh, Surveyor, Central Saunda Colliery deposed before the Court.

1.5.8 On 19th February, 2006, Sri Rahul Guha, Dy. Director-General of Mines Safety (Central Zone), Dhanbad and the then Director of Mines Safety, Ranchi Region; Sri S.K. Mondal, Dy. DMS, Eastern Zone, Sitarampur and the then Dy. Director of Mines Safety, Ranchi Region; Sri D.K. Mallick, Dy. DMS, Ranchi Region; Sri Bhaskar Bhattacharjee, DG; Dr. Ram Saran Rai, Retd. AGM, R&D, Steel Authority of India Ltd. (SAIL); Sri Umesh Sharma, Project Officer/Agent of Central Saunda Colliery (under suspension); Sri Narendra Kumar Martand, Manager of Central Saunda Colliery (under suspension); and Sri Ajab Lal Rajak, Safety Officer of Central Saunda Colliery (under suspension) deposed before the Court.

1.5.9 On 11th March, 2006, Sri M.K. Thapar, CMD, M/s South Eastern Coalfields Ltd. (SECL) and then Director Technical, CCL; Sri V.K. Singh, CMD, M/s Northern Coalfields Ltd. (NCL) and then Director Technical, CCL; Sri Ajay Kumar, Director Personnel, CCL; Dr. A.K. Sarkar, Director Finance, CCL; Sri Md. Taslim, General Manager, Barka Sayal Area, CCL (under suspension); Sri Gopal Prasad, Dy. Chief Mining Engineer, CMPDIL; and

Sri Krishna Murari, Manager at the time of making application for the permission deposed before the Court.

1.5.10 On 12th March, 2006, Sri S. Choudhary, CMD, CMPDIL; Sri M.M. Singh, Director Technical, CCL; Prof. Ajay Kumar Ghose, Former Director, Indian School of Mines (ISM); Dr. S.K. Singh, Head, Bord & Pillar Department, Central Mining Research Institute (CMRI), Dhanbad; Sri P.N. Mishra, General Secretary, INMOSSA; Sri Ramendra Prasad Singh, Working Committee member, All India Coal Workers Federation (CITU) and Sri Indradeo Prasad Singh, Assistant Manager, Central Saunda Colliery (under suspension) deposed before the Court.

1.5.11 On 25th March, 2006, Dr. Dinanath Pandey, Civil Surgeon & Chief Medical Officer (CMO), Hazaribagh; Sri R.P. Ritolia, CMD, CCL Sri B.R. Tripathy, Ex. CGM of Barka Sayal Area; Sri Sanjay Kumar, Asstt. Manager, Central Saunda Colliery; and Sri Aditya Sahu, General Secretary, BMS, Jharkhand Pradesh; deposed before the Court.

1.5.12 On 26th March, 2006, Dr. Dinanath Pandey, Civil Surgeon & CMO, Hazaribagh deposed before the Court. At this stage when evidence of all deponents were completed and the Court was about to conclude the proceedings, Sri J.N. Singh prayed the Court for permitting him to place his arguments. The Court considered his request and following the principles of natural justice permitted all parties i.e. the Officers Associations, Trade Unions, the CCL management, CMPDIL and DGMS to place their orals arguments before the Court and submit the written arguments to the Court in three pages. The Court, on request also allowed suspended officers of CCL to place their arguments.

Accordingly. Sri J.N. Singh, CMOAI; Sri Ashok Kumar Sharma, AIMPA; Sri Umesh Sharma, Agent (under suspension) and Sri N.K. Martand, Manager (under suspension) placed their oral arguments before the Court.

1.5.13 On representation made by Sri J.N. Singh made vide his letter dated 11.04.2006 all parties were allowed to submit their written arguments within 10 pages.

1.5.14 On 05th May, 2006, Sri Ramendra Kumar, AITUC; Sri M.M. Singh, Director Technical, CCL; Sri K. Nageswara Rao, Director of Mines Safety, DGMS; Sri Md. Taslim, General Manager (under suspension), Barka Sayal Area; Sri Ajab Lal Rajak, Safety Officer (under suspension) and Sri I.D.P. Singh, Assistant Manager (under suspension) their oral arguments before the Court. Again, with the permission of the Court. Sri J.N. Singh, CMOAI; and Sri Umesh Sharma, Agent (under suspension) supplemented their arguments.

1.5.15 Sri J.N. Singh prayed for leave of the Court to convey his heartfelt thanks as well as the gratitude of CMOAI to the Court for giving opportunity to present their case, both in writing and orally and also for following meticulously the principles of natural justice and being fair to all concerned.

1.5.16 Sri Ramendra Kumar expressed gratitude of all the trade union leaders and workers to the Court for taking pains to hold several sittings in quick succession giving full opportunity to all concerned. He specially mentioned about the speed with which the proceedings have been concluded without sacrificing the principles of natural justice. He stated that it was historic.

1.5.17 The Chairman, Court of Inquiry, while concluding the proceedings of the Court thanked the representatives of trade unions; members of CMOAI,

AIMPA, IMMA and INMOSSA; the management of M/s CCL; and DGMS for their valuable help and co-operation without which the proceedings would not have been completed in such a short period. He also thanked the doctors who had conducted the post-mortem examination of victims. Finally he extended special thanks to the CMD, CMPDIL and their officers and staff for making excellent arrangements by providing their premises for holding the sittings of the Court.

1.6 Gist of the matters raised by witnesses:

- 1.6.1 Sri R.P. Ritolia, Chairman cum Managing Director, M/s. CCL and Sri M.M. Singh, Director (Technical) and nominated owner of M/s. CCL stated that the main cause of the accident was an air-blast caused by sudden roof displacement over Panel no.11 of Bansgarha seam. In their opinion, ingress of water into the workings of Bansgarha seam was from upper seams above Hathidari seam.
- 1.6.2 Sri Ramendra Kumar of United Coal Workers Union (AITUC) in his deposition before the Court raised the following issues,
- a. The permission to depillar Panel no.11 of Bansgarha seam was granted by DGMS in a routine manner without physical inspection of the area.
 - b. Depillaring of Panel no.11 was started by the mine management without dewatering Hathidari seam thereby not complying with the conditions stipulated in the permission letter as well as not adhering to the requirements of the Coal Mines Regulations, 1957 (herein after referred as CMR, 1957).
 - c. Extraction of coal was done beyond the area permitted by DGMS.
 - d. Higher authorities of CCL did not inspect the mine, hence dangers could not be identified and clearance from ISO was also not taken.

e. The Dy. Director of Mines Safety (herein after referred to as Dy.DMS), of DGMS inspected the mine on 19.03.2005, 12.05.2005, 18.05.2005 and 06.06.2005, but he could not identify the danger.

- 1.6.3 Sri Kumar Mahesh Singh of RCMS (INTUC) raised the issue of inspections of the mine by Dy.DMS on 19.03.2005, 05.05.2005, 12.05.2005, 18.05.2005 and 07.06.2005. He opined that DGMS granted the permission by caving ignoring the fact that Hathidari seam was waterlogged. He also stated that there was heavy shortage of statutory personnel in mining discipline in CCL.
- 1.6.4 Sri Kamallesh Sahay, Vice President, Akhil Bharatiya Mazdoor Sangh (BMS) prayed before the Court to allow BMS as a party.
- 1.6.5 Sri Basant Kumar Singh, General Secretary, CCL Colliery Karmchari Sangh (BMS) raised issues regarding shortage of statutory personnel at the mine, non-dewatering of overlying seam, inspection by Dy.DMS on 05.05.2005 and non-mentioning of Regulations 126 and 127 of the CMR, 1957 in the permission letter.
- 1.6.6 Sri Ramesh Kumar Bubna, representing Indian Mine Manager's Association (IMMA) said that the accident was caused by an air-blast and water entered into workings afterwards. Employment of senior competent persons like overmen and mining sirdars round the clock at the site is ensured by the management. In the instant case both were present at the site and fatalities could have been avoided if they had been able to withdraw persons in time.
- 1.6.7 Sri Ashok Kumar Sharma, Chief Organizing Secretary of All India Mining Personnel Association (AIMPA) deposed that the post-mortem reports suggest death due to shock and hemorrhage and not due to drowning. He opined that the deaths were caused by air-blast which was beyond control of anyone.

1.6.8 The Coal Mines Officers Association of India (CMOAI) was represented by S/Sri J.N. Singh, N.K. Singh and R.K. Roy. They brought out before the Court, following views:

- a. there was acute shortage of officers holding statutory positions and it has direct bearing on safety and supervision of a mine,
- b. frequent transfer of officers to and from a mine do not allow officers to gather necessary intimate knowledge about a mine,
- c. Depillaring operations at the mine was carried out in accordance with the permission granted by DGMS. Officers of DGMS who inspected the mine prior to the accident did not point out any contravention of the permission.
- d. Cause of the accident was an air-blast and flow of water into the workings was a subsequent event.
- e. The Overman and Mining Sirdar failed to apprehend the danger and did not withdraw persons to a safe place.
- f. The safety audit for depillaring mine at least twice a year should be made compulsory.

1.6.9 Sri Ramendra Prasad Singh of All India Coal Workers' Federation (CITU) presented the following points,

- a. The colliery management started extracting Panel no.11 in Bansgarha seam without ensuring compliance of conditions stipulated in the permission letter granted by DGMS, *i.e.* without dewatering overlying seams.
- b. A 3 inch diameter borehole through which water from Hathidari seam had been drained was not sufficient. Water through that borehole had been flowing down even till the date of accident.
- c. The management of the mine extracted pillars from beyond the area permitted by DGMS.
- d. The management exposed roof in goaf more than permitted by DGMS.

- e. Conditions stipulated by DGMS in permission letter were not known to supervisory staff.
- f. A copy of permission letter was not posted on the mine notice board.
- g. There was no arrangement of escape route in the mine.
- h. The management continued working in the mine despite cautioned by the overman.
- i. The management did not provide convergence recorders to predict the occurrence of main fall.
- j. DGMS officers failed to identify the danger in the mine.

1.6.10 Sri Mithilesh Kumar Singh of Bihar Colliery Kamgar Union (CITU) brought out the points of non-dewatering of Hathidari seam, inspections by DGMS officers and shortage of statutory personnel.

1.6.11 Sri Mihir Choudhary, General Secretary, NCOEA (CITU) raised issues related to dewatering of Hathidari seam, working outside permitted area, manager of the mine staying outside the mine area, information on danger given to the mine manager by Overman not given due attention and inspection of the mine by DGMS officers.

1.6.12 Sri Sambhu Narayan Jha of RCMS (INTUC) said that-

- a. DGMS granted permission ignoring the fact that overlying Hathidari seam was waterlogged,
- b. DGMS during inspection did not stop the mine,
- c. cause of accident was fall of roof as per post-mortem report and
- d. there was acute shortage of statutory personnel in the mine.

1.6.13 Sri Dhananjay Kumar Singh, Surveyor deposed that he prepared the plan accompanying the application for permission from original plan as the panel was waterlogged up to 19th level at the time of making the application and hence it could not be surveyed afresh.

1.6.14 Sri Bhaskar Bhattacharjee, Director-General of Mines (DG) Safety deposed that he was the Chief Inspector of Mines and in accordance with Section 6

of the Mines Act, 1952 local areas were declared and different Regional Inspectors were authorised. Accordingly the mine falls under Ranchi Region which was headed by the Regional Inspector of Mines as defined under Regulation 2(27) of the Coal Mines Regulations, 1957 also designated as Director of Mines Safety, Ranchi Region. Therefore, Sri K. Nageswara Rao, Director of Mines Safety, Ranchi Region conducted the inquiry into the accident as provided under Section 23(2) of the Mines Act, 1952 and prepared the report of Inquiry.

1.6.15 Sri Rahul Guha, then Director of Mines Safety in his deposition clarified that-

- a. the application for permission was correctly dealt under Regulation 100(1) of CMR, 1957,
- b. conditions to guard against danger of inundation from overlying seams was incorporated in the permission letter,
- c. Regulation 127 was not attracted in the instant case, and
- d. Pillars were asked to be left to guard against danger of surface inundation.

1.6.16 Sri S.K. Mandal, Dy. Director of Mines Safety deposed in similar fashion as that of Sri Guha.

1.6.17 Sri D.K. Mallick, Dy. Director of Mines Safety deposed that-

- a. he inspected the mine on 7 days from 06.08.2004 to 07.06.2005,
- b. during inspection of Panel no.11 on 12.05.2005, no abnormality was observed in the panel. There was no indication of seepage of water in the panel,
- c. on the day of inspection of Panel no.11, the goaf edge cogs were inside the permitted panel boundary and hence workings made beyond the panel boundary could not be seen,
- d. General Inspection of the mine was in progress and was yet to be completed.

1.6.18 Sri Chandra Shekhar Dubey, Hon'ble Member of Parliament, Lok Sabha did not appear before the Court. However, he communicated to the Court through a letter that-

- a. the permission was given without physical inspection,
- b. the permission ignored the provisions of Regulation 127 for which Director-General of Mines Safety is the authority to grant permission,
- c. DGMS did not stop the workings of the mine subsequent to inspections and
- d. the persons did not die of drowning as per post-mortem reports.

1.6.19 Dr. Ram Saran Rai said that DGMS should have considered depillaring with stowing and the DGMS did not point out impending dangers during inspections.

1.6.20 Sri Umesh Sharma, Agent of the mine since 01.06.2003 (presently under suspension) submitted the following points before the Court,

- a. Application to extract Panel no.11 in Bansgarha seam by caving method was made based on the Business plan prepared by M/s Central Mine Planning and Design Institute Ltd. (CMPDIL) which was subsequently granted by DGMS.
- b. Mining operations in Bansgarha seam Panel no.11 were conducted in accordance with the permission granted by DGMS.
- c. Water from Hathidari seam flowed down with full force to Bansgarha seam through a 4 inches borehole provided between seams, continuously from May, 2004 to October, 2004 and then the flow through the borehole ceased and remained stable implying that the Hathidari seam had become free of water.
- d. Sri D.K. Mallick, Dy. Director of Mines Safety, DGMS inspected the mine on 19.03.2005, 05.05.2005 and 18.05.2005 but no deficiency regarding dewatering or operations in Panel no.11 was pointed out by him.

- e. Water ingressed into Bansgarha seam due to massive roof fall and inconsistent workings of upper seams beyond 60m from Bansgarha seam.
- f. There must have been some indication of roof fall before it fell down and withdrawal of persons by supervisors (the overman and the mining sirdar) at the work site would have resulted in safe withdrawal of persons who died in the accident.

1.6.21 Sri K. Nageswara Rao, Director of Mines Safety, Ranchi Region, DGMS in his deposition stated as below:

- a. Permission under Regulation 100(1) of the CMR, 1957 to extract pillars in Panel no.11 of Bansgarha seam at Central Saunda Colliery was granted by his predecessor based on application made by the agent of the mine. A copy of permission letter is enclosed at Annexure-XIV.
- b. Salient conditions of the permission were:
 - i. Depillaring operations shall be conducted within the area indicated on plan no. 246 enclosed with the application.
 - ii. It shall be ensured that all overlying goaves in Sayal, Balkudra, Kurse, Upper Nakari, Lower Nakari, Upper Semana, lower Semana and Hathidari seams lying vertically above and within 60m of the panel are kept free from water during the entire depillaring operation.
 - iii. In the event of any change connected with this permission which is likely to endanger the life of workmen employed in the mine or endanger the mine, the mining operations for which this permission has been granted shall be stopped forthwith and intimation thereof sent to this Directorate. The said mining operations shall not be resumed without an express and fresh permission in writing.

- c. During inquiry conducted under Section 23(2) of the Mines Act, 1952, it was revealed that-
 - i. Some workings were made beyond the permitted boundary of the panel indicated on plan no.246.
 - ii. Some galleries were driven towards a fault plane which was not shown on plan no.246.
- d. The roof caved in along the fault plane causing major fall. As a result of the fall, a connection was established between Bansgarha seam and Hathidari seam.
- e. The accident would have been averted had-
 - i. the goaves of overlying seams vertically above were kept free of water during depillaring operations,
 - ii. the area out side the panel indicated on plan no.246 not worked, and
 - iii. the position of panel boundary fault was shown on the plan.

1.6.22 The Departmental Inquiry Committee constituted by the Ministry of Coal, Govt. of India consisted of Chairman cum Managing Director (CMD), CMPDIL; Director(Technical), Coal India Limited (CIL); Director(P&IR), CIL and Chief General Manager, M/s Bharat Coking Coal Ltd. (CGM, BCCL). The committee in its report concluded that the accident was caused by fall of a large area of standing roof in Panel no.11 of Bansgarha seam followed by inrush of water from overlying Hathidari seam. The ineffective dewatering of Hathidari seam before and during depillaring operation was the cause of inundation.

1.7 Gist of Cross-examinations:

- 1.7.1 Sri Bhaskar Bhattacharjee, Director-General of Mines Safety; Sri Rahul Guha, the then Director of Mines Safety and Sri K. Nageswara Rao, Director of Mines Safety deposed that Director of Mines Safety (Regional

Inspector of Mines) was well within his powers to grant permission under Regulation 100(1) of the Coal Mines Regulations, 1957.

- 1.7.2 Sri Bhattacharjee further stated that inquiry under Section 23(2) of the Mines Act, 1952 was conducted by Sri K. Nageswara Rao and he stood by his report.
- 1.7.3 Sri Rao deposed that majority of permissions are granted based on information furnished in the application by the management and in the instant case permission was approved by Sri Rahul Guha and signed by Sri S.K. Mondal, Dy. DMS.
- 1.7.4 Sri Guha stated that necessary conditions to guard against danger of inundation were incorporated in the permission letter and permission was granted for specific number of pillars within a panel boundary.
- 1.7.5 Sri B.B. Dubey, the then Agent of Central Saunda Colliery deposed that he had made commitment in the application for permission to dewater overlying seams before commencement of depillaring operations and that there was no history of air blast in Central Saunda Colliery.
- 1.7.6 Sri Md. Taslim, General Manager, Barka Sayal Area of CCL (under suspension) stated that he had visited the mine a number of times during his tenure as General Manager and he had participated in rescue operations after the accident. He further said that no property was damaged belowground above 21st level up to which water had reached after the inrush. He did not confirm that bore hole through which water was flowing down was connected to Hathidari seam but he just believed others and boring machine brought to the mine for dewatering Hathidari seam was shifted to other mine.
- 1.7.7 Sri Gopal Prasad, Dy. Chief Mining Engineer, CMPDIL deposed that if the business plan prepared by CMPDIL along with provisions of statute were followed, the accident would have been averted.
- 1.7.8 Sri S. Choudhary, CMD, CMPDIL deposed that the committee appointed by Ministry of Coal, Govt. of India had visited the mine more than seven

times and had recorded 29 statements including those of CMD, CCL and Director, CCL. The report consisted of two volumes. Volume-I consisted of more than 100 pages. He said that evidence indicated that coal mining operations were done beyond the area permitted by DGMS and that the mine management assumed the decreasing flow of water through bore hole as an indication of overlying Hathidari seam workings becoming free of water. He stated that cause of the accident arrived at by the committee was unanimous.

1.7.9 Sri M.M. Singh, Director Technical, CCL stated that he had not taken permission either from the Ministry of Coal or from CIL before appointing the Committee headed by Prof. A.K. Ghose and that the committee would be paid by CCL. He said that at the time of accident there was no water in Hathidari Seam.

1.7.10 Prof. A.K. Ghose deposed that he had not visited the site of accident; other two members of the committee had gone to the site. He further stated that he had never said that Hathidari seam was dry.

1.7.11 Dr. S.K. Singh a member of Ghose Committee stated that he had taken note of the post mortem report while preparing the report. He also said that there was no displacement of supports in the mine above 21st level.

1.7.12 Sri Indradeo Prasad Singh, Assistant Manager, Central Saunda Colliery (under suspension) stated that no executive was employed in night shifts.

1.7.13 Cross-examinations of doctors (six) who conducted post-mortem on bodies of victims, revealed the following-

- (i) Doctors were specialists in their respective fields but none was specialist in medical jurisprudence and toxicology.
- (ii) Dr. A.K. Sinha, who was examined first was not aware of the phenomenon called dry drowning and that 20-40% of cases of drowning are dry drowning. All doctors were present in the court during cross examination of Dr. Sinha. Some of them when cross examined afterwards stated that they knew the phenomenon.

- (iii) None of the doctors knew about different types of drowning. They also did not know the four authorised techniques of post mortem examination.
- (iv) All the bodies were dissected by Class-IV employees, not having any degree or diploma in medical science, under direction of doctors.
- (v) Dr. Binod Narayan deposed that he used same words and language in all four cases he dealt and the cause of death in all cases was the same. He did not send viscera for examination.
- (vi) Dr. S.P. Sinha did not reply when asked to explain the consequences of vagal inhibition due to sudden inrush of water. He agreed that he cannot say with certainty that death was caused only due to injury. There were other possibilities of death like dry drowning or vagal inhibition also.
- (vii) Dr. R.K. Gupta agreed that it was a bit difficult to arrive at causes of death and agreed to have not read thoroughly a book on medical jurisprudence & toxicology to enable him to conduct post-mortem examination in a scientific manner. He further agreed that tremendous force of water blast may cause injuries to the body similar to those caused by blunt object.

1.7.14 Detailed summary of cross-examination is enclosed at Annexure-VII.

1.8 Gist of Arguments:

1.8.1 Sri J.N. Singh representing Coal Mines Officers Association of India (CMOAI) described the workings at Central Saunda Colliery in detail by depicting a plan on the board and stated that -

- a. the CMPDIL has to share the responsibility and consequential results of suggesting to depillar Bansgarha seam by caving in their business plan.

- b. the permission was granted without scientific consideration and signed by Sri S.K. Mondal, Dy.DMS, an un-authorised officer of DGMS.
- c. Hathidari seam had been totally dewatered before commencement of depillaring operations,
- d. Sri D.K. Mallick did not point out any contravention regarding extraction of the seam in area beyond permissible limit or presence of water within 60m from workings during his inspections of the mine,
- e. there was acute shortage of statutory personnel in mines of CIL,
- f. statutory persons in mines are transferred frequently. Transfer policy of the company is faulty,
- g. actual area of exposure at the time of the main fall was only 2000 sq.m and
- h. an air blast was the cause of the accident and persons were killed due to misjudgment on the part of mining sirdar and overman on duty.

1.8.2 Sri Ashok Kumar Sharma representing All India Mining Personnel Association (AIMPA) stated that the accident was caused by an air blast when roof above Bansgarha seam caved in. There was no water in Hathidari seam at that point of time. The air blast caused further strata movement establishing connection with Semana seam and water from Semana seam rushed into Bansgarha seam after death of the workers. Workers lost their lives due to error of judgment on the part of the overman and mining sirdar who also died in the accident.

1.8.3 Sri Umesh Sharma, Agent of Central Saunda Colliery (under suspension) stated that -

- a. Decision to extract Bansgarha seam by caving method taken on recommendations made in Business plan prepared by the CMPDIL was the main cause of the accident.

- b. The fall of roof due to extraction of Bansgarha seam caused further strata movement in overlying seams even beyond 60m and as a result thereof water present in these seams rushed into Bansgarha seam.
- c. The lives of 14 persons could have been saved had the district mining sirdar and overman visualised the impending roof fall and withdrawn persons from depillaring area in time.

1.8.4 Sri N.K. Martand, Manager of Central Saunda Colliery (under suspension) stated that –

- a. Permission to extract Panel no.11 of Bansgarha seam was granted before he joined Central Saunda Colliery.
- b. Hathidari seam workings above Panel no.11 at the time of accident was free of water.
- c. No extraction of coal was made in area beyond the area permitted by DGMS.
- d. No inadequacy in dewatering was pointed out during inspections by officers of DGMS.
- e. Panel no.11 was visited by the Agent, Area Safety Officer and Dy. DMS but none of them noticed un-usual seepage of water in the working area.
- f. Probable cause of this accident has been the main roof fall in de-coaled area coupled with lack of timely application in duties and responsibilities of the mining staff in the third shift of 14.06.2005. Night shift mining officials made gross error in their judgment of time of withdrawal.
- g. The roof fall caused movement in depillaring area of Hathidari seam which further triggered disturbances in other overlying seams. This disturbance released entrapped water from Semana seam.

1.8.5 Sri Md. Taslim, General Manager of Barka Sayal Area of CCL (under suspension) stated that –

- a. He had worked in the mining industry for about 32 years in different capacities and had won many safety awards.
- b. The agent and manager do not discuss the matters regarding permission from DGMS with the General Manager.

1.8.6 Sri A.L. Rajak, Safety Officer of Central Saunda Colliery (under suspension) stated that –

- a. further movement of the strata after the fall of roof caused inrush of water from Semana seam.
- b. He was employed on production job by higher officials and hence was left with very little time to attend to safety aspects of the mine. When asked by the Court if he had submitted a note for sparing him from duties on production he replied in the negative.

1.8.7 Sri I.D.P. Singh, Assistant Manager of Central Saunda Colliery (under suspension) stated that –

- a. He was on leave from 14.06.2005 to 25.06.2005.

1.8.8 Sri Ramendra Kumar, AITUC stated that –

- a. All bodies except one were recovered from area on south side of 17 Cross-cut i.e. from the dip side of workings. Apparently all bodies were flown and carried by water towards dip side. If they had been killed by an air blast their bodies would have been found in 17 Cross-cut or on

north side of 17 Cross-cut. Bodies were found in water and not under debris. This proves that death was caused due to inundation.

- b. In the inquest report of the police no external injury on body of the victims was mentioned. It was mentioned in the report that body had got swollen due to soaking in water. If persons had been killed due to air blast there would have been external injuries on the body of victims.
- c. He was present when post-mortem examination on bodies was carried out. It was done after day light hours some times under candle light. Further, doctors did not touch the bodies and the bodies were dissected by non-technical Class-IV employees.
- d. The accident was not caused due to fault of mining sirdar and overman.
- e. There was shortage of statutory persons in the mine.
- f. The proforma part of the application for permission made by the management did not tally with the plan enclosed with it.

1.8.9 Sri K. Nageswara Rao, Director of Mines Safety, Ranchi Region of DGMS stated that –

- a. The Regional office of DGMS deals with about 50 to 70 permissions in a year. Therefore, mines are not inspected for dealing with cases of permissions. These are dealt based on the information furnished by the management.
- b. It is the responsibility of the management to comply with the terms and conditions of the permission granted.
- c. After the grant of permission for Panel no.11 and before the accident Central Saunda Colliery was inspected by an officer of DGMS for specific purposes.
- d. The bore hole supposedly drilled to dewater Hathidari seam was in side the goaf on the day of inspection of the mine.

- e. The bore hole of about 60m length drilled upward at an angle of about 30° from horizontal cannot be cleared by an old haulage rope under normal circumstances.
- f. Observations of Sri Haneef and Sri Nagender Singh were not corroborated by any other physical observations to indicate the occurrence of an air blast. No disturbance was found above 22nd Level. All supports including vertical props and stoppings were found to be intact during inspection made immediately after the accident. There was no deposition of appreciable quantity of coal dust in the area out by of 22nd Level. The disturbance found below 22nd Level cannot be assumed to have been caused by air blast as it could also have been caused by force of water.
- g. The roof fall occurred only up to the line of extraction where the goaf edge cogs were erected. There was no over riding of pillars in the panel.
- h. Air blast of very high intensity occurs only when the area of exposure is very very large. In Panel no.11 area of exposure of hanging goaf was not very large.
- i. The principal cause of the accident was not due to the roof fall but due to the presence of water in the overlying seams. it should not be presumed that the supervisors or any competent person in underground workings would be able to know the presence of water in the overlying seams. Hence, supervisors like overmen and sirdars cannot be held responsible for this accident.

1.8.10 Sri M.M. Singh, Director Technical, CCL submitted a written statement stating that –

- a. He was elevated to the post of Director Technical in CCL on 28.10.2004.

- b. There were 63 coal mines in CCL with active area of 2,600 sq.km and have a workforce of about 68,345 including 2,650 executives.
- c. He was the first corporate level management executive to enter into the mine after the accident. He decided the course of rescue and recovery operation and remained there till all bodies were recovered.
- d. There was no shortage of statutory persons in Central Saunda Colliery.

CHAPTER: II

GENERAL INFORMATION

2.1 Location:

2.1.1 Central Saunda Colliery of M/s. Central Coalfields Ltd.(M/s.CCL) is located in South Karanpura coal belt and is owned by M/s. CCL, a subsidiary company of M/s. Coal India Ltd. (M/s. CIL), a public sector undertaking of the Govt. of India, Ministry of Coal. The mine is in Hazaribagh district of Jharkhand State and is about 5 km from the Patratu railway station on Barkakhana – Khelari section of East-Central Railways. It is about 50 km away from Ranchi, the State capital of Jharkhand. Geographically the mine is situated at latitude 23° 40' 00" to 23° 41' 00" North and longitude 85° 20' 30" to 85° 21' 40" East. The mining rights for the mine vests with M/s. CCL.

2.1.2 The Colliery is situated in the central part of the South Karanpura Coalfields which extends in east-west direction. The coal seams of the area belong to Barakar series of Lower Gondwana formations. Coal mines in the area were taken over by Coal Mines Authority (CMA) after nationalization of all non-coking coal mines in 1973 and were subsequently transferred to M/s. CCL after its formation in 1975. At present CCL operates 64 coal mines out of which 26 are underground mines and the rest are opencast mines. These mines are divided under administrative control of 11 Areas. Central Saunda colliery falls under Barka-Sayal Area.

- 2.1.3 Barka-Sayal Area is one of the 11 Areas of M/s. CCL and consists of nine (9) mines out of which three (3) are opencast mines and the rest six (6) are underground mines. The underground mines of this Area generally work manually with conventional bord and pillar workings and semi mechanization involving side discharge loaders, etc.
- 2.1.4 Central Saunda Colliery is surrounded by Saunda Karanpura Colliery on the north-east, Bhurkunda Colliery on the south-east, Saunda-D Colliery on the south-west and Sayal-D Colliery on the north-west side.

2.2 History of the Mine:

The colliery was first started in the year 1956 by M/s. Karamchand Thapar & Co. and after Nationalization of coal mines in the year 1973, the mine was taken over by CMA and subsequently in 1975 the ownership of the mine was transferred to M/s. CCL.

2.3 Ownership:

After nationalization of coal mines in the year 1971 and 1973, Coal India Ltd., a holding company was established with four subsidiary companies, i.e. M/s. Bharat Coking Coal Ltd., Eastern Coalfields Ltd., Central Coalfields Ltd. and Western Coalfields Ltd. Subsequent re-organizations of the companies over the years saw creation of eight (8) subsidiary companies of CIL inclusive of one planning and design arm namely, M/s. Coal Mine Planning and Design Institute Ltd.(CMPDIL). At present M/s. CCL is an undertaking of the Govt. of India. The company is managed by a Board of Directors, headed by Sri Rajendra Prasad Ritolia, Chairman-cum-Managing Director and four functional Directors, viz. Director Technical (Operations), Director Technical (Project & Planning), Director (Finance) and Director (Personnel) assist the CMD in day to day administration and planning. The Central Saunda Colliery is one of the 64 mines of M/s. CCL and Sri M.M. Singh, Director Technical (Operations) has been nominated as the owner of the mine under section 76 of The Mines Act, 1952.

2.4 Management:

2.4.1 An elaborate organization hierarchy has been created in the coal sector to run the mines from company head quarter organization to the mine level. The Area level downwards are termed generally as the local management. The Areas are placed under the charge of a Chief General Manager (CGM) or General Manager (GM) as the head. The CGM or GMs are assisted at the Area level by staff officers like, Area Safety Officer, Area Planning Officer, Area Engineer, Area Survey Officer, Area Finance Officer, etc. At the mine level, generally one or two mines are placed under the charge of an Agent. The individual mines are headed by Managers assisted by safety officer, ventilation officer, surveyor, personnel officer, asst. managers, etc. besides supervisory officials like overmen, mining sirdars, etc. Details of the local management at the time of the accident, are given in the following paragraphs.

2.4.2 Sri Md. Taslim, a graduate mining engineer and holder of a First Class Mine Manager's certificate of competency (Coal) was the General Manager of Barka-Sayal Area since 17.08.2004. He was deemed to be an Agent of Central Saunda Colliery as per definition of Agent under Section 2(1)(c) of the Mines Act, 1952.

2.4.3 Sri Umesh Sharma, holder of a First Class Mine Manager's certificate of competency (Coal) and also holder of a degree in mining engineering was the Project Officer and Agent of Central Saunda Colliery since 01.06.2003. Sri Sharma was appointed as Agent under Regulation 8A of the CMR, 1957.

2.4.4 Sri N.K. Martand, holder of a First Class Mine Manager's certificate of competency (Coal) was the manager of the mine appointed under Section

17 of the Mines Act, 1952 read with Regulation 31 of the CMR, 1957. Sri Martand was appointed as the manager of the mine since January, 2004.

2.4.5 Sri A.L. Rajak holder of a Second Class Mine Manager's certificate of competency (Coal) was the Safety Officer of the mine since September, 2004 appointed under Regulation 31A of the CMR, 1957 and Sri I.D.P. Singh, holder of a Second Class of competency (Coal) was undermanager appointed under Regulation 32 of the CMR, 1957.

2.4.6 Sri P.K. Lahiri, holder of Overman's certificate of competency (Coal) was appointed as the Workmen's Inspector(Mining) for the mine.

2.4.7 Sri Vijay Kumar Gupta, holder of Surveyor's certificate of competency (Coal) was appointed as Surveyor for the mine since August, 2003 and he was assisted by S/Sri Srikant Gupta and Om Prakash, Dy.Surveyors. However, Dy.Surveyors did not possess the required statutory qualifications.

2.4.8 Prior to the incumbents of various positions mentioned above, Sri B.B. Dubey, who has since retired from service, was the Agent for the mine and Sri Krishna Murari was the manager of the mine. Sri Krishna Murari is presently working at Argada Area of M/s. CCL. Sri D.K. Singh was the surveyor of the mine prior to Sri Vijay Kumar Gupta. Sri Singh is now posted at Urimari opencast mine under the same Area of M/s. CCL.

2.4.9 For day to day supervision down the line, 12 overmen and 24 mining sirdars were appointed at the mine. At the time of the accident, two sections (districts) were being worked at the mine, one in Bansgarha 'C' seam (development) and the other was in Bansgarha seam Panel no.11 (depillaring). Yield from the development section was about 120 tonne of

coal per day and that from the depillaring section was about 100 tonne of coal per day. The mine had 832 persons on roll as on 01.06.2005 with an average daily employment of about 560 persons.

2.4.10 The mine was being worked in three (3) shifts of eight (8) hours each with the first shift commencing at 08.00 hrs. in the morning.

2.5 **Geology:**

2.5.1 Central Saunda Colliery lies in the central part of South Karanpura coalfields. The coal seams in the area belong to the Barakar stratigraphic series of Lower Gondwana formations. The coal bearing Barakar measures dip South West with a general gradient of 1 in 5 in S 70° W direction. The strike of the coal beds in the North Eastern part is along N 20° W to S 20° E.

2.5.2 A major fault of about 20 m. throw running almost east-west through the middle of the property of Central Saunda Colliery splits it into two parts.

2.5.3 In the area there are 27 coal seams at different horizons. Out of these 19 seams are identified as workable vis-à-vis techno economic considerations.

2.5.4 Upper Sayal, Lower Sayal, Upper Balkudra, Lower Balkudra, Kurse, Upper Nakari, Lower Nakari, Upper Semana, Lower Semana, Hathidari, Bansgarha, Bansgarha-C, Upper Sirka, and Lower Sirka coal seams have been worked partially or extensively within the mine area.

2.5.5 The mine was declared degree-II gassy in accordance to the definition contained in Regulation 2(12) of CMR, 1957. The quality of coal was

primarily non-coking with 17 – 28% ash and ultimate heat value of 4050 – 6000 kcal/kg.

2.6 Entries:

The mine has been worked through multiple inclined entries from surface to reach respective coal seams. Details of these entries are discussed along with individual seam working details in subsequent paragraphs. Bansgarha seam, where the accident took place was worked through Incline nos. 17, 18 and 25. A fan drift was also made to facilitate ventilation of the seam.

2.7 Mine Workings:

2.7.1 Upper Sayal and Lower Sayal the top most seams within the property were contiguous, *i.e.* these were lying within 9 m of each other. Upper Sayal was worked by opencast and Lower Sayal by underground method. However, these workings were not in any way connected with workings of Bansgarha seam.

2.7.2 Upper Balkudra and Lower Balkudra seams were also contiguous. These were present about 26 m below Lower Sayal seam. Upper Balkudra seam had been worked by opencast method on Northern side of the property. These quarries were also filled up partially. Lower Balkudra seam had been worked in a part by underground caving method through 19, 20 and 21 Inclines. These workings were also not in any way connected with workings of Bansgarha seam.

2.7.3 Kurse seam was present about 20 m below Lower Balkudra seam. The seam had been worked through Incline nos. 11, 12, 15, 26 and 27 extensively by u/g caving method and was exhausted. This was the

uppermost seam present in the area lying above and adjacent to Panel no.11 of Bansgarha seam.

- 2.7.4 Upper and Lower Nakari seams (contiguous) were present about 17 m below Kurse Seam. Upper Nakari seam was worked out through two inclines namely 6 & 9 by underground caving method and was sealed off. Lower Nakari seam was worked through Incline nos. 6, 9 and 10, was standing on pillars and was sealed off.
- 2.7.5 Upper and Lower Semana seams were contiguous seams. These were present about 23 m below Lower Nakari Seam and were worked out by u/g caving and stowing method through Incline nos. 1, 2, 3, 4, 5, 7, 8 and 16. These seams were exhausted in 1995.
- 2.7.6 Hathidari Seam was about 46 m below Lower Semana Seam. This seam was worked out through Incline nos. 13 and 14, 24, 30 and 31 partly by caving and partly by stowing. This seam workings were started in January, 1963 and were sealed off in 2001. Some panels in the rise side of the property of Hathidari Seam were extracted with stowing and the remaining area was extracted with caving. This area was connected to overlying seams which were also depillared.
- 2.7.7 Bansgarha Seam is present below Hathidari seam. The dip side property below the 20 m down throw fault was completely depillared by caving. Property lying at the East of main inclines was extracted partly by caving and partly by stowing through Incline nos. 17, 18 and 25.

2.7.8 Bansgarha-C Seam was about 56 m below Bansgarha Seam and was being developed. These workings were more than 750 m away from Panel no.11 of Bansgarha seam where the accident took place.

2.7.9 Upper Sirka Seam was present about 52 m below Bansgarha-C Seam and was standing on pillars. At present only pumping of water was being done in this seam.

2.7.10 Lower Sirka Seam was present about 15 m below Upper Sirka Seam. This seam was partly developed and standing on pillars.

2.8 Details of the workings of Seams in relation to Panel no.11 of Bansgarha Seam:

2.8.1 Upper Sayal Seam, Lower Sayal Seam, Upper Balkudra Seam & Lower Balkudra Seam were present in the mine but not in any way related to the workings of Panel no.11 in Bansgarha Seam. These seams were not present over Panel no.11.

2.8.2 Kurse Seam was the upper most seam, present in the area lying above and adjacent to Panel no.11 of the Bansgarha Seam. The seam was depillared by caving in the year 1982-83, and was lying above the dip side of the Panel no.11. Cover at this place was about 20 m.

2.8.3 Upper Nakari seam was present about 18 m below Kurse seam. Upper and Lower Nakari seams were contiguous seams. Upper Nakari seam was extracted by caving in the year 1983, in the area lying above Panel no.11. Cover was about 27 m. Lower Nakari Seam was standing on pillars.

2.8.4 Upper Semana Seam was present about 25m below Lower Nakari Seam. Upper Semana Seam was present above part of the Panel no.11 and was

- extracted with splitting and-stowing operations in 1992. Cover was about 60 metres. Upper Semana Seam and Lower Semana seam were contiguous seams with a parting of about 3 m.
- 2.8.5 Lower Semana Seam was present over part of the Panel no.11. Some of the area was extracted by stowing and some was standing on pillars.
- 2.8.6 Hathidari seam was about 26 m above Bansgarha seam. This seam was completely worked out and sealed off. The area lying above Panel no.11 was partly depillared by caving and partly standing on pillars. A fault of about 1 to 8 m throw was present in Hathidari Seam, over the area of Panel no.11 of Bansgarha Seam.
- 2.8.7 Workings of Hathidari Seam, above Panel no.11 were separated into two sections, by a fault (Fx-Fx), which can be termed as North and South sections. North side section was depillared by caving (Panel no. 7), in the year 1992. South side section was partly depillared by caving (Panel no.10) in the year 1993-94. Dip side property of Panel no.10 was left standing on pillars.
- 2.8.8 Bansgarha Seam was present about 26 m below Hathidari Seam. One depillaring district (Panel no.11) was being worked in this mine, where this accident occurred.
- 2.8.9 Bansgarha-C Seam was about 56 m below Bansgarha Seam and was being developed. These workings were more than 750 m away from Panel no.11.

2.9 Details of Bansgarha Seam:

- 2.9.1 Bansgarha seam was about 4.95 m thick and was developed along the floor. It was dipping at about 1 in 5 (about 11.5°) due S 74° W. This seam was developed through different sets of inclines (17, 18, 25 & a fan drift) and workings were inter connected.

The seam was developed along apparent dip by driving cross cuts at a gradient of about 1 in 7. Incline no. 17 was the haulage roadway. A direct hauler was installed at the surface to haul tubs from the working faces of 17 Cross-cut district.

- 2.9.2 The workings lying, beyond the 20 m down throw fault were approached by making two drifts from 22 Level/ Main inclines and later completely depillared by caving. Now only pumping was being done from the drifts.

The area lying at the East side of no. 17 Incline, was depillared and sealed off (except Panel no.15 which was discontinued due to lag in stowing). Dip side panels of east side of no. 17 Incline were extracted by caving and the rise side panels with stowing.

Area lying within 17 Cross-cut district, 8 Cross-cut district and the main inclines were standing on pillars. 17 Cross-cut workings lie on the rise side (North side) of 20 m throw fault.

- 2.9.3 Area lying in 17 Cross-cut, up to 26 level, was developed earlier (1974-76) and below 26 level was developed in 1994.

2.10 Details of Panel no.11:

Panel no.11 consisted the developed area below 11 level of Main Inclines and the area of 17 Cross-cut section.

Dip side panel boundary, in 29 Level was between 17 Cross-cut & 16 Cross-cut and in 28 level was between 16 Cross-cut & 14 Cross-cut. Rise side panel boundary was up to 11 level of Main Inclines. Cover from the surface varied from 60m to 130m.

Immediate roof of the panel was shale followed by sand stone. Fault Fx-Fx of Hathidari Seam was above 15 Cross-cut of Bansgarha Seam i.e., in the middle of Panel no.11. The panel was about 400 m X 100 m along 17 Cross-cut and about 150 m X 80 m along main inclines.

CHAPTER: III

STATUTORY PROVISIONS

3.1 Section 18 of The Mines Act, 1952

Duties and responsibilities of owners, agents and managers :-

- (1) The owner and agent of every mine shall each be responsible for making financial and other provisions and for taking such other steps as may be necessary for compliance with the provisions of this Act and the regulations, rules, bye-laws and orders made thereunder.
- (2) The responsibility in respect of matters provided for in the rules made under clauses (d), (e) and (p) of section 58 shall be exclusively carried out by the owner and agent of the mine and by such person (other than the manager) whom the owner or agent may appoint for securing compliance with the aforesaid provisions.
- (3) If the carrying out of any instructions given under sub-section (2) or given otherwise than through the manager under sub-section(3) of section 17 results in the contravention of the provisions of this Act or of the regulations, rules, bye-laws or orders made thereunder, every person giving such instructions shall also be liable for the contravention of the provision concerned.

- (4) Subject to the provisions of sub-sections(1), (2) and (3) the owner, agent and manager of every mine shall each be responsible to see that all operations carried on in connection with the mine are conducted in accordance with the provisions of this Act and of the regulations, rules, bye-laws and orders made thereunder.
- (5) In the event of any contravention by any person whosoever of any of the provisions of this Act or of the regulations; rules, bye-laws or orders made thereunder except those which specifically require any person to do any act or thing, or prohibit any person from doing an act or thing, besides the person who contravenes, each of the following persons shall also be deemed to be guilty of such contravention unless he proves that he had used due diligence to secure compliance with the provisions and had taken reasonable means to prevent such contravention:
- (6) the official or officials appointed to perform duties of supervision in respect of the provisions contravened;
- (7) the manager of the mine;
- (8) the owner and agent of the mine;
- (9) the person appointed, if any, to carry out the responsibility under Sub-section (2).
- (10) Provided that any of the persons aforesaid may not be proceeded against if it appears on enquiry and investigation that he is not prima facie liable.
- (11) It shall not be a defense in any proceedings brought against the owner or agent of a mine under this section that the manager and other official have been appointed in accordance with the provisions of this Act or that a person to carry the responsibility under Sub-section (2) has been appointed.

3.2 Regulation 100(1) of the Coal Mines Regulations, 1957

No extraction or reduction of pillars shall be commenced, conducted or carried out except with the permission in writing of the Regional Inspector and in accordance with such conditions as he may specify therein. An application for permission under this sub-regulation shall be accompanied by two copies of an

up-to-date plan of the area where pillars are proposed to be reduced or extracted showing the proposed extent of extraction or reduction of pillars, the manner in which such extraction or reduction is to be carried out the thickness and depth of the seam, the nature of the roof, and the rate and direction of dip.

3.3 Regulation 127 of the Coal Mines Regulations, 1957

Danger from underground inundation. –

- (1) Proper provision shall be made in every mine to prevent irruption of water other liquid matter or any material that is likely to flow when wet from the workings of the mine the same mine or of an adjoining mine and to prevent accidents while drilling bore-holes for probe or release of a body of water or other liquid matter.
- (2) Where work is being done in –
 - (a) (i) any seam or section below another seam or section; or
 - (ii) any place in a seam or section, which is at a lower level than any other place in a lower seam or section; or
 - (iii) any place in a seam approaching a fault passing through an upper seam or section, which contains or may contain an accumulation of water or other liquid matter or any material that is likely to flow when wet; or
- (b) any water-bearing strata,
all useful information including the position, extent and depth of the above mentioned features shall be acquired and kept recorded and a scheme of working designed to prevent irruption of water or other liquid matter or any material which flows when wet shall be prepared and put into operation.
- (3) Without prejudice to the requirement of sub-regulation (1) and sub regulation (2), no working which has approached within a distance of 60 metre of any other working (not being the working which has been physically examined and found to be free from accumulation of water or other liquid matter or any material that is likely to flow when wet) and whether in the same mine or in an adjoining mine, shall be extended further except with the

prior permission in writing of the Regional Inspector and subject to such conditions as he may specify therein.

Explanation – For the purpose of this sub-regulation, the distance between the said workings shall mean the shortest distance between the workings of the same seam or between any two seams or sections, as the case may be, measured in any direction whether horizontal, vertical or inclined.

(4)(a) Every application for permission to extend any working referred to in sub-regulation (3) shall be accompanied by two copies of the plan and section showing:

- (i) The outlines of all such disused or abandoned workings in relation to the working approaching them and also the depth of such disused or abandoned workings from the surface;
- (ii) The outlines, the lay out and the method of the proposed workings for which permission is sought;
- (iii) The faults, dykes and other geological disturbances in relation to working specified in clause (i) or (ii) of the sub-regulation; and
- (iv) Any other information that is available with the management and any other particulars or information that may be required by the Chief Inspector.

(b) When permission is granted to extend any working referred to in sub-regulation (3) or sub-regulation (5), it shall be extended strictly in accordance with the plan the method approved under, and the conditions specified in, such permission; and there shall be no variation there from unless such variation is again approved by the Chief Inspector.

(5) Whenever seepage of water, which is not normal to the seam is noticed at any place workings or if there be any such suspicion or doubt such working shall immediately be stopped and the Chief Inspector and the Regional Inspector shall forthwith be informed of such seepage. Such working shall not be extended further except with the prior permission in writing of the Chief Inspector and subject to such conditions as he may specify therein.

- (6)(a) The height or width of any working referred to in sub-regulation (3) or sub-regulation (5) shall not exceed 2.4 metre and there shall be maintained at least one bore-hole near the centre of the working face, and sufficient flank bore-holes on each side; and, where necessary, bore-holes above and below the working to intervals of not more than five metre.

All such bore-holes shall be drilled sufficiently close to each other to ensure that the advancing face will not accidentally hole through into a working containing water or liquid matter or any material that is likely to flow when wet and shall be maintained and shall be constantly maintained at sufficient distance in advance of the working and such distance shall in no case be less than three metre. These precautions shall be carried out under the direct supervision of an official, having Manager's or Overman's specially authorised for the purpose.

- (b) A record showing the exact height and width of such working, the number of bore-holes driven, the length of each bore-hole, the places at which and the direction in which each bore-hole was driven, shall be maintained by the official referred to in clause (a) in a bound paged book kept for the purpose and the entries made therein shall be signed and dated by such competent person and shall be countersigned by the manager every day. Also a plan and section of such working showing the above particulars shall be prepared and maintained and they shall be brought up to date at least once in every fifteen days.

- (7) Unless specific relaxation is granted by the Chief Inspector in writing under sub-regulation (8), all the provisions of sub-regulation (6) shall be strictly complied with while extending any working referred to in sub-regulation (3) or sub-regulation (5) whether or not the permission granted to extend such workings requires compliance with all or any of the provisions of sub-regulation (6).

- (8) If the Chief Inspector is satisfied that the conditions in any mine or part thereof are such as to render compliance with all or any of the provisions specified in sub-regulation (6) unnecessary or impracticable, he may, by an order in writing and subject to such conditions as may be specified therein, relax, vary or dispense with all or any of the conditions and requirements contained in sub-regulation (6), and, if he is of the opinion that the conditions at any mine or part thereof are such as to require additional precautions to be taken, he may by an order in writing require that such additional precautions besides those specified in sub-regulation (6) shall be taken.

CHAPTER: IV

THE ACCIDENT

4.1 Occurrence of accident:

- 4.1.1 It is now considered relevant that, at this stage, the sequence of events leading to the accident be reviewed. It appears that on 14th June, 2005 the mine was being operated normally starting from the first shift (08.00am to 04.00pm). As was the practice, work continued in subsequent shifts and the third shift of 14.06.2005 also started normally at 12'00 midnight. The shift was under the charge of one overman, Sri Sambhunath Bhuian for Bansgarha seam workings. There was no Undermanager or Assistant Manager in-charge during the third shift. Sri Bhuian engaged 45 persons including 15 loaders in Panel no.11. The front line supervisor in-charge for the panel on that day was Sri Budhan Mahto, Mining Sirdar. Coal preparation work was performed by Sri Jitender Prasad, Shot-firer. Three (3) loaders were engaged for doing time-rated jobs and remaining 12 loaders were engaged for loading coal in coal tubs manually, *i.e.* with hand shovels and baskets. These loaders were divided into two gangs. One gang of six (6) was engaged at 25½ level North face off 14th cross-cut and the other six (6) were engaged at 27th level North slice off 15th cross-cut. At 27th level slice face, coal was available from previous shift operations; however, the 25½ level North face off 14th cross-cut

was blasted twice during the shift by Sri Jitender Prasad, shot-firer for preparation of coal.

- 4.1.2 At about 06.30 hrs. of 15.06.2005, Sri Prasad, shot-firer, left the district after ensuring that adequate coal was available at the faces for loading. Reportedly, coal loading was continuing at that time at both the faces. Around 07.15 hrs. two pump operators, Sri Md. Haneef and Sri Nagender Singh left the mine after talking to the overman, Sri Shambhunath Bhuian over telephone. The telephone was located at 27th level, 17th cross-cut junction. It may, therefore, be inferred that at that point of time the overman must have been near the telephone in the district.
- 4.1.3 While, at around 07.30 hrs. Sri Md. Haneef had reached the junction of 8th cross-cut and main dip, he heard a loud sound emanating from the main dip followed by a gust of air and cloud of dust. He was pushed forward by the force of air. It is pertinent to note here that he was not injured. He reached the surface and informed the attendance clerk on duty about the incidence. The information was communicated to Sri A.L. Rajak, Safety Officer, who in turn, informed the Manager, Agent and other officials.
- 4.1.4 About the same time, *i.e.* 07.30 hrs., Sri Naresh Mochi, dresser, was present at the surface. He noticed violent air movement at the incline mouth and ventured into the mine along with some other co-workers to inquire into the event which was not normal. He located swirling water at 21st level, 17th cross-cut junction. He rushed back to the surface around 08.10 hrs. and informed Sri Sanjay Kumar, undermanager, who by that time was present at the incline mouth.
- 4.1.5 Sri Umesh Sharma, Agent, Sri N.K. Martand, Manager, Sri Sanjay Kumar, Undermanager, Sri Jagdish Sharma, Overman and others who had gathered at the incline mouth by then, went down the mine at about 08.20 hrs. Sri Sharma along with some others went to 8th cross cut and Sri Martand and others went to 17th cross-cut.

Galleries were found full of water up to 20th level junction at 8th cross-cut and up to 21st level at 17th cross-cut.

- 4.1.6 Twelve (12) loaders engaged in loading coal, the overman, Sri Sambhunath Bhuian and the mining sirdar, Sri Budhan Mahto were trapped inside the mine and could not come out.

4.2 Rescue and Recovery:

- 4.2.1 Sri Umesh Sharma, Agent of the mine, informed the General Manager of the area about the mishap, who in turn informed DGMS, Ranchi office, Director Technical (operations), CCL and the rescue station located at Ramgarh. The Director Technical (Op) then appraised the CMD and other senior officials about the incident. Rescue teams from Ramgarh rescue station reached the mine at about 11.00 hrs. and tried to search for survivors but none could be located.
- 4.2.2 A control room was established near the incline no. 17 by Sri M.M. Singh Director Technical /Nominated Owner of the mine. He was assisted by Sri B.K. Sinha, Director Technical (P & P) and three Chief General Managers viz., Sri R.K. Dubey, Sri R.B. Singh & Sri Nawab Singh, General Managers of different Areas of M/s Central Coalfields Ltd., along with their Project Officers, Engineers and workmen were engaged for various activities of dewatering in each shift.
- 4.2.3 Officers of Directorate General of Mines Safety were actively involved during the recovery operations. Immediately after receiving the information about the accident, all the Officers of DGMS who were stationed at Ranchi, Ramgarh and Koderma rushed to the mine and camped there till the bodies of the deceased were recovered.
- 4.2.4 Sri Bhaskar Bhattacharjee, DG, visited the mine at about 09.00 pm on the same day of accident i.e. on 15.06.2005 along with officers of DGMS Head Quarters and inspected underground workings. He held meeting with officers of DGMS and the management. Sri Bhattacharjee again inspected underground workings on 18.06.2005 when divers from Indian Navy came to the mine and stipulated certain guidelines to be followed

during search operations, since the divers were not familiar with mining conditions. He was present during search operations. Sri Bhattacharjee again inspected the mine on 04.07.2005 after the goaf edges were exposed.

- 4.2.5 Dewatering of the mine assumed importance for recovery work. The first pump was installed on 15th June, 05 and started dewatering at about 04.00 pm. Pumping capacity was enhanced subsequently by installing additional pumps. Pumps were procured from different areas of M/s CCL and also from other subsidiaries of M/s Coal India Limited.

Some problems were faced while installing and running the pumps. There were only two galleries (17 Cross-cut and 8 Cross-cut) where the pumps were initially installed. When the place was not sufficient for installing additional pumps, they were installed in the adjoining dip galleries where there was no haulage track.

There was only one exit way (no. 18 Incline) for the delivery pipe lines of all the pumps. Hence, two bore holes were drilled from surface and the delivery pipe line was brought to surface through these bore holes.

Big boulders/muck from the goaf area carried by water had got accumulated in the galleries. This created some problem in shifting of the pumps for further lowering down of the water level.

- 4.2.6 Water level in 8th cross-cut district and the Panel no.11 depillaring district was same up to 25th level in view of a connection at that level between 14th cross-cut and 13th cross-cut. Water bodies were separated on 27.06.2005 after the water level receded below 25 level/14th cross-cut. Later, dewatering operations continued in 8th cross-cut district till 05.07.2005 and water level was maintained at 225 m RL. In 17th cross-cut

district, water level was brought down up to 28th level off 17th cross-cut (up to 211 m RL) by operating one 1000 gpm pump and a 500 gpm pump.

4.2.7 A team of divers from Indian Navy arrived on 18.06.2005 to search for the trapped survivors. They were present during entire recovery operations *i.e.* till the last body was recovered. Rescue team from M/s Singareni Collieries Company Ltd. also arrived on 27.06.2005 and was associated with the recovery operations.

4.2.8 All the rescue and recovery operations were conducted under rescue cover. Fresh air base was initially established at 15th level off main haulage incline and later shifted to 23rd level off 17th cross-cut. The bodies were recovered by rescue teams with the help of Indian Navy Divers/ Singareni rescue team and local workmen.

4.2.9 On 19th June, 2005, at about 16.40 hrs. the first body of one of the victims was recovered. Subsequently, over the next few days, all 14 bodies of the victims were recovered from the mine. The last body was recovered at about 15.30 hrs on 29th June, 2005. However, dewatering operations continued to find out the point of entry of water causing the devastation.

4.2.10 Dewatering continued till 28th level/ 17th Cross-cut was exposed on 10th July, 2005. Reportedly, Sri N. Rao, Director of Mines Safety, Ranchi Region of DGMS and Sri B.D. Yadav, General Manager of the Area inspected the Panel no.11 on the date. During inspection crushing symptoms were observed by them on the pillars between 28th level and 29th level between 17th Cross-cut and 16th cross-cut. Some disturbances were also observed near 16th Cross-cut/ 27th level junction. In view of

unsafe conditions, they decided, not to further lower down the water level below 28th level/ 17th Cross-cut.

4.2.11 Carbon Monoxide gas (CO) was found in the district while dewatering below 26th level. CO was initially found in traces and later increased when water level was lowered to below 27th level and the goaf area got exposed. Later, CO reduced after the water level was allowed to rise up to 26th level / 17th Cross-cut. There was no return air way for the district till 25th level was exposed. Ventilation circuit was established with the progress of dewatering operations.

4.3 Compensation:

Compensation as per Company's rules was immediately paid to the nominees of the victims. M/s. CCL has submitted to the Court that in addition to the benefits given employment was provided to one dependant of each of the victims, due compensation has been released by the Commissioner, compensation; Ministry of Coal, Govt. of India has sanctioned an ex-gratia payment of Rs. 2.0 Lakh to each family; under special scheme of 'Group Personal Accident Scheme' Rs. 5.00 Lakh has been paid through Oriental Insurance Company to each family, etc. The details of amount paid to the families of the victims is given at Annexure-X.

CHAPTER: V

INSPECTIONS & OBSERVATIONS

5.0 At this juncture, it is relevant to detail the observations made by various officials during their inspections of the mine after the accident. After the accident at Central Saunda Colliery, number of persons from the DGMS, CCL, Trade Unions and others inspected the mine. First formal inspection was made at about 1800 hrs. on 15th June, 2005. The Chairman, Court of Inquiry along with Sri Rajendra Prasad Singh, Assessor, and others from DGMS, CCL, Trade Unions and Press, inspected the mine first on 19.11.2005. Subsequently, Sri Ravindra Sharma inspected the mine on 16th December, 2005.

5.1 General Observations:

First inspection of the underground workings was made by DGMS officers at about 6 p.m. on 15.06.2005. According to their observations, water was found filled up to 21st level in 17 cross-cut district of Panel no.11 and also in 8 cross-cut district. As dewatering progressed, the area was regularly visited. Dewatered areas were found filled up with muck, timber, boulders etc. Boulders of about 6.2 m x 5.4 m x 2.0 m were also found moved from their place of origin by the force of water. Tubs, rails etc. were found badly damaged, almost beyond recognition. Details are given below:

- i) In most of the dip rise galleries, above 28th Level, deposition of muck and boulders were found in the dip- rise and level galleries. In the Level galleries, deposition was towards dip side i.e. towards West and in most of the dip-rise galleries deposition was found towards South.

- ii) Red sand was found in some of the galleries below 23rd level, mostly towards the South side galleries.
- iii) At many places sleepers, wooden props and steel chocks were found dismantled, pushed and stacked.
- iv) Heap of sand was found at 28 LN/ 17 Cross-cut.
- v) Rails were found bent in the panel.
- vi) Five props were found in intact position at the junction off 27½ Level North / 16 Cross-cut slice junction.

5.1.1 Big boulders of coal/ shale/ sand stone were observed at the places mentioned below

- i) One boulder of coal/ shale piece about 3.2 m x 2.9 m x 1.6 m was found at the junction of 25 Level South in 17 Cross-cut.
- ii) One boulder about 1.0 m x 1.0 m x 0.5 m was found at the junction of 25 Level and 15 Cross-cut.
- iii) One boulder about 1.5 m x 0.6 m x 0.5 m was found in 14 Cross-cut below 25 Level.
- iv) One boulder about 3 m x 2 m x 1 m found in 15 Cross-cut below 26 Level.
- v) One white sand stone boulder about 2.4 m x 0.9 m x 0.8 m was found in 17 Cross-cut below 25 Level South.
- vi) One sand stone boulder about 2.1 m x 1.2 m x 0.6 m was found in 17 Cross-cut below 25 Level North.
- vii) One sand stone boulder about 3 m x 1.5 m x 1 m was found in dip rise gallery driven in a pillar in between 16 Cross-cut and 15 Cross-cut and 27 Level and 26 Level.
- viii) One sand stone boulder about 6.2 m x 5.4 m x 2.0 m was found at the junction of 16 Cross-cut and 27 Level South.

- ix) One big boulder of sand stone about 4.5m x 4.5 m x 2.5m was found in 27 Level South/ 16 Cross-cut.
- x) One boulder about 3.5 m x 2.0 m x 1.0 m was found in 17 Cross-cut below 27 Level South.
- xi) One boulder about 1.2 m x 1.0 m x 1.2 m was found in 27 Level South gallery/ 17 Cross-cut.

5.1.2 Coal tubs were found at the following places:

- (i) Three loaded coal tubs in buried condition were found in 14 Cross-cut below 26th Level.
- ii) One loaded tub was found at the junction of 25 Level of 15 Cross-cut.
- iii) Three coal tubs were found at the curve of 26 LS junction/ Cross-cut. Five more coal tubs were found in 26 LS gallery/ 17 Cross-cut.
- iv) Seven coal tubs were found in 27 LS/ 17 Cross-cut.

5.2 Observations vis-à-vis panel boundary and goaf edge:

Following workings were found to have been made beyond the permitted boundary of the panel as indicated on plan no.246 for which permission was accorded by DGMS vide letter no. RR/10397/Perm 100(1)/03/2930 dated 28.11.2003.

- i) A split gallery was driven at 25½ Level North/ 14 Cross-cut towards the Fault Fx-Fx. (this was one of the working places at the time of accident)
- ii) 26 Level North / 14 Cross-cut was also driven earlier, towards the Fault Fx-Fx. This fault plane was also exposed across 25 Level North/ 14 Cross-cut connecting the 8 Cross-cut section. Throw of the fault at that place was about 6.8 m. This connection was not shown on the plan applied for permission for the depillaring permission.
- iii) One dip gallery, parallel to 14 Cross-cut, was driven from 26 Level North, near the Fault Fx-Fx.

iv) One split gallery at 26½ Level North/ 14 Cross-cut was also driven to connect the Dip-Rise Gallery driven along the Fault Plane from 26th Level.

Goaf edge line of roof fall was observed at the Fault Plane off 14 Cross-cut dip / 27 Level North and extended up to the junction of 28 Level in 16 Cross-cut. The roof was found broken along the goaf edge line. This roof breakage line was found extended diagonally from the North Fault Plane along South West direction. Further extension of the breakage line could not be seen due to presence of water below 28 Level in 17 Cross-cut. All along the breakage line, roof was found packed with fallen material.

CHAPTER: VI

ISSUES BEFORE THE COURT – EVIDENCE

6.1 Source and quantity of water:

There is no dispute regarding fall of roof in Panel no.11 of Bansgarha seam that occurred at about 07.30 AM on 15.06.05 and there is also no dispute that huge quantity of water rushed into the workings of the said panel subsequently. Dispute, however, is on the source of water,

Source of Water:

High Powered Committee constituted by The Ministry of Coal, Govt. of India, representatives of Trade Unions and DGMS are of the view that accumulated water of overlying Hathidari seam entered into Bansgarha seam workings immediately along with the fall of roof. Coal Mines Officers Association and the Management of the mine are of the view that there was no water in Hathidari seam above Panel no.11 of Bansgarha seam at the time of the fall of roof and water entered into Bansgarha seam workings from overlying seams other than Hathidari seam. This inrush of water according to them was caused by strata movement in overlying seam subsequent to the fall of roof and was not immediate but happened some time after the fall.

The argument of the management and Officer's association is based on the fact that a 10cm diameter borehole had been driven from Bansgarha seam to Hathidari seam and full bore water had flown through this bore hole continuously for about four months thereby draining out water from Hathidari seam. Subsequently only about 3cm bore water had been flowing down through the bore hole which in their opinion was normal strata water, perennial in nature and the Hathidari seam was dry.

The High powered committee, trade unions and DGMS are of the opinion that the bore hole in question was very old drilled in the year 1991 and apparently had become jammed by mud/sand, etc. during flow of water through it and Hathidari seam was not fully dry.

Study of the original underground plan of Hathidari seam maintained by the mine management and seized by DGMS after the accident has revealed that a 6.8m throw fault running along East-West divides Hathidari seam workings lying just above Bansgarha seam, 11 panel into two parts - Workings on the south side of fault and workings on north side of the fault. Isolation stoppings were provided across all the connections between these workings. Thus, these two workings lying just above Panel no.11 of Bansgarha seam formed two separate water bodies in Hathidari seam.

Both the water bodies of Hathidari seam as mentioned above, got connected to Bansgarha seam workings due to the fall of roof on 15.06.2005. The borehole mentioned earlier through which the water of Hathidari seam had been assumed to have been drained out was connected only to one of the water bodies. The area, south of the fault plane remained fully water logged and contained about 11.45 million gallons of water which rushed into the Bansgarha seam workings with vengeance immediately after the roof fall. Water from further overlying seams and remaining water from the other side of the fault plane in Bansgarha seam might also have rushed down below.

A copy of part plan of Hatidhari seam showing the water bodies, fault plane and disposition of Panel no.11 workings of Bansgarha seam and

calculation of estimated quantity of water in water body lying in the area on south of the fault plane are given at Annexure – XI & XII.

6.2 Cause of the Accident:

6.2.1 Air-Blast due to fall of roof as Cause of Accident:

The mine management, the officers association, AIMPA and IMMA were of the opinion that the immediate cause of the accident and death of the workers was air-blast and water flowed down subsequently to drown the workers after their death.

The above contention was based on assumptions that overlying Hathidari seam was dry and that cause of death as per post-mortem reports of the victims was due to shock and hemorrhage as result of injuries caused by hard, blunt and heavy substances. The Court is of the view that these assumptions were not correct. The overlying Hathidari seam situation vis-à-vis water has been clearly clarified in para 6.1 above and assumption that Hathidari seam was free of water was not correct. Further, there has been no mention of any external injuries to any of victim's body in the inquest reports of the police. The post-mortem examinations on bodies were carried out mechanically, as revealed during cross-examinations of doctors and hence cause of death as mentioned in post-mortem reports cannot be accepted. A table showing cause of death as per post-mortem report and nature of injuries mentioned in inquest report in respect of all the victims is enclosed at Annexure-XIII. In addition, inquiry and observations substantiate the fact that there was no dislodgement of supports, damage to property or injury to any person in the other parts of mine above 21st level. Even the pump khalasi on whose evidence the occurrence of air blast has been assumed, was not injured. Neither there

were any other tell-tale indications of an air-blast. Damage to rails, etc. was limited to 21st level up to where the water rose implying that these were caused by force of water that rushed into. There was no history of Airblast in Bansgarha seam of the mine and even area of roof exposure at the time of the fall of roof was not sufficient to have caused an air-blast of high magnitude.

In the above light, the contention of the mine management and officers' association, etc. that an air-blast due to fall of roof caused death of the workers cannot be accepted.

6.2.2 Inrush of Water as the cause of accident:

The high powered committee, DGMS and trade unions were of the view that persons were killed due to drowning. The evidences before the Court, deposition and arguments by different parties and detailed examination of plans, records, etc. and above all the cross-examination of the Doctors who conducted the post mortem examinations and inquest reports of police lead to the conclusion that the accident and death of the workers was caused by sudden inrush of water from overlying Hathidari seam and drowning.

6.3 Post Mortem Examination Reports:

The post mortem examinations of the dead bodies were conducted at Saunda hospital of M/s. CCL between 19.06.2005 to 29.06.2005. Different doctors were assigned the post-mortem job. Six doctors carried out the examinations on the victims. The cause of death assigned were shock and hemorrhage as result of injuries caused by hard, blunt and heavy substances. In all the cases more or less the same cause was assigned.

All the doctors who carried out post-mortem examinations on the victims were examined by the Court on 18.02.2006. During examination, it was accepted by doctors that dissection of the bodies was done by Class-IV employees of the hospital and not by doctors themselves due to heavily petrified condition of the bodies. The Court is led to believe that the post-mortem examinations were done rather mechanically and doctors even could not satisfactorily reply to the queries by the Court on medical jurisprudence. The doctors also could not express or did not know the fact that in 20-40% cases of drowning, water does not enter into the lungs of the victims.

In the inquest reports of police, it was stated that the bodies were swollen and disfigured and were in various stages of putrefaction. The epidermis from the dead bodies were falling off at places. The reason for the condition of the dead bodies were attributed to remaining submerged under water and mud. There was no mention of external injuries in any of the inquest reports except in one.

After considering all evidences before it, the Court is of the view that all the deaths occurred due to drowning and not due to an air-blast.

6.4 Point of Entry of water and its pathway:

The statutory inquiry by DGMS pinned the point of entry of water at the intersection of a fault plane and geologically disturbed area in the north-west side of the panel. The observations during inspections and the disposition of muck, boulders, etc. in Panel no.11 of Bansgarha seam support this assumption by DGMS and water from overlying seams in all probability found its way down through this weakness plane following the fall of roof.

6.5 Role of Workings outside the Panel Boundary:

The inquiry conducted by the high powered committee and DGMS into the accident clearly brought out the fact that Panel no.11 in Bansgarha seam was worked beyond the area permitted by DGMS. This gets corroborated by the mine plans submitted by the management at the time of seeking permission from DGMS as well as the plans made after the accident and also the mine plans seized by DGMS from the mine after the accident. The workings were found to have been made beyond the permitted boundary of the panel indicated in plan no.246 for which permission was accorded by DGMS vide letter no. RR/10397/Perm 100(1)/03/2930 dated 28.11.2003.

Goaf edge line of roof fall was observed at the Fault Plane off 14 Cross-cut dip / 27 Level North and extended up to the junction of 28 Level in 16 Cross-cut. The roof had broken along the goaf edge line. This roof breakage line was found extended diagonally from the North Fault Plane along South West direction. Further extension of the breakage line could not be seen due to presence of water below 28 Level in 17 Cross-cut. All along the breakage line, roof was found packed with fallen material.

In view of what has been stated above, it becomes evident that extension of workings beyond the permitted area and exposure of the weakness plane, i.e. the fault plane on the north-west side of the panel exposed a zone of weakness in the roof strata which contributed to the fall of roof and subsequent inundation. The mine management was not careful enough to restrict the workings within the permitted boundary of the panel.

6.6 Report of High Powered Committee constituted by Ministry of Coal:

The High Powered Committee constituted by The Ministry of Coal presented their report through an affidavit before the Court. Sri S. Choudhary, CMD, CMPDIL who was also the Chairman of the said committee appeared in person before the court and narrated the findings of its report. The committee opined that no systematic and scientific effort was made for dewatering the upper seams by the colliery management as required in the depillaring permission granted by DGMS. The committee concluded that accumulated water from overlying Hathidari seam had found its way into Bansgarha seam through intervening parting between the two seams and the water in both Hathidari and Bansgarha seams stabilized at a level of 252m, *i.e.* up to 21st level in Bansgarha seam after flooding.

6.7 Statutory Inquiry Report by DGMS:

Statutory inquiry conducted by DGMS after the accident concluded on the cause of the accident as follows,

"While twelve loaders under the supervision of an overman and sirdar were engaged in a depillaring by caving panel and also in an area outside the panel, affected by fault, a major roof fall took place in the goaf, accompanied by sudden and violent inrush of water from the overlying seam at a parting of about 26 m and the resultant blast of air, water and debris killed all of them."

This accident could have been averted, had

- (i) the goaves of over lying seams lying vertically above and within 60 m of the panel were kept free of water during the entire depillaring operation, as required under Condition 5.3 of the permission letter no. RR/10397/Perm 100(1)/03/2930 dated 28.11.2003 granted under Reg. 100(1) of the Coal Mines Regulations, 1957,
- ii) the area outside the panel indicated on plan no. 246, not worked in contravention of condition 2.0 of the permission letter no. RR/10397/Perm 100(1)/03/2930 dated 28.11.2003 granted under Reg. 100(1) of the Coal Mines Regulations, 1957,
- (iii) the position of the panel boundary fault, with the amount and direction of its throw, was marked on the plan as required under Reg. 59(1)(b)(vi) of the Coal Mines Regulations, 1957

6.8 Report of the committee appointed by M/s. CCL

M/s. CCL on their own accord constituted a three member committee consisting of Prof. A.K. Ghose, former Director, Indian School of Mines, Prof. R.N. Gupta, Director, National Institute of Rock Mechanics, Kolar and Dr. S.K. Singh, Scientist, CMRI. The committee concluded on the cause of the accident as follows,

"The accident was the direct consequence of a massive air blast. Stick-slip movement along Fault Plane CF11 in the accident locale in all likelihood exacerbated the intensity of dynamic ground movement connecting to upper seams which provided the source of water for the subsequent inundation. The air blast was solely and directly responsible for the 14

fatalities as convergent evidences would allow one to infer. As the fault plane movement and consequential effects were caused by natural forces beyond human control, one would be constrained to concede that possibly the event was an "Act of God".

The members of the said committee were examined by the Court. Firstly, appointment of the committee was a *suo moto* act on the part of CCL management. Further, Dr. S.K. Singh, Head of Bord and Pillar Department, CMRI, Dhanbad and a member of the committee deposed before the Court that it required further scientific investigation. Sri R.P. Ritolia, CMD of CCL submitted before the Court that reports of this committee cannot override the report of the committee appointed by Ministry of Coal. After evaluating all evidences before this Court, it cannot but conclude that the findings of this committee is a case of retro-fitting a pre-determined conclusion and hence with all prudence this Court cannot accept the logic behind and the conclusion drawn by this committee.

CHAPTER: VII

CONCLUSIONS

- 7.0 On the basis of the evidence, the Court has arrived at the conclusion that cause of the accident was establishment of connection between the working district of Bansgarha seam and overlying water logged abandoned workings of Hathidari seam caused by fall of roof. The accident occurred due to failure to make Hathidari seam lying above and within 60 metres of working district of Bansgarha seam free of water as required by condition no. 5.3 of the permission letter no. RR/10397/perm 100(1)/03/2930 dated 28.11.2003 granted under Regulation 100(1) of the Coal Mines Regulations, 1957.

Extraction of the seam beyond permitted area in Panel no.11 and exposure of the fault plane contributed to the fall of roof and subsequent inundation.

CHAPTER: VIII**RESPONSIBILITY**

8.1 Once the cause of accident is established, the responsibility for accident has to be fixed. It is evident from the cause of accident that it had occurred due to non-compliance of conditions of DGMS permission letter. It is mainly a human failure in execution and therefore, local officers of M/s CCL at Area and mine level are held responsible for the accident. Details are given below:

8.2 Section 18(4) of the Mines Act, 1952 reads as follows,
"the owner, agent and manager of every mine shall each be responsible to see that all operations carried on in connection with the mine are conducted in accordance with the provisions of this Act and of the regulations, rules, bye-laws and orders made thereunder".

Sri Md. Taslim was the General Manager and deemed agent of the mine since 17.08.2004 till the date of accident. Sri Umesh Sharma was the Project Officer and Agent of the mine since 01.06.2003 till the date of accident. During their tenure as Agent of the mine, extraction in Panel no.11 was carried on in contravention of the conditions of DGMS permission letter granted under Regulation 100(1) of the CMR, 1957. Therefore, they, are held responsible for the accident.

8.3 Sri N.K. Martand was the manager of the mine since January, 2004 till the date of accident. During his tenure, as manager of the mine, extraction in Panel no.11 was carried on in contravention of the aforesaid DGMS permission letter. As required by Regulation 41 of the CMR, 1957, the manager was required to ensure that the safety aspects of the mine were

in order. However, he failed to do so and therefore, is held responsible for the accident.

- 8.4 Sri A.L. Rajak was safety officer of the mine since September, 2004 till the date of accident. In accordance with Regulation 41A of the CMR, 1957, Sri Rajak was required to report to the manager as to whether the provisions of the Mines Act and regulations, rules made thereunder were being complied within the mine. He was also required to promote safe practices in the mine which he failed to do and hence, he is held responsible for the accident.
- 8.5 Sri I.D.P. Singh was the assistant manager and the general shift in-charge of the mine. He failed in his duties, as stipulated under Regulation 42 of the CMR, 1957, to ensure that all work under his charge were carried out in accordance to the provisions of the Act and of regulations, rules and orders made thereunder and hence, he is held responsible for the accident.
- 8.6 Role of DGMS:
- 8.6.1 Following two issues were raised by various parties during proceedings of the Court regarding involvement of DGMS related to the accident:
- a. Role of permission granted by DGMS, and
 - b. Role of inspections made by DGMS officers after grant of permission.

8.6.2 The Court examined related documents and concerned officials of DGMS in detail and arrived at following conclusion:

a. Role of permission granted by DGMS:

i) Authority to grant the permission:

The permission was granted by Sri R. Guha, Director of Mines Safety (Regional Inspector of mines) on recommendations from Sri S.K. Mondal, Dy. Director of Mines Safety (Inspector of mines) under Regulation 100(1) of the CMR, 1957 which reads as below:

"No extraction or reduction of pillars shall be commenced, conducted or carried out except with the permission in writing of the Regional Inspector and in accordance with such conditions as he may specify therein."

The power to grant permission in the instant case is vested with the Regional Inspector of Mines and therefore, Sri Guha was well within the ambit of statute in granting the permission.

ii) Provisions of safe guard against inundation:

Following condition was stipulated in the said permission letter granted by DGMS to guard against danger of inundation:

"It shall be ensured that all overlying goaves in Sayal, Balkudra, Kurse, Upper Nakari, Lower Nakari, Upper Semana, Lower Semana and Hathidari seams lying vertically above and within 60 metres of the panel are kept free from water during entire depillaring operations."

The Court is of the view that adequate safeguards against danger of inundation was incorporated in the permission letter and that the accident would not have occurred if the above mentioned condition

of the permission letter had been complied with by the mine management.

b. Role of inspections made by DGMS officers after grant of permission:

- i) Sri D.K. Mallick, Dy. Director of Mines Safety inspected the mine on 19.03.2005, 05.05.2005, 12.05.2005, 18.05.2005 and 07.06.2005 after grant of permission when depillaring operations in Panel no.11 were in progress. Sri Mallick did not point out contravention of condition of permission letter during his inspections. Sri Mallick deposed before the Court that the management had already communicated to DGMS in writing that overlying Hathidari seam had been dewatered through a borehole. He relied on the contention of the management and could not verify the same during inspections. He should have been more careful in discharging his duties.

CHAPTER: IX

RECOMMENDATIONS

- 9.0 Section 24 of the Mines Act, 1952 under which this Court of Inquiry has been constituted contemplates that the report may contain any observations which the Court may think fit to make. We would, therefore, like to take the opportunity to make a few recommendations on the basis of facts disclosed -
- 9.1 The present system of inspection of mines by the officers of DGMS depend heavily on subjective evaluation of status of safety. This, sometimes, may lead to errors in judgment. In order to avoid such situation, DGMS should device a comprehensive, scientific system of inspections so that subjective evaluation, as far as possible, is eliminated.

- 9.2 Most of the accidents take place essentially due to human failure in complying with the provisions of statute. Recurrence of such failures from time to time is disturbing. Therefore, it is felt that proper and regular training of officers and supervisory staff is urgently needed to inculcate awareness among them regarding statutory provisions vis-à-vis their duties.
- 9.3 Enforcement of the provisions of the Mines Act, 1952 and its sub-ordinate legislation is one of the primary functions of DGMS. Considering the volume and complexity of the issues involved, the strength of officers and staff in DGMS appears to be grossly inadequate. Immediate steps need to be initiated by the Government to strengthen this organisation so that DGMS can do justice to its mandate.
- 9.4 During the hearing sessions of this Court, the issue of shortage of statutory man power in mines came in to focus time and again. Supervision of work in mines has a direct bearing on safety of workers and hence it must be ensured that a clear policy of regular recruitment of statutory manpower be framed and implemented by the mine management.
- 9.5 Representatives of trade unions represented during proceedings of the Court that compensation paid to the families of the victims was too inadequate. Their demand appears to be genuine. The Government may consider to enhance the quantum of compensation to family members of victims of accidents.
- 9.6 In a company consisting of large number of mines, it becomes very difficult for one person to pay proper attention to safety aspects in all mines. Therefore, the Court is of the opinion that in such companies nomination of ownership may be shared by two or three directors. This will enable them to deal with safety matters in mines more effectively.

9.7 Role of Internal Safety Organisation (ISO);

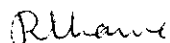
Arising out of the recommendations of the 5th Conference on Safety in Mines, most of mining companies have since formulated their safety policy and created ISO to translate the principle of self regulation in to practice. The Court feels that though ISO was existing, it had not been very effective. Their role could be more purposeful if-

- a). work in a new district is commenced only after clearance from ISO,
- b). the head of ISO should either be on the Board of the company or he should report to the Director not directly connected with production.

CHAPTER: X

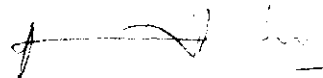
RECOVERY OF EXPENSES

- 10.0 Rule 22 of the Mines Rules, 1955 made in exercise of the power conferred by Section 58(c) of the Mines Act, 1952 enables the Court of Inquiry to direct the recovery of the expenses of the Court to be made from the Owner of the mine concerned, if the accident is caused due to negligence or carelessness on the part of the management. This report discloses that the accident has occurred due to negligence of the General Manager, Agent and other officials of the mine in non-observance of safety precautions. It follows, therefore, that the entire expenses of this Court of Inquiry have to be recovered from the management, namely, M/s Central Coalfields Ltd. We hereby direct that the above noted management do pay the entire expenses of this Court of Inquiry.



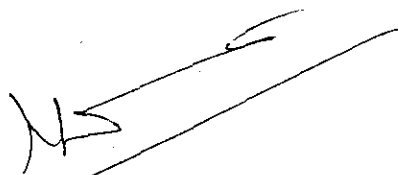
(Ravindra Sharma)

Assessor



(Rajendra Prasad Singh)

Assessor



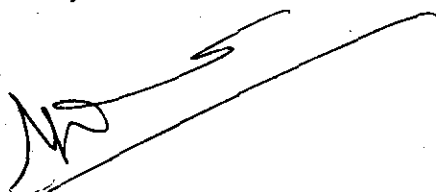
(Dr. P.D. Shenoy)

Chairman

ACKNOWLEDGEMENTS

I record my deep sense of gratitude to the eminent Assessors, Sri Ravindra Sharma and Sri Rajendra Prasad Singh for their valuable help and guidance. I thank the representatives of different trade unions, the management of M/s CCL, members of Coal Mines Officers Association of India, All India Mining Personnel Association and INMOSSA for their unstinted help without which this Inquiry could not have been completed so expeditiously. I also acknowledge spontaneous co-operation extended by the Director-General of Mines Safety and his officers and staff not only in producing the documents they collected but also by coming forward with every type of assistance whenever necessary. Finally, I am also grateful to the Chairman cum Managing Director, CMPDIL for making excellent arrangements for holding the sittings of the Court in their premises.

Finally, I would like to record my appreciation of the good work done by Sri G.Vijaya Kumar, Dy. Director of Mines Safety who functioned as Secretary to the Court.



(Dr. P.D. Shenoy)

Chairman

ANNEXURES - I**DETAILS OF VICTIMS**

S.No	Killed	Age	Occupation
1.	Sri Sikakri Majhi	51 years	Loader
2.	Sri Bhola	43 years	Loader
3.	Sri Bhimo Sethi	57 years	Loader
4.	Sri Lachman Munda	59. years	Loader
5.	Sri Balku Mahto	53 years	Loader
6.	Sri Rarn Brich Ram	47 years	Loader
7.	Sri Manager Ram	47 years	Loader
8.	Sri Jitram Manjhi	31 years	Loader
9.	Sri Dewa Saw	59 years	Loader
10.	Sri Kishun Mahato	27 years	Loader
11.	Sri Harihar Saw	59 years	Loader
12.	Sri Subhas Sethi	57 years	Loader
13.	Sri Shambhu Nath Bhuian	53 years	Overman
14.	Sri Budhan Mahto	59 years	Sirdar

ANNEXURE-II

MINISTRY OF LABOUR AND EMPLOYMENT

NOTIFICATION

New Delhi, the 17th October, 2005

S.O. 1494(E).—Whereas an accident has occurred in the Colliery of M/s. Central Coalfields Limited, more particularly in the Central Saunda Colliery in Hazaribagh District of Jharkhand State on 15th June, 2005 (III Shift of 14th June, 2005) causing loss of lives;

And whereas the Central Government is of the opinion that a formal inquiry into the causes and the circumstances attending the accident ought to be held.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (1) of Section 24 of the Mines Act, 1952 (35 of 1952), the Central Government hereby appoints Dr. P.D. Shenoy, former Secretary, Ministry of Labour and Employment to hold such inquiry and present a report within a period of three months. The Central Government also appoints the following persons as assessors in holding of the inquiry, namely :—

- (i) Shri R. Sharma, Ex-Director General of Mines Safety, Dhanbad.
- (ii) Shri Rajendra Prasad Singh, President, Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh.

[F. No. N-11012/1/2005-ISH-II]

K. CHANDRAMOULI, Jt. Secy.

ANNEXURE-III

No.N-11012/1/2005-ISH-II
Government of India/भारत सरकार
Ministry of Labour & Employment/श्रम एवं रोजगार मंत्रालय

.....

New Delhi dated the 21 December, 2005

To

The Director General
Directorate General of Mines Safety,
(Attention Shri Bhasker Bhattacharjee, DG)
Dhanbad.

Subject:- Appointment of Shri G. Vijaya Kumar, Deputy Director of Mines Safety (HQ) Dhanbad as Secretary to the Court of Inquiry for enquiry into causes and circumstance attending the accident at Central Saunda Colliery on 15.6.2005.

Sir,

I am directed to say that the competent authority has approved the appointment of Shri G. Vijaya Kumar Deputy Director of Mines Safety (HQ) Dhanbad as Secretary to the Court of Inquiry constituted vide this Ministry's Notification No. S.O. 1494 (E) dated 17.10.2005 under the Chairmanship of Dr. P.D. Shenoy for the enquiry into causes and circumstance attending the accident at Central Saunda Colliery on 15.6.2005.

2. This appointment will be effective from the date of issue of this order till the term of Dr. P.D. Shenoy Court of Inquiry.

3. Shri G. Vijaya Kumar will perform the duties as Secretary to the Court of Inquiry in addition to his normal duties as Deputy Director of Mines Safety (HQ), Dhanbad.

Yours faithfully,



(C.A. Bhaskaran)

Director to the Govt. of India

Copy to:-

- (i) Shri G. Vijaya Kumar, Deputy Director of Mines Safety (HQ) Dhanbad
- (ii) Dr. P.D. Shenoy, Chairman, Court of Inquiry w.r.t. his D.O. No.1(12)/2005-Genl. CS-1 dated 24.11.2005.


(C.A. Bhaskaran)

ANNEXURE-IV

To be published in the Gazette of India Extraordinary Part-II Section 3(ii)
Government of India
Ministry of Labour & Employment

New Delhi, dated the January, 2006

NOTIFICATION

S.O. 57(E).—Whereas the Government of India in the Ministry of Labour & Employment in their notification No S.O. 1494(E) dated 17th October, 2005 appointed Dr. P.D Shenoy, former Secretary, Ministry of Labour and Employment to hold a formal inquiry into the causes and circumstances attending the accident and to fix responsibility for the causes leading to the accident that occurred on 15th June, 2005 in the collieries of M/s Central Coalfield Limited, more particularly in the Central Saunda Colliery in Hazaribagh District of Jharkhand State, causing loss of lives and present a report within a period of three months. The duration of the enquiry was up to 16.01.2006

And whereas it has become necessary to extend the period within which the inquiry is to be conducted and report presented.

Now, therefore, the Central Government do hereby extend this duration for a further period of three months from 17th January, 2006 to 16th April, 2006 or till the day/date on which the report of the Inquiry is submitted, whichever is earlier. Accordingly the period of appointment of Chairman, Dr. P.D. Shenoy to conduct the inquiry and present the report and the period of appointment of Shri R. Sharma, Ex-Director General of Mines Safety and Shri Rajender Prasad Singh, President, Rashtriya Colliery, Mazdoor Sangh, as assessors is also extended for a further period of three months i.e. upto 16th April, 2006 or till the day/date on which the report of the Court of Inquiry is submitted, whichever is earlier.

(File No.N-11012/1/2005-ISH-II)


(K. Chandramouli)

Joint Secretary to the Govt. of India.

To

The Manager,
Govt. of India Press,
Mayapuri, Ring Road, New Delhi.

ANNEXURE-V

To be published in the Gazette of India Extraordinary Part-II Section 3(ii)
Government of India
Ministry of Labour & Employment

New Delhi, dated the

3rd April, 2006

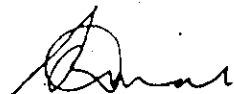
NOTIFICATION

S.O. 483(E).—Whereas the Government of India in the Ministry of Labour & Employment in their notification No S.O. 1494(E) dated 17th October, 2005 appointed Dr. P.D Shenoy, former Secretary, Ministry of Labour and Employment to hold a formal inquiry into the causes and circumstances attending the accident and to fix responsibility for the causes leading to the accident that occurred on 15th June, 2005 in the collieries of M/s Central Coalfield Limited, more particularly in the Central Saunda Colliery in Hazaribagh District of Jharkhand State, causing loss of lives and present a report within a period of three months. The duration of the enquiry was up to 16.01.2006, which was extended upto 16.04.2006.

And whereas it has become necessary to extend the period within which the inquiry is to be conducted and report presented.

Now, therefore, the Central Government do hereby extend this duration for a further period of three months from 17th April, 2006 to 16th July, 2006 or till the day/date on which the report of the Inquiry is submitted, whichever is earlier. Accordingly the period of appointment of Chairman, Dr. P.D. Shenoy to conduct the inquiry and present the report and the period of appointment of Shri R. Sharma, Ex-Director General of Mines Safety and Shri Rajendra Prasad Singh, President, Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, as assessors is also extended for a further period of three months i.e. upto 16th July, 2006 or till the day/date on which the report of the Court of Inquiry is submitted, whichever is earlier.

(File No.N-11012/1/2005-ISH-II)



(K. Chandramouli)

Joint Secretary to the Govt. of India.

To

The Manager,
Govt. of India Press,
Mayapuri, Ring Road, New Delhi.

31/3

ANNEXURE-VI

LIST OF DEPONENTS

Sl. No.	Name and Address	Affidavit Diary No. & Date	Deposed on	Remarks
1.	Sri M.M.Singh, DT(Op), CCL	16 dated 30.12.05	28 th January, 2006 & 12 th March, 2006 (on the Report of the Committee of Prof. AK.Ghose, Dr. RK. Gupta & Dr. SK.Singh)	
2.	Sri B. Bhattacharjee, DG, DGMS		28 th January, 2006	Submitted directly to the Court
3.	Sri K. Nageswara Rao, Director, RR, DGMS		28 th January, 2006	-do-
4.	Sri J.N.Singh, Rep. of CMOAI		29 th January, 2006	-do-
5.	Sri Ramesh Kumar Bubna of IMMA	1 dated 22.12.05	29 th January, 2006	
6.	Sri Ashok Kumar Sharma, AIMP	11,12 dated 30.11.05	29 th January, 2006	
7.	Sri Ramendra Kumar, AITUC	4 dated 29.12.05	29 th January, 2006	
8.	Sri Kumar Mahesh Singh, INTUC	18 dated 31.12.05	29 th January, 2006	
9.	Sri Kamallesh Sahay, BMS	2 dated 27.12.05	29 th January, 2006	
10.	Sri Basant Kumar Singh, BMS	3 dated 27.12.05	29 th January, 2006	
11.	Sri Mithilesh Kumar Singh, CITU	17 dated 31.12.05	29 th January, 2006	
12.	Sri Mihir Choudhury, CITU	21 dated 28.01.06	29 th January, 2006	
13.	Sri Shambu Narain Jha, INTUC	20 dated 28.12.05	29 th January, 2006	
14.	Sri PK Kanchan, Director, CMPDIL		18 th February 2006	No Affidavit
15.	Sri B.B.Dubey, the Then Agent	31 dated 18.02.06	18 th February 2006	
16.	Dr. Ashok Kumar Sinha, Sadar Hospital, Hazaribagh		18 th February 2006	No Affidavit
17.	Dr. Chandra Prakash Choudhary, Sadar Hospital, Hazaribagh		18 th February 2006	No Affidavit
18.	Dr. Binod Narain, Sadar Hospital, Hazaribagh		18 th February 2006	No Affidavit
19.	Dr. Shiv Prasad Sinha, Sadar		18 th February 2006	No Affidavit

ANNEXURE-VI

Sl. No.	Name and Address	Affidavit Diary No. & Date	Deposed on	Remarks
	Hospital, Hazaribagh			
20.	Dr. Rajesh Kumar Gupta, Sadar Hospital, Hazaribagh		18 th February 2006	No Affidavit
21.	Dr. Binay Kumar, Sadar Hospital, Hazaribagh		18 th February 2006	No Affidavit
22.	Sri Dhananjay Kumar Singh, Surveyor who signed the permission plan	30 dated 18.02.06	18 th February 2006	
23.	Sri Rahul Guha, DDG(CZ) and the then Director, Ranchi Region	22 dated 07.02.06	19 th February 2006	
24.	Sri S.K.Mondal, DD(EZ), the then DD, Ranchi Region	24 dated 10.02.06	19 th February 2006	
25.	Sri D.K.Mallik, DD, Ranchi Region	23 dated 10.02.06	19 th February 2006	
26.	Dr. Ram Saran Rai, R/o. Anusandhan Villa, Jharudih, At & PO. – Dhanbad, Jharkhand.	10 dated 30.12.05	19 th February 2006	
27.	Sri Umesh Sharma, Ex. Agent, Central Saunda Colliery	13 dated 30.12.05	19 th February 2006	
28.	Sri Narendra Kumar Martand, Ex. Manager, Central Saunda Colliery	8 dated 30.12.05	19 th February 2006	
29.	Sri Ajab Lal Rajak, Ex.Safety Officer, Central Saunda Colliery	5 dated 30.12.05	19 th February 2006	
30.	Sri.MK. Thapar, CMD,SECL	42 dated 11.03.06	11 th March, 2006	
31.	Sri.VK. Singh, CMD,NCL	43 dated 11.03.06	11 th March, 2006	
32.	Sri.Ajay Kumar,DP	41 dated 11.03.06	11 th March, 2006	
33.	Dr. AK. Sarkar, DF	40 dated 11.03.06	11 th March, 2006	
34.	Dr. AK. Sinha, Sadar Hospital, Hazaribagh		11 th March, 2006	No Affidavit
35.	Sri.Md. Taslim, GM	37 dated 11.03.06	11 th March, 2006	
36.	Sri Gopal Prasad, Dy.CME, CMPDIL	34 dated 11.03.06	11 th March, 2006	

ANNEXURE-VI

Sl. No.	Name and Address	Affidavit Diary No. & Date	Deposed on	Remarks
37.	Sri Krishna Murari, Ex. Manager	44 dated 11.03.06	11 th March, 2006	
38.	Sri S. Chaudhuri, CMD, CMPDIL & Head, Departmental Inq. Comm.	35 dated 11.03.06	12 th March, 2006	
39.	Prof.AK.Ghose		12 th March, 2006	On Sri MM Singh's Affidavit no. 45 dated 12.03.06
40.	Dr. SK.Singh		12 th March, 2006	-do-
41.	Sri P.N.Mishra, General Secretary, INMOSSA,	9 dated 30.12.05	12 th March, 2006	
42.	Sri Ramendra Pd. Singh, Representing All India Coal Workers Federation (CITU)	32 dated 23.02.06	12 th March, 2006	
43.	Sri Indradeo Prasad Singh, Ex.Assistant Manager, Central Saunda Colliery	14 dated 30.12.05	12 th March, 2006	
44.	Dr. Dinanath Pandey, Civil Surgeon & Chief Medical Officer, Hazaribagh		25 th March, 2006 & 26 th March, 2006	No Affidavit
45.	Sri R.P.Ritolia, CMD, CCL	15 dated 30.12.05	25 th March, 2006	
46.	Sri B.R. Tripathi, Chief General Manager, MCL and the then Chief General Manager Barka Sayal Area, CCL	46 dated 12.03.06	25 th March, 2006	
47.	Sri Sanjay Kumar, Asstt. Manager, Central Saunda Colliery on Charge report	47 dated 25.03.06	25 th March, 2006	
48.	Sri Aditiya Sahu, General Secretary, BMS	7 dated 30.12.05	25 th March, 2006	

ANNEXURE-VII**Summary of Cross-Examinations****Sri Bhaskar Bhattacharjee, Director-General of Mines Safety, Dhanbad.**

Sri Bhaskar Bhattacharjee deposed that-

- a. inquiry under Section 23(2) of the Mines Act, 1952 was conducted and submitted by Sri K. Nageswara Rao, Director of Mines Safety, Ranchi Region and he stood by his statement,
- b. the Director of Mines Safety is empowered to grant permission under Regulation 100(1) of the CMR, 1957.

Sri K. Nageswara Rao, Director of Mines Safety, Ranchi Region, Ranchi

Sri Rao deposed that-

- a. the Director of Mines Safety is vested with the powers to grant permission under Regulation 100(1) of the CMR, 1957,
- b. majority of permissions are granted based on the information supplied by the management,
- c. permission in the instant case was approved by Sri R. Guha, his predecessor and signed by Sri S.K. Mondal, DDMS.

Sri B.B. Dubey, the then Agent

Sri Dubey deposed that-

- a. he, as Agent of the mine had applied for permission, but it was received after his retirement,
- b. he had committed in the application to dewater the overlying seams before commencement of depillaring operations,
- c. there was no history of air blast in the mine and overlying strata above Bansgarha seam had only 15% sand stone in it.

Dr. A.K. Sinha, Sadar Hospital, Hazaribagh

Dr. Sinha deposed that-

- a. The cause of death was haemorrhage and shock caused by injury due to blunt and heavy object. The post-mortem examination was conducted after 3 to 7 days. The death was not due to asphyxia caused by drowning as the viscera were not congested and lungs were intact and pale and there was no ballooning of the lungs.
- b. he was not aware of the phenomenon called dry drowning and that 20-40% cases of drowning are dry drowning.
- c. he read the part of book "Modi's Medical Jurisprudence and Toxicology" (23rd edition) which stated on Page-601 that "in a few cases death may occur from obstructive asphyxia also known as dry drowning caused by the laryngeal spasm set up by small amount of water entering the larynx. In such a case, water does

not enter the lungs and the classical signs of drowning will be absent. According to Miles, about 20 to 40% of all drowning belong to this category. It should be noted that spasmodic closure of vocal cord is not detectable in post-mortem examination.

- d. When asked if he had read the book "Modi's Medical Jurisprudence and Toxicology" he said that he had read it but not very thoroughly. When again asked if he had read during the last 20 years after his graduation, he again avoided stating that he was doing post-mortem examination every day.
- e. Deposed that he was an ophthalmologist.
- f. he kept quiet when asked to state the different types of drowning, *i.e.* 1). Wet drowning – may be in fresh or salt water, 2). Dry drowning, 3). Secondary drowning, and 4). Immersion syndrome or hydrocution (cold water drowning).
- g. When asked if he knew the phenomenon that in unconscious state very little water enters the respiratory tract, "If an individual is rendered unconscious by shock or syncope at the time of immersion, he goes to the bottom, and may rise once to a certain height but usually sinks without a struggle. In such a case very little water enters the respiratory tract" and which is difficult to detect in post-mortem examination; he avoided reply to the question stating that there was no water in the stomach.
- h. He accepted not having read the book 'Parik's Text book of Medical Jurisprudence, Forensic Medicine and Toxicology', where it was written about dry drowning and immersion syndrome, submersion of the unconscious and near drowning or secondary drowning syndrome followed by mechanism of drowning.
- i. When inquired that he was doing the post-mortem in a mechanical manner without application of the mind and without application of the current knowledge of medical jurisprudence and toxicology, he replied that he had applied his mind but his knowledge in the subject may not be upto date.
- j. bodies were putrefied and stinking and there was no methodology by which the stink could be neutralised. So, it was difficult for any body to go near such stinking dead body to dissect the same. He was wearing mask and cap. Under his direction a Class IV employee who did not have any degree or diploma in medical science or in post-mortem examination except the experience, dissected the dead bodies.
- k. When asked to tell the names of the four authorised techniques of post-mortem examination propounded by four different experts, he accepted to not having knowledge of the same,
- l. he agreed partially to the fact that without knowing even name of a single technique of autopsy conducting autopsy regularly was dangerous,
- m. he avoided to reply and stated that to the best of his knowledge it was correct, when asked if such post-mortem report is not worth the paper on which it was written,
- n. he did not agree to have written the cause of death under influence.
- o. the post-mortem was conducted between 7.00 pm to 8.00 pm on the verbal order of Dy. Commissioner of Hazaribagh.

All the six doctors were present in the Court hall and when it was asked if any of them knew the four techniques of post-mortem should come forward, none came forward. When asked if any of them had not taken similar help of Class IV employee to come forward, none came forward.

Dr. C.P. Choudhary, Sadar Hospital, Hazaribagh

Dr. Choudhary deposed that-

- a. he is a paediatrician, and conducted post-mortem after 3 to 7 days of the death,
- b. the injuries were anti-mortem,
- c. the death was due to haemorrhage and shock.
- d. he was aware that if death was due to shock, even in water a person does not swallow any water and agreed that even the injury mentioned is so grievous it must have caused instantaneous death, as the heart was ruptured. He was aware that there is some thing called dry drowning,
- e. there was a possibility of the death caused by dry drowning due to shock caused by inrush of tsunami like water in the mine,

Dr. Binod Narayan, Sadar Hospital, Hazaribagh

Dr. Narayan deposed that-

- a. he had an experience of 22 years and was an Ophthalmologist.
- b. he agreed that an unconscious person, if hit by a huge blast of water does not swallow water. He also agreed that water can carry with it the human body.
- c. When asked about his knowledge on different methods of drowning, he could say only two types of drowning and said that in dry drowning epiglottis gets locked and when this happens trachea gets congested but in this case trachea was not congested.
- d. for all the four cases he conducted autopsy, putrefaction had started and he used the same words and language in all four cases and the cause of the death was same.
- e. he did not send any viscera for examination.

Dr. S.P. Sinha, Sadar Hospital, Hazaribagh

Dr. Sinha deposed that-

- a. he did diploma in Pathology and conducted autopsy on two bodies and the cause of death was due to shock,
- b. he reads 1992 edition of Modi's toxicology book when conducting post-mortem examination,
- c. decomposition of the bodies had started. He agreed that in dry drowning the human body does not suck water and store it in the cavity of the chest either in trachea or in lungs. Lungs and stomach are not filled up with water in dry drowning.
- d. he did not reply when asked to explain the consequences of vagal inhibition due to sudden on rush of water. He read the paragraph on vagal inhibition on page 602 of Modi's Jurisprudence and Toxicology; 23rd edition, which reads as "Vagal inhibition causes sudden cardiac arrest from fright or terror, or it may be caused during a sudden and unexpected fall in the water, often the water striking the chest and the pit of the stomach. The sudden impingement of unduly cold water on the nasopharynx, can result in vagal inhibition. The ability to swim in ice-cold

water (4.7° C) is much less than in warm water due to increased respiratory reflexes causing breathlessness in the thin man, and hypothermia in the fat person. This may explain sudden in cold water. On 6th March 1968, nine service men died in icy water of the Potomac river."

- e. he agreed that he cannot say with certainty that death was caused only due to injury. There were other possibilities of death like dry drowning or vagal inhibition also.

Dr. R.K. Gupta, Sadar Hospital, Hazaribagh

Dr. Gupta deposed that he -

- a. had 15-16 years of experience. He did MD in Pediatrics and he conducted autopsy on two bodies and the cause of death was due to shock. He did not have any diploma or degree in toxicology,
- b. agreed that the body was highly decomposed when he was asked to do autopsy.
- c. agreed that it was a bit difficult to arrive at causes of death,
- d. agreed to have not read thoroughly a book on medical jurisprudence & toxicology to enable to conduct post-mortem examination in a scientific manner.
- e. agreed that tremendous force of water blast may cause injuries to the body similar to those caused by blunt object.

Dr. Binay Kumar, Sadar Hospital, Hazaribagh

Dr. Kumar deposed that-

- a. he was a child specialist and he conducted autopsy on two bodies after 7 to 10 days of death which was caused by shock and haemorrhage. He did not know about different types of drowning.

Sri Rahul Guha, Dy. Director-General of Mines Safety (Central Zone), Dhanbad and the then Director of Mines Safety, Ranchi Region.

Sri Guha deposed that-

- a. he had authority as Regional Inspector of Mines to grant permission under Regulation 100(1) of the CMR, 1957,
- b. he had incorporated necessary conditions in the permission letter to guard against danger of inundation,
- c. permission was granted for a specific number of pillars within a panel boundary.

Sri S.K. Mondal, Dy. Director of Mines Safety, Eastern Zone, Sitarampur, the then Dy. Director of Mines Safety, Ranchi Region

Sri Mondal deposed that-

- a. he did not inspect the mine before recommending for grant of permission,
- b. it was a regular practice to grant permissions based on the information furnished by the management.

Sri Umesh Sharma, Project Officer/Agent of Central Saunda Colliery (under suspension)

Sri Sharma deposed that he gave more importance to safety than production and productivity.

Sri Ajay Kumar, Director Personnel, CCL

Sri Ajay Kumar deposed that he does not know anything about the permission of Panel no.11 and he did not agree that safety was one of the most important functions of the Director Personnel. As Director Personnel, he was responsible for maintaining safety in the mining areas because of law and order problems as security measures were under him but not for the safety in the underground mines.

Sri Md. Taslim, General Manager, CCL (under suspension)

Sri Taslim deposed that-

- a. he visited the mine a number of times during his tenure as General Manager and he participated in rescue operations after the accidents,
- b. no property was damaged underground above 21st Level up to which water had reached after the inrush,
- c. permission letter was not seen by him,
- d. he did not remember if the surveyor had signed the mine plan, and
- e. he did not confirm that bore hole through which water was coming, was connected to Hathidari seam but just believed others and the underground boring machine which was brought to the mine was shifted to other mine.

Sri Gopal Prasad, Dy. Chief Mining Engineer, CMPDIL

Sri Prasad deposed that if the Business plan prepared by CMPDIL along with statutory provisions were followed, the accident would not have occurred.

Sri Krishna Murari, Manger at the time of making application for the permission.

Sri Murari deposed that Panel no.11 was as a substitute panel and since rate of pumping was slow, he applied for grant of permission before completion of dewatering.

Sri S. Choudhary, Chairman-cum-Managing Director, CMPDIL

Sri Choudhary deposed that-

- a. there were three parts of the terms of reference in the Departmental Inquiry Committee appointed by the Ministry of Coal, Govt. of India, i). cause of accident, ii). negligence on the part of any officer of CCL and iii) any delay in rescue operation,

- b. he was a Graduate in Mining Engineering, with first class manager's Certificate (Coal), M.Tech. in opencast mining and was associated with the coal industry for three and half decades including seven years of practical experience in mines,
- c. Sri L. Jha was a graduate in Mining Engineering, and had practical experience of more than 30 years,
- d. Sri Salimuddin was a personnel man having about 30 years experience with mining industry,
- e. Sri N. Prasad, was a mining engineer and had experience both in CMPDIL and in coal mines,
- f. The committee visited the mine more than seven times and recorded 29 statements including those of CMD, CCL; Directors, CCL,
- g. 18 documents are listed and has it in Volume -II (copies of 7 or 8 plans) when Volume-I consisted of more than 100 pages,
- h. the evidence indicated that coal mining operations were done beyond the permitted area of the DGMS,
- i. the mine management assumed that the decreasing flow of water from the bore hole meant that there was no water in the overlying Hathidhari seam,
- j. the cause of the accident arrived at was unanimous,
- k. the statements including the CMD and Directors Technical indicated that the roof had collapsed, and then the water had come and this was the general concept, which was stated on 26.06.2005
- l. post-mortem report was received by them on 28.06.2005 and
- m. 4000 sq.m was the total area of standing goaf at the time of accident.

Sri M.M. Singh, Director Technical , CCL

Sri Singh deposed that-

- a. he did not obtain a written permission from the Court of Inquiry for appointing the Committee consisting of Prof. AK Ghose, Dr. RN Gupta and Dr. SK Singh,
- b. he did not take permission from either the Ministry of Coal, Govt. of India or CIL before appointing the Committee,
- c. he did not bring to the notice of the Court of Inquiry about appointment of inquiry committee by Ministry of Coal, Govt. of India,
- d. the committee consisting of Prof. Ghosh and others would be paid by CCL,
- e. the committee has heavily relied upon the investigation and study conducted by the General Manager, Geology of the Central Coalfields Ltd., Sri R.K.Choudhary,
- f. at the time of accident there was no water in Hathidhari seam and
- g. it was not his intention to give to the Court any wrong thing when asked that he was taking extra ordinary interest to prove that the 14 persons were killed by blunt object injury and rather than by drowning.

Prof. Ajay Kumar Ghose, Former Director, ISM

Prof. Ghose deposed that-

- h. he had not gone to the 21 level of the mine. His two colleagues had gone to the working area. They visited the mine five times and he had gone underground twice but not up to the site of accident,

- i. he had asked the General Manager (Geology) of CCL to conduct a study on petrology of sand samples in Central Saunda Mine and give a report as there were intriguing aspects of the incidents which needed clarification. His colleagues reported that they found extensive deposits of stained sand in and around the area below 24th level and they wanted to know the place from the sand had come,
- j. he had studied the post-mortem report,
- k. he had interrogated personally two persons, one was pump khalasi named Sri Nagendra and the time keeper named as Sri Satendra Singh, whom he thought were appropriate and relevant,
- l. Hathidari seam had been depillared by caving method in the past.
- m. He did not agree that water of overlying seams was trickling to Hathidari seam and added that there was natural seepage in Hathidari seam,
- n. sand would not have come through cracks formed by extraction of the seam,
- o. the intensity of air blast depended on the rate of the displacement of air,
- p. the rate of displacement of air through escape routes will depend upon the rate at which the material comes to displace the air,
- q. the roof should behave like a plate to cause an air blast,
- r. he had never said that Hathidari seam was dry and added that there was bound to be some strata water.

Dr. S.K. Singh, Head, Bord & Pillar Department, Central Mining Research Institute

Dr. Singh deposed that-

- a. he had taken note of the post mortem report in preparing the report,
- b. that it required further scientific investigation,
- c. there was no displacement of supports in the mine above 21st level and
- d. some remuneration would be paid to him for preparation of the report.

Sri Indradeo Prasad Singh, Assistant Manager, Central Saunda Colliery (under suspension)

Sri Singh deposed that-

- a. the roof fall occurred in back shift when only supervisors were present there. No executive was deployed in that shift. The supervisors are fully empowered to withdraw persons under regulations and he was out of station during the accident,
- b. he had seen the entries in the statutory report of supervisory staff book that there was likely danger and Reg. 127 of the CMR, 1957 was being violated during the exhibition of documents by the Court of Inquiry,
- c. nobody informed him about such entries,
- d. The senior officers like project officer/manager have certified that the mine was running safely as they did not point out any unsafe condition after their inspections.

-oOo-

DR. P.D.SHENoy
COURT OF INQUIRY

ANNEXURE-VIII

**Into the causes and circumstances attending the accident
that occurred at Central Saunda Colliery on 15th June,
2005.**

Inspection of the mine on 19.11.2005 by the Court

-o0o-

1. Government of India, Ministry of Labour and Employment appointed a Court of Inquiry under the Chairmanship of Dr. P.D. Shenoy, former Secretary, Ministry of Labour and Employment, vide Notification No. S.O.1494 (E) dated 17.10.2005 in the Gazette of India to hold a formal enquiry into the causes and circumstances attending the accident at Central Saunda Colliery of M/s Central Coalfields Ltd. that occurred on 15.06.2005.
2. Dr. P.D. Shenoy, Chairman, Court of Inquiry and Sri Rajendra Pd. Singh, Assessor to the Court of Inquiry inspected underground workings of Panel no.11, Bangarha seam of Central Saunda Colliery.
3. Following persons accompanied Dr. Shenoy:
 - 3.1 From Trade Union Side:
 - i. Sri Ramendra Kumar of AITUC,
 - ii. Sri Safique Khan of AITUC,
 - 3.2 From Officer's Association:
 - i. Sri J.N. Singh.
 - 3.3 From M/s Central Coalfields Ltd.:
 - i. Sri M.M. Singh, Director Technical,
 - ii. Sri J.R. Sharma, General Manager (Safety),
 - iii. Sri B.D. Yadav, General Manager, Barka Sayal Area,
 - iv. Sri Satyendra Singh, Agent, Central Saunda Colliery,
 - v. Sri B.B. Sinha, Manager, Central Saunda Colliery,
 - vi. Sri M.N. Jha, Rescue Superintendent, Ramgarh, Rescue Station,
 - 3.4 From DGMS:
 - i. Sri Bhaskar Bhattacharjee, DG,

- ii. Sri K.K. Passi, DDG(SEZ),
- iii. Sri Anup Biswas, Director (HQ),
- iv. Sri D.K. Mallick, Dy. Director.

3.5 From Press/Media:

- i. Reporters of Sahara TV,
- ii. Reporters of Dainik Jagaran News Paper, etc.

- 4. Route followed: Went down through Incline no.17 and went upto 26th level in 17 cross-cut district (Panel no.11). Water was found upto 26th level junction. One 500 gpm pump was running for de-watering. After inspection, returned to the surface through the same route.
- 5. During inspection, Dr. P.D. Shenoy, Chairman, Court of Inquiry interacted with the union representatives, workmen, officers and supervisors of the mine, higher management, persons from press, etc.

ANNEXURE-IX

**DR. P.D.SHENOY
COURT OF INQUIRY**

**Into the causes and circumstances attending the accident
that occurred at Central Saunda Colliery on 15th June,
2005.**

**Inspection of the mine on 16-12-2005 by Ravindra Sharma,
Assessor to the Court of Inquiry.**

-o0o-

1.0 **Introduction:** I called at Central Saunda Colliery on 16-12-2005 and inspected the Bansgarha Seam workings of the mine where the accident had occurred on 15th June, 2005 (III shift of 14th June, 2005). S/Shri M.M.Singh, Director Technical (OP), M/s. CCL, B.K.Sinha, Director Technical (P&P), M/s CCL, JR.Sharma GM (S&R), B.D.Yadav, GM, Barka Sayal Area, Satyender Singh, Agent, Central Saunda Colliery, B.S.Sinha, Manager, Central Saunda Colliery, Ramendra Kumar, General Secretary AITUC, KK.Passi DDG (SEZ), DGMS, K.Nageswara Rao, Director of Mines Safety and G.Vijay Kumar, Dy. Director of Mines Safety accompanied me during inspection.

2.0 **General Information about the mine:**

2.1 **Location:** Central Saunda Colliery is situated under the jurisdiction of Patratu Police station in Hazaribagh district, Jharkhand state. It is about 75km by road from Ranchi.

2.2.1 **Ownership:** The mine is owned by M/s Central Coalfields Limited, a subsidiary of Coal India Limited.

2.3.0 **Management :**

2.3.1 At the mine level the mine is managed by a Project Officer (Agent) and a Manager assisted by Safety Officer, Assistant Managers, supervisory officials and competent persons.

2.3.2 At Area level the mine is managed by General Manager assisted by Area Safety Officer and other senior officers.

2.3.3 At Corporate level the mine is managed by a Board of Directors consisting of the Chairman-cum-Managing Director and four functional directors including Director Technical (OP) who has been nominated as Owner of the Mine.

3.0 **Mine Workings:**

3.1 **Bansgarha Seam:** Bansgarha seam in which the accident occurred is about 4.9 m thick dipping at about 1 in 5 due S 74° W. The seam, on the day of accident, was being depillared at panel no.11 by caving method.

3.2 **Overlying & Underlying Seams:** Overlying seams have been worked in the past by caving/stowing/ or are standing on pillars and are presently not approachable. Underlying seams are on pillars/virgin.

3.2.1 Status of overlying & underlying seam workings is given below:-

Thickness	Seam/Parting	Remarks
20.0 m		
5.3 m	Kurse seam	Caved
17.0 m	Parting	
7.3 m	U.Nakari seam	Caved/on pillars (abandoned due to fire)
3.0 m	Parting	
2.0 m	Lower Nakari seam	On Pillars
21.0 m	Parting	
4.0 m	U.Semana seam	Partially stowed (abandoned due to fire)
1.7 m	Parting	
3.6 m	L/Semana Seam	Stowed
46.0 m	Parting	
3.6 m	Hathidhari seam	Caved/stowed/on pillars
26.0 m	Parting	
4.9 m	Bansgara seam	Was being depillared on 14-06-2005
56.0 m	Parting	
1.9 m	Bansgara A seam	Being developed
51.0 m	Parting	
6.7 m	U.Sirka seam	On pillars
15.5 m	Parting	
2.5 m	L.Sirka seam	On pillars/virgin

279291/06-21

4.0 **Inspection of Bansgarha Seam workings:**

4.1 **Route followed:** I travelled along No. 17 incline to 17 X cut, along 17 X cut to 28th Level and inspected workings of panel no.11. After Inspection I returned through the same route to the surface.

4.2 **Observations:**

4.2.1 Big boulders of sand stone were found at places as mentioned below.

- I. One boulder of about 3.2 m X 2.9 m X 1.6 m in size at the junction of 25th level and 17 X cut.
- II. One boulder of about 3.5 m X 2.0 m X 1.0 m in size at the 17 X cut below 27th level.
- III. One boulder of about 6.2m x 5.4m x 2.0m in size at the junction of 16 X Cut and 27th Level South.

4.2.2 Rail at the junction of 17 X cut and 27th level was found twisted/ damaged.

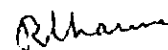
4.2.3 Six tubs at the junction of 17 X cut and 26th level were found completely damaged/ twisted.

4.2.4 Heap of sand, mixed with mud was found at many places in the area.

4.2.5 Workings on the dip side beyond 28 level in 17 X cut were found drowned.

4.2.6 Goaf edge boulders were observed at 27½ level off 16 X-cut.

4.3 Photographs of boulders, damaged tubs, rail, stones at the goaf edge taken during inspection, are enclosed.



(Ravindra Sharma)

Assessor to the Court of Inquiry

ANNEXURE-X

DETAILS OF COMPENSATION

S.No	Killed	Occupation	Workmen's Compensation & Ex-gratia in Rs.	Date of Payment	Employment given to
1.	Sri Ram Brich Ram	Loader	3,26,140 + 25,000	19.06.2005	Ram Janam Kumar (Son)
2.	Sri Bhola	Loader	3,51,080 + 25,000	19.06.2005	Shayam Narayan Rajbhar (Son)
3.	Sri Jitram Manjhi	Loader	4,11,000 + 25,000	20.06.2005	Smt. Altwari Devi (Wife)
4.	Sri Shambhu Nath Bhuian	Overman	2,85,380 + 25,000	20.06.2005	Smt. Bangobala Bhuian (Wife)
5.	Sri Kishun Mahato	Loader	4,27,140 + 30,000	20.06.2005	Smt. Tilwa Devi (Wife)
6.	Sri Sikakri Majhi	Loader	3,12,840 + 25,000	20.06.2005	Bhagwan Das Murmu (Son)
7.	Sri Dewa Saw	Loader	2,42,100 + 10,000	23.06.2005	Ravindra Saw (Son)
8.	Sri Subhas Sethi	Loader	2,56,660 + 25,000	24.06.2005	Sohan Sethi (Son)
9.	Sri Manager Ram	Loader	3,26,140 + 25,000	27.06.2005	Ram Pd. Ram (Son)
10.	Sri Bhimo Sethi	Loader	2,56,660 + 25,000	27.06.2005	Ramlal (Son)
11.	Sri Balku Mahto	Loader	2,85,360 + 25,000	28.06.2005	Jaleswar Yadav (Son)
12.	Sri Harihar Saw	Loader	2,42,100 + 25,000	28.06.2005	Narayan Saw (Son)
13.	Sri Lachman Munda	Loader	2,42,100 + 25,000	29.06.2005	Mahabir Kr. Munda (Son)
14.	Sri Budhan Mahto	Sirdar	2,42,100 + 25,000	29.06.2005	Jayendra Kr. (Son)

CHANDAN GORAN
HEAD DRAUGHTSMAN

TRACED BY

PART PLAN OF HATIDARI SEAM, TRACED FROM PLAN NO. 194, SHOWING
OUTLINE OF PANEL NO. 11 (BANSGARHA SEAM) AND OUTLINE OF
PROBABLE WATER CATCHMENT AREA, SCANNED AND REDUCED

NOT TO SCALE

(SOURAV ROY) (GORAKH SINGH)
SURVEYORS, D.G.M.S. DHANBAD

PREPARED BY



ANNEXURE-XII

To,
The Hon'ble Court of Inquiry,
Central Saunda Colliery.

Dear Sir,

As per your assessor's verbal instruction, we are furnishing herewith the calculation of approximate void and quantity of water in the area shown on enclosed plan in dotted green line, in respect of accident that occurred at Central Saunda Colliery, Bansgarha Incline, on 15.06.2005.

1. Development Area:-

1591 m (total length of galleries) x 4.5 m (average gallery Width) X 3 m (average gallery height)

=21,478.5 cu.m. = 21,478.5x220=4.725 million gallons----- (I)

2. Depillared area:-

SHAPE NO.	TYPE OF SHAPE	DIMENSION (in m.)	AREA(in Sq.m)
1	Rectangle	25 x 22	550.00
2	Triangle	½ x 80 x 40	1600.00
3	Triangle	½ x 25 x 15	187.50
4	Parallelogram	67 x (37+42+38+50)/4	2795.25
5	Triangle	½ x 47 x 16	376.00
6	Trapezoid	(80+70)/2 x 28	2100.00
7	Rectangle	135 x (38+37+41+42)/4	5332.50
8	Rectangle	25 x (29+30+31)/3	750.00
9	Rectangle	25 x 13	325.00
10	Rectangle	27 x 5	135.00

Total

14,151.25 Sq m.

Total volume = 14151.25×3.6 (average gallery height) $\times 60\%$ (Assumed void)
= 30,566.70 cu m.

Quantity of water (In gallons) = $30,566.70 \times 220 = 6724674$ gallons
= 6.725 million gallons----- (II)

Total volume of water in both developed and depillared area = (I) + (II)
= $4.725 + 6.725$
= **11.45 million gallons**

(When taken 60% void in depillared area)

Submitted for perusal and orders.

Yours faithfully,


16.05.2016
1. SOURAV ROY


16.05.2016
2. GORAKH SINGH

Surveyors (HQ)
DGMS, Dhanbad

ANNEXURE-XIII

Table containing cause of death mentioned in Post Mortem Report and details of injuries mentioned in Inquest Report

S.No	Killed	Designation	Name of Doctor who conducted PME	PME No.	PME Date	Injuries as mentioned in Inquest Report	Cause as per PME
1.	Sri Ram Brich Ram	Loader	Dr. AK Sinha	227067	19.06.05	Due to soaking of the body in water it got swollen and skin of the face peeled out.	Due to haemorrhage & shock caused by hard, blunt & heavy substance.
2.	Sri Bhola	Loader	Dr. CP Choudhary	227068	19.06.05	Due to soaking of the body in water it got swollen and skin of the face peeled out and appearance of injury on the head.	-do-
3.	Sri Jitram Manjhi	Loader	Dr. Binod Narayan	227083	20.06.05	Swollen body, limbs got loosened and damaged face.	Due to haemorrhage & shock caused by hard & heavy substance.
4.	Sri Shambhu Nath Bhulan	Overman	Dr. Binod Narayan	227082	20.06.05	-do-	-do-
5.	Sri Kishun Mahato	Loader	Dr. Binod Narayan	227081	20.06.05	-do-	-do-
6.	Sri Sikakri Majhi	Loader	Dr. Binod Narayan	227080	20.06.05	-do-	-do-
7.	Sri Dewa Saw	Loader	Dr. SP. Sinha	227079	23.06.05	Swollen body due to soaking in water and sludge.	Due to haemorrhage & shock caused by hard, blunt & heavy substance.
8.	Sri Subhas Sethi	Loader	Dr. SP. Sinha	227078	24.06.05	-do-	-do-
9.	Sri Manager Ram	Loader	Dr. RK. Gupta	227074	27.06.05	Due to soaking in water and sludge, skin at many places got loose.	Due to haemorrhage & shock caused by forceful hard & blunt objects at multiple sites.
10.	Sri Bhimo Sethi	Loader	Dr. RK. Gupta	227073	27.06.05	Due to soaking in water, skin got loosened.	-do-
11.	Sri Balku Mahto	Loader	Dr. Binay Kumar	227461	28.06.05	Due to fall of roof in UG mine and due to soaking in water and sludge, body got swollen and skin & muscles got loosened and separated.	Due to haemorrhage & shock caused by hard, blunt & heavy substance.
12.	Sri Harihar Saw	Loader	Dr. Binay Kumar	227460	28.06.05	-do-	-do-
13.	Sri Lachman Munda	Loader	Dr. CP Choudhary	227453	29.06.05	-do-	-do-
14.	Sri Budhan Mahto	Sirdar	Dr. AK Sinha	227457	29.06.05	-do-	-do-

ANNEXURE-XIV

MINISTRY OF LABOUR
(Directorate General of Mines Safety)

No. RR/10397/Perm 100(1)/03

From

The Director of Mines Safety,
Ranchi Region, DGMS,
'Manas', Opposite Ranchi Hill, Ratu Road, Ranchi-834 001.

To

The Agent,
Central Saunda Colliery,
M/s. C. C. Ltd.,
P.O. CCL Saunda, Dist. Hazaribagh (Jharkhand)

Sub : Permission to extract pillars by caving method and approval of S. S. R. in Bansgarha Seam, Panel No. 11 at Central Saunda Colliery.

Dear Sir,

Please refer to your letter No. CS/PO/Perm(Banag./03/568 dt. 13-3-2003 and plans/sections/Draft S. S. R. enclosed therewith.

2.0 The matter has since been examined on the basis of the information furnished and shown on the plans and sections submitted by you.

By virtue of the powers conferred on the Chief Inspector of Mines (also designated as Director General of Mines Safety) under Regulation 100(1) of the Coal Mines Regulations, 1957 and by virtue of the authorisation granted to me by the Chief Inspector of Mines (also designated as Director-General of Mines Safety) under Section 6(1) of the Mines Act, 1952, I hereby, permit you to extract pillars by caving method in Bansgarha Seam, Panel No. 11 as indicated on plan No. 246 dated 30-3-2003 submitted by you, subject to the conditions given below :

3.0 By virtue of the powers conferred on me, I,

- (a) under Regulation 108, hereby approve the draft Systematic Support Rules submitted by the manager with modifications. Two copies of the approved S.S.R. are enclosed for necessary action. The same shall be duly signed by the manager and one such copy returned to this Directorate for record; and
- (b) under the proviso to Regulation 118A (4), further, require you to comply with the provisions of Regulation 118A(1) (a), (c) and (d).

4.0 In this connection, your special attention is invited to :

- (a) Regulation 100(5) read with this Directorate's Technical Circular No. 2 of 1988 regarding precautions to be taken to minimise dangers arising from any chance of air blast due to any dangerous over hanging of the roof in goaf ;
- (b) Regulation 112(1)(c) read with this Directorate's Circular No. 11 of 1959 regarding fencing of the surface area likely to subside;
- (c) Regulation 118A(1)
 - clause (a) regarding formation of panels/sub-panels keeping in mind the incubation period of the seam which is nine months;
 - clause (c) read with this Directorate's Technical Circular No. 3 of 1988 regarding standard of construction, etc., of isolation/preparatory stoppings to be provided around the panels/sub-panels;
 - clause (d) regarding isolation of every panel/sub-panel immediately after it has been goaved out. Notwithstanding this, where the extraction of pillars is discontinued which would preclude the completion of the extraction in the panel/sub-panel within the incubation period of the seam, the goaved out part of the panel/sub-panel shall be sealed off;
- (d) Regulation 118A(3) (c) in respect of inspection of depillaring district and isolation stoppings around goaved out areas and maintenance of the records thereof. The inspection should also include the isolation stoppings built around the goaved out areas in the panel/sub-panel still under extraction. The records of the inspection of isolation stoppings shall be maintained stopping-wise;

- (e) This Directorate's Technical Circular No.4 of 1988 regarding maintenance of subsidence records, plan(s)/section(s); information regarding local/mainfalls etc. and submission of copies thereof to this Directorate.

5.0 Before commencement of extraction of pillars:

5.1 An accurate co-related offset plan on scale of RF 1 : 250 showing the all pillars in the panel and indicating the manner and the order of extraction, reduction and splitting of pillars shall be provided to all underground officials and staff in-charge of the district under reference. The same shall be brought up to date in each shift.

5.2 Adequate steps including provision of "garland drains" shall be taken to prevent accumulation or flow of water on surface above the panel.

5.3 It shall be ensured that all overlying goaves in Sayal, Balkudra, Kurse, Upper Nakari, Lower Nakari, Upper Semana, Lower Semana and Hathidari seams lying vertically above and within 60m of the panel are kept free from water during the entire depillaring operation.

5.4 The overlying surface area of panel 11 in Bangsarha seam shall be-filled up and dozed off by incombustible material regularly.

5.5 CO and methane monitoring shall be done regularly in the panel. If at any time CO or methane is detected in the district, the depillaring operation of the above panel shall be stopped forthwith and an intimation shall be sent to this Directorate. A record of such tests shall be maintained in a bound paged book kept in the office.

6.0 The proposed manner of extraction shall be as follows :—

6.1 Each pillar shall be divided into two equal parts by driving a central level split not more than 4.2m in width.

6.2 Each half of the pillar shall then be extracted by driving slices not exceeding 4.2m in width leaving a rib of coal not less than 2m thick against the adjacent goaf so however that the area of roof exposure at any working place at any time shall not exceed 80m². The rib of coal thus, left against the adjacent goaf may however be reduced judiciously on retreat, in consistence with safety.

6.3 Not more than one slice shall be driven in a pillar at a time and the extraction of half of a pillar shall not be commenced until extraction of the adjoining inbye half of the pillar has been completed.

6.4 Extraction of pillar shall commence from the dip/inbye end and proceed systematically to rise/outbye side maintaining a diagonal/line of faces and avoiding formation of 'V' in the line of extraction.

6.5 The heightening operation in the panel shall commence in the splits and original galleries immediately outbye of the slices avoiding formation of the ledges at the junctions. The full height of extraction shall be taken in one operation and not allowed to exceed 4.2m.

7.0 Load and convergence at the panel shall be monitored by installing load cell and convergence recorders/meters at strategic locations. The observations of the load cells and convergence recorders shall be taken regularly in each working shifts. Depillaring operation in the panel shall be stopped and the persons shall be withdrawn from the panel if the load on the prop is more than 5 tonnes and/or the roof convergence is more than 10mm. Normal working in the panel shall be started only after an inspection of the panel by the Manager of the mine.

8.0 Please note that this permission is subject to the following additional conditions:

8.1 In the event of any change in the circumstances connected with this permission which is likely to endanger the life of workmen employed in the mine or endanger the mine, the mining operations for which this permission has been granted shall be stopped forthwith and intimation thereof sent to this Directorate. The said mining operations shall not be resumed without an express and fresh permission in writing.

8.2 This permission is being issued specifically under the regulations mentioned above, and without prejudice to any other provision of law which may be or may become applicable at any time.

8.3 The above permission may be amended or withdrawn at any time, if considered necessary;

8.5 This permission shall remain valid up to 31-12-2005.

Yours faithfully,

Director of Mines Safety
Ranchi Region.

Memo NO.RR/10397/Perm 100(1)/03/2331— Ranchi, the dated 23/11-2003.

Copy forwarded for information and necessary action to :

1. The Director Technical (Operation)/Nominated Owner, M/S.C.C.L Dharbhanga House, Ranchi.
2. The General Manager/Deemed Agent, Barkakana Area, M/s C.C.L, PO: Barkakana, Distt.: Hazaribagh
3. The Manager, Central Saunda Colliery.M/s C.C.Ltd. PO: CCL Saunda, Distt.: Hazaribagh.

Director of Mines Safety
Ranchi Region.

Memo. No. RR/10397/Perm 100(1)/03/ 2334 Ranchi, the dated 28/11-2003.

Copy forwarded for his kind information to the Director-General of Mines Safety, Dhanbad. with a copy of comments of GDD, through Dy. D. G.(SEZ), Ranchi.


Director of Mines Safety